

काली तन्त्र शास्त्र

☐ प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन
कंचन मार्केट
अस्पताल रोड, आगरा-३

☐ लेखक/सम्पादक:
आचार्य पं. राजेश दीक्षित

☐ सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

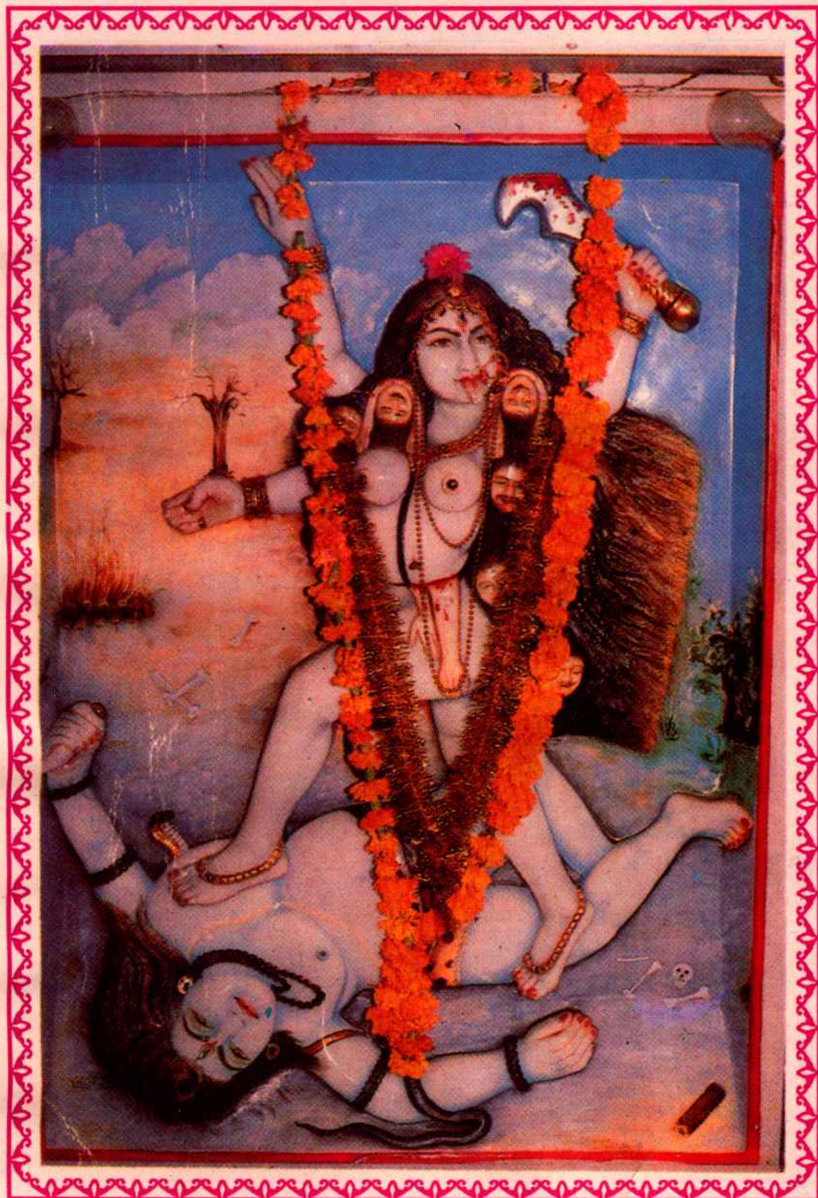
☐ संस्करण :
प्रथम, १९८७
द्वितीय, १९९०
तृतीय, १९९५

☐ मूल्य : स्वदेश में - 45/- रुपये
विदेश में - (5) डालर
(4) पौण्ड

☐ मुद्रक :सुमन कम्पोजिंग हाऊस, अमरपुरा, आगरा।
ब्रज प्रिंटिंग प्रेस, नयाबांस, आगरा-२

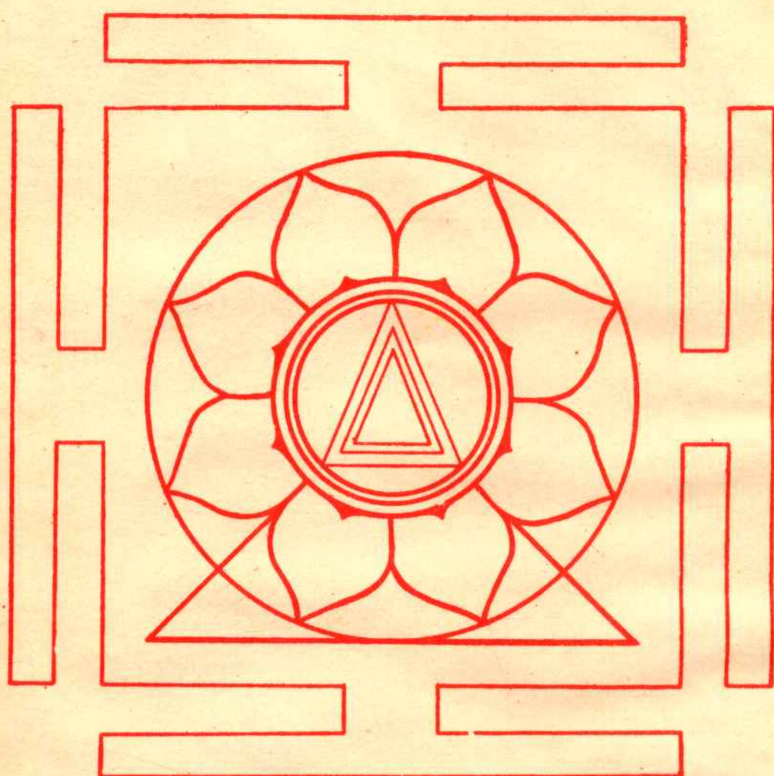
KALI TANTRA SHASTRA

By : Pt. Rajesh Dixit



श्री महाकाली

शवारूढ़ां महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्।
हास्ययुक्तां त्रिनेत्रां च कपालकर्त्रिकाकराम्।।
मुक्तकेशीं ललजिह्वां पिवन्तीं रुधिरं मुहुः।
चतुर्बाहुयुतां देवीं वराभयकरां स्मरेत्।।



काली यन्त्र

काली तन्त्र शास्त्र

- तन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है, जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति सुलभ है।
- श्रद्धा और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तन्त्र-साधक अतिशीघ्र निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।



भावों को प्रकट करने के साधनों का आदिस्रोत यन्त्र-तन्त्र ही है। यन्त्र-तन्त्र के विकास से ही अंक और अक्षरों की सृष्टि हुई है। अतः रेखा, अंक एवं अक्षरों का मिला-जुला रूप तन्त्रों में व्याप्त हो गया। साधकों ने इष्टदेव की अनुकम्पा से बीज-मन्त्र तथा मन्त्रों को प्राप्त किया और उनके जप से सिद्धियाँ पायीं तो यन्त्र-तन्त्र में उन्हें भी अंकित कर लिया।



❁ एक दृष्टि में ❁

- मानव-जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनेक साधनों में 'तन्त्र' सरल और सुगम साधन हैं।
- यह भ्रम सर्वथा निमूल है कि तन्त्र केवल भूल-भूलैया अथवा मन बहलाने का नाम है।
- तन्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।
- आधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र में स्थायित्व है, सत्य है और कल्याण है।
- तन्त्र-विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वांगीण ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है।
- लोक-कल्याण और आत्म-कल्याण की कामना से किये गये तान्त्रिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में लाभदायी होते हैं।
- नित्यकर्म, संक्षिप्त हवन विधि, शास्त्रीय विवेचन और काली तन्त्र के अभिनव-प्रयोग आपको कष्टों से बचाने में सहायक होंगे।
- इस पुस्तक में दिये गये तन्त्र-मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से संकलित किये गये हैं सिर्फ उन्हीं मन्त्र, तन्त्र को पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता निर्विवाद है।
- पुस्तक पाठकों की भलाई के लिए बनायी गयी है अस्तु "कुएँ के अन्दर जैसी आवाज देंगे वैसी ही प्रतिध्वनि होगी" की तरह साधना आपके सच्चे मन कर्म से होगी तभी उसमें इष्टतम् फल प्राप्त होगा अन्यथा जैसा करेगा वैसा भरेगा। इसमें लेखक, प्रकाशक का क्या दोष ?

साधन से पूर्व आवश्यक निर्देश

किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान में रखना आवश्यक है :—

(१) मन्त्र-तन्त्र का जप अंग-शुद्धि, सरलीकरण एवं विधि-विधान पूर्वक करना उचित है। आत्म-रक्षा के लिए सरलीकरण की आवश्यकता होती है।

(२) किसी भी तन्त्र अथवा मन्त्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना आवश्यक है, अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(३) मन्त्र-तन्त्र साधन के समय शरीर का स्वस्थ्य एवं पवित्र रहना आवश्यक है। चित्त शान्त हो तथा मन में किसी प्रकार की ग्लानि न रहे।

(४) शुद्ध, हवादार, पवित्र एवं एकान्त-स्थान में ही मन्त्र साधना करनी चाहिए। मन्त्र-तन्त्र साधना की समाप्ति तक एक स्थान परिवर्तन नहीं करना चाहिए।

(५) जिस मन्त्र-तन्त्र की जैसी साधना-विधि वर्णित है, उसी के अनुरूप सभी कर्म करने चाहिए अन्यथा परिवर्तन करने से विघ्न-बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं तथा सिद्धी में भी सन्देह हो सकता है।

(६) जिस मन्त्र की जप संख्या आदि जितनी लिखी है उतनी ही संख्या में जप-हवन आदि करना चाहिए। इसी प्रकार जिस दिशा की ओर मुंह करके बैठना लिखा हो तथा जिस रंग के पुष्पों का विधान हो, उन सबका यथावत् पालन करना चाहिए।

(७) एक बार में एक ही तन्त्र की साधना करना उचित है। इसी प्रकार एक समय केवल एक ही मनोभिलाषा की पूर्ति का उद्देश्य सम्मुख रहना चाहिए।

दो शब्द



● भगवती दुर्गा के बाद भगवती काली उपासना का ही हमारे देश में सर्वाधिक प्रचलन है। कलकत्ता में कालीघाट का मन्दिर जहाँ विश्व-प्रसिद्ध है, वहीं अन्य स्थानों पर भी भगवती काली के अनेक प्रसिद्ध मन्दिर पाये जाते हैं। काली-भक्तों तथा साधकों की संख्या भी अपरमित है।

● भगवती काली के अनेक भेद हैं, उनमें दशमहाविद्यान्तर्गत प्रथम महाविद्या भगवती आद्याकाली को साक्षात् ब्रह्मस्वरूपा, अनादि एवं अनन्ता माना गया है। वे ही परब्रह्म शिव की पराशक्ति हैं। दुर्गासप्तशती में जिन काली देवी की उत्पत्ति भगवती दुर्गा के मस्तक से बताई गई है, उन्हें भगवती आद्याकाली का अवतार कहा जा सकता है।

● भगवती आद्या काली के रूपभेदों में दक्षिणाकाली का स्वरूप सद्य फलप्रद माना गया है। भगवती दक्षिणा काली के अनेक मन्त्र हैं। यदि श्रद्धा भक्ति पूर्व भगवती के मन्त्रों का साधन किया जाय तो साधक को चतुर्वर्ग की प्राप्ति तो होती है, अन्त में भगवती का सामुज्य भी प्राप्त होता है।

● प्रस्तुत संकलन में भगवती दक्षिणाकाली के मन्त्रों की साधन-विधि का शास्त्रीय एवं विस्तृत उल्लेख किया गया है साथ ही उनके अन्य रूपों—गुह्यकाली भद्रकाली, श्मशान काली एवं महाकाली के विविध मन्त्र तथा उनकी साधन विधि का भी वर्णन किया गया है।

● अन्त में, भगवती आद्याकाली से सम्बन्धित, कीलक, अर्गल, कवच, स्त्रोत सहस्राक्षरी, बीजाक्षरी, सतनाम तथा सहस्रनाम स्त्रोत आदि देकर संकलन को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने की चेष्टा की गई है।

● हमें विश्वास है कि जो काली-भक्त संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण प्राचीन तन्त्र ग्रन्थों का अध्ययन कर पाने में असमर्थ हैं, उनके लिए यह संकलन अत्यन्त उपयोगी तथा मार्ग दर्शक सिद्ध होगा। इसमें काली-साधन से सम्बन्धित प्रामाणिक माने जाने वाले प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित सामग्री का ही सरल हिन्दी भाषा में क्रमानुसार उल्लेख किया गया है। अन्त में स्त्रोतादि के मूल संस्कृति पाठ भी दिए गये हैं, क्योंकि उनका उसी रूप में पाठ किया जाता है। स्तोत्रादि की हिन्दी-भाषा टीका देकर पुस्तक की पृष्ठ संख्या में वृद्धि करना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

● जिन पाठकों को इस पुस्तक में उल्लिखित किसी विषय को समझने में कठिनाई हो, वे नीचे लिखे पते पर हमें निसंकोच पत्र लिख सकते हैं। उत्तर के लिए साथ में पर्याप्त डाक-टिकट युक्त लिफाफा भेजना आवश्यक होगा उचित पारिश्रमिक प्राप्त होने पर हम उनकी यथाशक्ति सहायता करने को प्रस्तुत हैं। जो साधक कार्डबोर्ड पर मुद्रित अथवा विभिन्न धातुओं पर निर्मित काली-पूजन यन्त्रों को हमारे यहाँ से मँगाना चाहें वे भी पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

● शब्दाडम्बर से सर्वथा निर्लिप्त रहकर, केवल उपयोगी सामग्री को ही इस संकलन में प्रस्तुत किया गया है प्रमादवश यदि कहीं कोई भूल अथवा त्रुटि रह गई हो तो विद्वज्जन उस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा अवश्य करें, ताकि पुस्तक के अगले संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके। जिन साधकों के पास काली-साधन से सम्बन्धित कोई लोकहितकर सामग्री, यन्त्र, विधि, ग्रन्थ आदि हों, वे उसकी सूचना प्रकाशक को देने अथवा भेजने की कृपा कर सकें तो हम उनके अत्यन्त आभारी होंगे।

किमधिकम् ?

म २६, महाविद्या कालोनी
मथुरा (उत्तर-प्रदेश)
नववर्षारम्भ, सं. २०४५ वि०

विद्वज्जन चरण सेवक :

राजेश दीक्षित

विषय-सूची



१ | काली-तत्व निरूपण

भगवती काली

'काली' शब्द का अर्थ है—'काल' की पत्नी।' 'काल' शिवजी का नाम है, अतः शिव-पत्नी को ही 'काली' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इन्हें 'आद्या काली' भी कहते हैं।

मार्कण्डेय पुराण के 'दुर्गा सप्तशती खण्ड' में भगवती अम्बिका के ललाट से जिन 'काली' की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, भगवती आद्या काली उनसे भिन्न है। भगवती अम्बिका के ललाट से उत्पन्न काली दुर्गा की त्रिमूर्तियों में से एक हैं। उनके ध्यान का स्वरूप भी आद्या काली के ध्यान से भिन्न है।

तन्त्र शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गए हैं—(१) काली, (२) तारा, (३) षोडशी, (४) भुवनेश्वरी, (५) भैरवी, (६) छिन्नमस्ता, (७) धूमावती, (८) बगला, (९) मातंगी एवं (१०) कमलात्मिका। इन्हें सम्मिलित रूप में 'दशमहाविद्या' के नाम से भी जाना जाता है। इनमें भगवती काली मुख्य हैं।

भगवती काली के रूप-भेद असंख्य हैं। तत्त्वतः सभी देवियाँ, योगिनियाँ आदि भगवती की ही प्रतिरूपा हैं, तथापि इनके आठ भेद मुख्य माने जाते हैं—(१) चिन्तामणि काली, (२) स्पर्शमणि काली, (३) सन्ततिप्रदा काली, (४) सिद्धि-काली (५) दक्षिणा काली, (६) कामकला काली, (७) हंस काली एवं (८) गुह्य काली। 'काली-क्रम-दीक्षा' में भगवती काली के इन्हीं आठ भेदों के मन्त्र दिए जाते हैं। इनके अतिरिक्त (१) भद्रकाली, (२) श्मशानकाली तथा (३) महाकाली-ये तीन भेद भी विशेष प्रसिद्ध हैं तथा इनकी उपासना भी विशेष रूप से की जाती है।

दशमहाविद्याओं के मन्त्र जप ध्यान पूजन तथा प्रयोग की विधियाँ कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि प्रथक्-प्रथक् हैं। अतः इन सभी देवियों के सम्बन्ध में हमने प्रथक्-प्रथक् ग्रंथों का संकलन किया है।

भगवती कालिका के स्वरूपों में 'दक्षिणा काली' मुख्य हैं। इन्हें 'दक्षिण कालिका' तथा दक्षिणा कालिका आदि नामों से भी सम्बोधित किया जाता है।

काली उपासकों में सर्वाधिक लोकप्रिय भी भगवती 'दक्षिणा काली' ही हैं। अतः प्रस्तुत ग्रंथ में उन्हीं के विविध मन्त्रों की साधन-विधियों का विस्तृत उल्लेख किया गया है।

गुह्यकाली, भद्रकाली, श्मशान काली तथा महाकाली—ये चारों स्वरूप भी प्रकारान्तर से भगवती दक्षिणा कालिका के ही हैं तथा इनके मन्त्रों का जप, न्यास, पूजन, ध्यान आदि भी प्रायः भगवती दक्षिणा काली की भाँति ही किया जाता है, अतः इन चारों के मन्त्र तथा ध्यानादि के भेदों को भी इस सङ्कलन में समाविष्ट कर लिया गया है।



चित्र—२

भगवती काली को अनादिरूपा, आद्या विद्या, ब्रह्मस्वरूपिणी तथा कैवल्य दात्री माना गया है। अन्य महाविद्याएँ मोक्षदात्री कही गई हैं।

दशमहाविद्याओं में भगवती षोडशी (जिन्हें 'त्रिपुर सुन्दरी' भी कहा जाता है), भुवनेश्वरी तथा छिन्नमस्ता रजोगुण प्रधाना एवं सत्वगुणात्मिका हैं, अतः ये गौण रूप से मुक्तिदात्री हैं।

धूमावती, भैरवी, बगला, मातंगी तथा कमलात्मिका—ये सब देवियाँ तमोगुण प्रधाना हैं, अतः इनकी उपासना मुख्यतः षट्कर्मों में ही की जाती है।

शास्त्रो के अनुसार—'**पञ्चशून्ये स्थिता तारा सर्वान्ते कालिकास्थिता।**" अर्थात् पाँचों तत्त्वों तक सत्वगुणात्मिका भगवती तारा की स्थिति है तथा सबके अन्त में भगवती काली स्थित है अर्थात् भगवती काली आद्याशक्ति चित्तशक्ति के

रूप में विद्यमान् रहती हैं। अस्तु, वह अनित्य, अनादि, अनन्त एवं सब की स्वामिनी है। वेद में 'भद्रकाली' के रूप में इन्हीं की स्तुति की गई है।

जैसाकि बारम्बार कहा गया है, भगवती काली अजन्मा तथा निराकार है, तथापि भावुक भक्तजन अपनी भावनाओं तथा देवी के गुण कार्यों के अनुरूप उनके काल्पनिक साकार रूप की उपासना करते हैं। भगवती चूंकि अपने भक्तों पर स्नेह रखती हैं, उनका कल्याण करती हैं तथा उन्हें युक्ति-मुक्ति प्रदान करती हैं, अतः वे उनके हृदयाकाश में अभिलषित रूप में सरकार भी हो जाती है।

इस प्रकार निराकार होते हुए भी वे साकार हैं, अदृश्य होते हुए भी दृश्यमान हैं।

दक्षिणा काली

'भगवती का नाम' दक्षिणा काली' क्यों है अथवा 'दक्षिणा काली' शब्द का भावार्थ क्या है ?—इस सम्बन्ध में शास्त्रों ने विभिन्न मत प्रस्तुत किए हैं, जो संक्षेप में इस प्रकार हैं—

'निर्वाण तन्त्र' के अनुसार—

(१) दक्षिण दिशा में रहने वाला सूर्य-पुत्र 'यम' काली का नाम सुनते ही भयभीत होकर दूर भाग जाता है, अर्थात् वह काली-उपासकों को नरक में नहीं ले जा सकता, इसीकारण भगवती को 'दक्षिणा काली' कहते हैं।

अन्य मतानुसार—

(२) जिस प्रकार किसी धार्मिक कर्म की समाप्ति पर दक्षिणा फल की सिद्धि देने वाली होती है, उसी प्रकार भगवती काली भी सभी कर्म-फलों की सिद्धि प्रदान करती है, इस कारण उनका नाम दक्षिणा है।

(३) देवी वर देने में अत्यन्त चतुर हैं इसलिए उन्हें 'दक्षिणा' कहा जाता है।

(४) सर्वप्रथम दक्षिणामूर्ति भैरव ने इनकी आराधना की थी, अतः भगवती को 'दक्षिणा काली' कहते हैं।

(५) पुरुष को दक्षिण तथा शक्ति को 'वामा' कहते हैं। वही वामा दक्षिण पर विजय प्राप्त कर, महामोक्ष प्रदायिनी बनी, इसी कारण तीनों लोकों में उन्हें 'दक्षिणा' कहा गया है।

भगवती के स्वरूपादि का भावार्थ

भगवती काली के स्वरूप आदि से सम्बन्धित शब्दों का भावार्थ जाने विना

अर्थ का अनर्थ हो जाता है। अतः यहाँ कुछ प्रमुख शब्दों के भावार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

वर्ण—'महानिर्वाण' तन्त्र के अनुसार—"जिस प्रकार श्वेत, पीत आदि सभी रंग काले रंग में समाहित हो जाते हैं, उसी प्रकार सब जीवों का लय काली में ही होता है, अतः कालशक्ति, निगुर्णा, निराकार भगवती काली का वर्ण भी 'काल।' ही निरूपित किया गया है।

कुछ तन्त्रों में भगवती का वर्ण 'काला' तथा 'लाल'—दोनों ही बताये गए हैं, परन्तु साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि भगवती 'दक्षिणा काली' का रंग काला तथा भगवती त्रिपुर सुन्दरी अर्थात् तारा का रंग लाल है। यथा—

"कालिका द्विविधा प्रोक्ता-कृष्णा रक्त प्रभेदतः।
कृष्णातु दक्षिणा प्रोक्ता रक्तातु सुन्दरी मता॥
इयं नारायणी काली तारा स्यात् शून्यवाहिनी।
सुन्दरी रक्त काली तत् भैरवी नादिनी तथा॥"

अस्तु, भगवती के दक्षिण काली अथवा भद्रकाली, गुह्यकाली श्मशानकाली तथा महाकाली आदि रूपों के उपासक भक्तों को देवी के 'श्यामवर्ण' अथात् काले रंग के शरीर की ही भावना करनी चाहिए।

निवास—भगवती काली को 'श्मशान वासिनी' कहा गया है। श्मशान का लौकिक अर्थ है—'जहाँ मृत प्राणियों के शरीर जलाये जाते हो।' परन्तु देवी के निवास-स्थल के सम्बन्ध में 'श्मशान' शब्द का यह अर्थ लागू नहीं होता है।

पन्च महाभूतों का 'चिद्ब्रह्म' में लय होता है। भगवती आद्याकाली 'चिद्-ब्रह्म स्वरूपा' है। अस्तु, जिस स्थान पर पंचमहाभूत लय हों, वही श्मशान है और वहीं भगवती का निवास है—यह समझना चाहिए।

संसारिक विषयों काम-क्रोध रागादि के भस्म होने का मुख्य स्थान 'हृदय' है। चूँकि जिस स्थान पर कोई वस्तु भस्म हो, वह स्थान 'श्मशान' कहलाता है।, अतः काम क्रोध रागादि से रहित श्मशान रूपी हृदय में ही भगवती काली निवास करती है। अस्तु भक्तजनों को चाहिए के वे अपने हृदय में भगवती काली को स्थापित करने हेतु उसे 'श्मशान' बनालें अर्थात् सांसारिक राग-द्वेषादि से पूर्णतः रहित करलें।

चिता—श्मशान में चिता के प्रज्ज्वलित होने का तात्पर्य है—राग-द्वेषादि विकार-रहित हृदयरूपी श्मशान में 'ज्ञानाग्नि' का निरन्तर प्रज्ज्वलित बने रहना।

शिवा, कङ्काल, अस्थि, शवमुण्ड—श्मशान में शिवा (गीदड़ी, सियारिन),

कङ्काल, अस्थि (हड्डी) तथा शवमुण्ड की उपस्थिति का तात्पर्य है—शिवा, शव-मुण्ड आदि अपञ्चीकृत महाभूत हैं तथा अस्थि-कङ्काल आदि उज्ज्वल वर्ण सत्व-गुण के बोधक है अर्थात् हृदयरूपी श्मशान में अपञ्चीकृत महाभूत शिवा, शवमुण्ड आदि के रूप में तथा अस्थि-कङ्काल आदि सत्वगुण के रूप में उपस्थित रहते हैं।

आसन—'शिव' से जब शक्ति प्रथक् हो जाती है, तो वह 'शव' मात्र रह जाता है अर्थात् जिस प्रकार शिव का अंश स्वरूप जीव-शरीर प्राण रूपी शक्ति के हट जाने पर मृत्यु को प्राप्त होकर 'शव' हो जाता है, उसी प्रकार उपासक जब अपनी प्राणशक्ति को चित् शक्ति में समाहित कर देता है, तब उसका पञ्च-भौतिक शरीर 'शव' की भाँति निर्जीव हो जाता है। उस स्थिति में भगवती आद्या शक्ति उसके ऊपर अपना आसन बनाती है अर्थात् उस पर अपनी कृपा बरसाती हैं और उसे स्वयं में सन्निहित कर, भौतिक प्रपञ्चों से मुक्त कर देती हैं। यही भगवती का शवासन है और इसीलिए 'शव' को भगवती का 'आसन' कल्पित किया गया है।

शशि शेखरा—भगवती के ललाट पर चन्द्रमा की स्थिति बताकर उन्हें "शशि शेखरा' कहा गया है, इसका भावार्थ यह है कि वे चिदानन्दमयी है तथा अमृतत्व रूपी चन्द्रमा को धारण किए हैं अर्थात् उनकी शरण में पहुँचने वाले साधक को अमृतत्व की उपलब्धि होती है।

मुक्त केशी—'भगवती के बाल बिखरे हैं, इसका तात्पर्य है कि भगवती केश-विन्यासादि विकारों से रहित त्रिगुणातीता हैं।

त्रिनेत्रा—'भगवती के तीन नेत्र हैं यह कहने का आशय है कि सूर्य, चन्द्र तथा अग्नि ये तीनों ही भगवती के नेत्र रूप हैं। दूसरे शब्दों में भगवती तीनों लोकों को, तीनों कालों को देख पाने में सक्षम हैं।

महाघोरा—भगवती उच्चस्वर वाली है, इसका भावार्थ है भगवती का नाम सुनते ही पाप-समूह उसी प्रकार पलायन कर जाते हैं, जिस प्रकार सिंह की दहाड़ सुनकर वन के पशु दूर भाग जाते हैं।

बालावतंसा—भगवती अपने कानों में बालकों के शव पहने हैं। इस कथन का अशय यह है कि वे पूर्वोक्त शव तुल्य निर्विकार हृदय वाले बाल-स्वभाव जैसे भक्तों की ओर कान लगाये रखती हैं अर्थात् उनकी प्रत्येक प्रार्थना को ध्यान से सुनती हैं।

सृक्कद्वयगलद् रक्त धारा—'भगवती के दोनों होठो के कोनों से रक्त की धारा बह रही है"—यह कहने का आशय है कि भगवती शुद्ध सत्वात्मिका हैं और वे रजोगुण एवं तमोगुण को निःसृत कर रही हैं।

प्रकटितरदना—'भगवती के दाँत बाहर की ओर निकले हैं, जिनसे वे जीभ को दबाये हुए हैं' इस कथन का आशय यह है कि भगवती तमोगुण एवं रजोगुण रूपी जीभ को अपने सतोगुण रूपी उज्ज्वल दाँतों से दबाये हुए हैं।

स्मितमुखी– 'भगवती के मुख पर मुस्कान बनी रहती है'—इसका तात्पर्य है कि वे नित्यानन्द स्वरूपा है।

पीनोन्नत पयोधरा—"भगवती के स्तन बड़े तथा उन्नत हैं"—यह कहने का आशय है कि वे तीनों लोकों को आहार देकर उनका पालन करती है तथा स्वभक्तों को अमरत्व अथवा मोक्षरूपी दुग्ध पान कराती हैं।

कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिता—इस कथन का आशय है—मुण्ड-माला के पचास मुण्ड अर्थात् पचास 'मातृकावर्णों' को धारण करने के कारण भगवती शब्द ब्रह्म स्वरूपा है। उस शब्द गुण से रजोगुण का टपकना अर्थात् सृष्टि का उत्पन्न होना ही, रक्त स्राव है। भगवती उसी स्राव से आप्लावित है अर्थात् निरन्तर नवीन सृष्टि करती रहती है।

दिगम्बरा– 'भगवती दिगम्बरा है'—इसका आशय यह है कि वे मायारूपी आवरण से आच्छादित नहीं हैं अर्थात् उन्हें माया अपनी लपेट में नहीं ले पाती।

शवानांक संघातै-कृतकाञ्ची—'भगवती शवों के हाथ की करधनी पहने हैं'—इस कथन का तात्पर्य यह है कि कल्पान्त में सभी जीव स्थूल-शरीर त्यागकर सूक्ष्म शरीर के रूप में (कल्पारम्भ पर्यन्त, जब तक कि उनका मोक्ष नहीं हो जाता) भगवती के कारण शरीर के संलग्न रहते हैं।

शव की भुजाओं से आशय जीवों के कर्म की प्रधानता का है।

'वे भुजाएँ देवी के गुप्ताङ्ग को ढाँके हुए हैं'—इस कथन का आशय यह है कि नवीनकल्प के आरम्भ होने तक देवी द्वारा सृष्टि-निर्माण का कार्य स्थगित बना रहता है।

वामहस्ते कृपाण—'देवी के ऊपर वाले बाँये हाथ में कृपाण है'—इसका आशय यह है कि भगवती हानिरूपी तलवार से मोहरूपी मायापाश को नष्ट करती है। तलवार के बाँये हाथ में होने का तात्पर्य यह है कि भगवती वाम-मार्ग अर्थात् शिवजी (शिवजी का एक नाम 'वामदेव' भी है) के बताये हुए मार्ग पर चलने वाले निष्काम भक्तों के अज्ञान को नष्ट कर, उन्हें मुक्ति प्रदान करती हैं।

छिन्नमुण्डं तथाधः—'देवी के नीचे वाले बाँये हाथ में कटा हुआ सिर है'—यह कहने का तात्पर्य है कि देवी अपने निचले बाँये हाथ में अर्थात् वाम-मार्ग की

निम्नतम माने जाने वाली क्रियाओं में भी, रजोगुण-रहित तत्वज्ञान के आधार मस्तक (शुद्धज्ञान) को धारण किये रहती हैं।

सव्येचाभीर्वरञ्च—'देवी के दाँई ओर के हाथों में अभय तथा वर मुद्रा हैं - इस कथन का तात्पर्य है कि देवी दक्षिणमार्गी सकाम-साधकों को 'अभय' (निर्भयता) तथा 'वर' (मनोभिलाषाओं की पूर्ति) प्रदान करती हैं।

महाकाल सुरता—'देवी महाकाल के साथ सुरत (सहवास) में संलग्न हैं'— अर्थात् भगवता महाकाल को शक्ति प्रदान करती हैं। जब वे निर्गुणा होती है तो महाकाल उन्हीं में सन्निविष्ट हो जाता है और जब सगुणा होती हैं तो महाकाल से मुक्त रहते हैं। अस्तु, वे स्थिति-क्रम में महाकाल के साथ 'सुरता' एवं सृष्टिक्रम में 'विपरीत रता' रहती हैं।

नित्य यौवनवती—'देवी नित्य यौवनवती हैं'—यह कहने का आशय है कि भगवती में अवस्था सम्बन्धी कोई परिवर्तन नहीं होता। वे नित्य चित् स्वरूपा युवती जैसी बनी रहती है।

करालवदना—इसका तात्पर्य है कि भगवती के विराट् स्वरूप को देखकर दुष्टजन भयभीत हो जाते हैं।

अन्य शब्दों के भावार्थ

मातृ योनि—इसका अर्थ है—मूलाधार स्थित त्रिकोण। जयमाला के सुमेरु को भी 'मातृ योनि' कहा जाता है।

लिङ्ग—इसका अर्थ है—जीवात्मा।

भगिनी—'कुण्डलिनी' को जीवात्मा की भगिनी कहा गया है।

योनि—'सुमेरु' के अतिरिक्त माला के अन्य दानों को 'योनि' कहा जाता है।

मद्यपान—इसका आशय है—कुण्डलिनी को जगाकर ऊपर उठायें तथा षट् चक्र का भेदन करते हुए सहस्रार में लेजाकर, शिव-शक्ति की समरसता के आनन्दामृत का बारम्बार पान करना।

कुण्डलिनी को मूलाधार चक्र अर्थात् पृथ्वी तत्व से उठाकर सहस्रार में ले जाने से जिस आनन्द रूपी अमृत की उपलब्धि होती है, वही **'मद्यपान'** है और ऐसे अमृत रूपी मद्य का पान करने से पुनर्जन्म नहीं होता।

---

२ मन्त्र दीक्षा-क्रम, जप, ध्यान-तत्व निरूपण

मन्त्र-दीक्षा क्रम

भगवती काली की उपासना के अनेक मन्त्र हैं।

एकाक्षर मन्त्र **'क्रीं'**—को 'काली-प्रणव' कहा गया है। यह 'चिन्तामणि-काली' का मन्त्र है, अतः सर्वप्रथम इसी मन्त्र की दीक्षा आवश्यक है। इस एकाक्षर-मन्त्र को 'महामन्त्र' की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

'हूँ हूँ'—यह क्रोध बीजद्वय मन्त्र 'स्पर्शमणि काली' का है, अन्तः दूसरी बार इस मन्त्र की दीक्षा होनी चाहिए। यह मन्त्र शब्द ज्ञान दाता है।

'हूं क्रीं ह्रीं'—यह त्र्यक्षर मन्त्र सन्ततिप्रदा काली का है! अतः तीसरी बार इस मन्त्र की दीक्षा होनी चाहिए।

"ॐ ह्रीं क्रीं में स्वाहा'—यह मन्त्र 'सिद्ध काली' का है। अतः चौथी बार इस मन्त्र की दीक्षा होनी चाहिए।

उक्त दीक्षाओं के उपरान्त भगवती दक्षिणा काली के 'विद्याराज्ञी बाईस अक्षरों वाले मन्त्र की दीक्षा होनी चाहिए।

इसके पश्चात् कामकला काली, हंसकाली, गुह्यकाली, भद्रकाली, श्मशान काली, महाकाली आदि के मन्त्रों की दीक्षा होनी चाहिए।

उक्त सब मन्त्रों का यथा विधि पुरश्चरण होने के बाद ही क्रमशः तारा, षोडशी, छिन्नमस्ता आदि के मन्त्रों की दीक्षा प्रशस्त कही गई है। इनके बाद महाकाल भैरव तथा बटुक भैरव के मन्त्रों की दीक्षा का विधान है।

साधक को चाहिए कि वह जिस मन्त्र को भी अपने लिए उपयुक्त समझे उसी का साधन करे, परन्तु किसी भी मन्त्र की सिद्धि के लिए गुरु से दीक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। गुरु की कृपा आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन के बिना कोई भी मन्त्र सिद्ध नहीं हो पाता।

'परम्परागत गुरु ही योग्य होगा'—यह विचार निरर्थक है। अपनी पारिवारिक गुरु परम्परा का विचार न करके, जो मन्त्रज्ञ श्रेष्ठ सौम्य, योग्य, विद्वान् तथा अनुभवी हो, उसी को अपना गुरु बनाना चाहिए।

'भैरव तन्त्र' के अनुसार कालीदेवी के सभी मन्त्र महामन्त्र हैं। इनके ध्यान मात्र से ही मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। इन मन्त्रों के सम्बन्ध में 'अरि-मित्रादि' दोषों का विचार नहीं किया जाता। जो साधक सर्वसिद्धिदात्री भगवती काली का ध्यान तथा मन्त्र-जप करता है। उसे सम्पूर्ण सिद्धियाँ उपलब्ध होती हैं। वह गद्य-पद्य मय भाषण द्वारा लोगों को आश्चर्य चकित कर देता है। उसके दर्शन मात्र से ही शत्रुगण निस्तेज हो जाते हैं तथा राजागण उसकी दासता कर उठते हैं। वह तीनों लोकों को वशीभूत कर सकता है तथा अन्त में दुर्लभ 'देवी-गण-पद' को प्राप्त करता है। भगवती काली के मन्त्र सामान्य परिश्रम तथा विधियों से ही सिद्ध हो जाते हैं तथा साधक को अभीप्सित फल प्रदान करते हैं।

भाव

भगवती काली की उपासना के तीन भाव कहे गए हैं—(१) पशुभाव, (२) वीरभाव तथा (३) दिव्यभाव।

मनुष्य संसार के सभी प्राणियों में सर्वोत्तम पशु है। अतः सामान्य मनुष्य इसी भाव से भगवती की पूजा उपासना करते हैं।

वीर भाव तथा दिव्यभाव उन्नत-साधना के अङ्ग हैं। इन भावों की उपा-सना गुरुद्वारा निर्देशित मार्ग के आधार पर ही करनी चाहिए, अथवा लाभ के स्थान पर हानि की संभावना अधिक रहेगी।

श्रद्धा

जब तक पूर्ण श्रद्धा न हो, तब तक कोई भी साधन सिद्ध नहीं होता। अस्तु, किसी भी साधन को करते समय उसके प्रति पूर्ण श्रद्धालु होना अत्यावश्यक है। श्रद्धा-रहित सभी कर्म तथा साधन निष्फल हो जाते हैं।

ध्यान

ध्यान ही उपासना का मुख्य अङ्ग है। पूजा, जप आदि इसी के साधन हैं। ध्यान के बिना पूजा, जप, पाठ आदि सब निष्फल होते हैं। करोड़ों पूजन के समान स्तोत्र, करोड़ों स्त्रोतों के समान जप तथा करोड़ों जप के समान ध्यान कहा गया है।

ध्यान की परमावस्था 'जप' है। इसे करोड़ों ध्यान के बराबर माना गया है।



चित्र—३

भगवती काली के ध्यान के अनेक प्रकार हैं। उपासक की जैसी रुचि हो, उसीके अनुसार ध्यान करना चाहिए।

यों मन्त्रों के आधार पर भी ध्यान के क्रमों का वर्गीकरण किया गया है। उनके नाम इस प्रकार हैं—(१) कादि, (२) हादि, (३) क्रोधादि, (४) वागादि, (५) नादि, (६) दादि तथा (७) प्रणवादि।

इन क्रमों के विषय में निम्नानुसार समझना चाहिए—

(१) **'कादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के आदि-अक्षर 'क' कार शब्द से प्रारम्भ हों, उनके लिए 'कादि क्रम' का ध्यान प्रशस्त है। यथा—'क्रीं'।

(२) **'हादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के आदि-अक्षर 'ह' कार शब्द से प्रारम्भ हों, उनके लिए 'हादि क्रम' का ध्यान प्रशस्त है। यथा ह्रीं।

(३) **'क्रोधादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के आदि अक्षर 'हूं' से प्रारम्भ होते हों, उनके लिए 'क्रोधादिक्रम, का ध्यान प्रशस्त है।

(४) **'वागादि' क्रम**—जिन मन्त्रों का आदि अक्षर वाग्बीज 'श्री' से प्रारम्भ हो, उनके लिए 'वागादि क्रम' का ध्यान प्रशस्त है।

(५) **'नादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के अन्त में 'नमः' शब्द आता हो, उनके लिए 'नादि क्रम' का ध्यान प्रशस्त है।

(६) **'दादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के आदि में 'द' अक्षर आता हो, उनके लिए **'दादि क्रम'** का ध्यान प्रशस्त है । यथा—'दक्षिणे' ।

(७) **'प्रणवादि' क्रम**—जिन मन्त्रों के आदि में प्रणव-बीज 'ॐ' आता हो, उनके लिए 'प्रणवादि क्रम' का ध्यान प्रशस्त है ।

उक्त क्रमों के 'ध्यान' आगे दिए गए हैं, तदनुसार समझलें ।

जप

मन्त्र के सार्थ (अर्थ ज्ञान सहित) स्मरण को जप कहा जाता है । अर्थात् जो जप मन्त्र के वास्तविक अर्थ को जानते हुए किया जाता है, वही यथार्थ जप है । अर्थ जाने बिना मन्त्रोच्चारण अथवा मन्त्र-जप निष्फल होता है । अतः देवता के रूप, गुण आदि का मनन करते हुए तथा मन्त्र के वास्तविक अर्थ को अनुभव करते हुए ही जप करना उचित है ।

इस भाँति निरन्तर अभ्यास करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, तत्पश्चात् ही अभीप्सितफल की उपलब्धि होती है ।

'कादि' क्रम का ध्यान

"करालवदनां घौरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम् ।।
सद्यः छिन्नशिरः खड्गवामाधोर्ध्वं कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोर्ध्वाधःपाणिकाम् ।।
महामेघ प्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम् ।
कण्ठावसक्तमुण्डाली गलद्रुधिर चर्चिताम् ।।
कर्णावतंसतानीत शवयुग्म भयानकां ।
घोरदंष्ट्रा करालास्यां पीनोन्नत पयोधराम् ।।
शवानां कर संघातैः कृतकाञ्ची हसन्मुखीम् ।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधारां विस्फुरिताननाम् ।।
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम् ।
बालर्क्कमण्डलाकार लोचनत्रितयान्विताम् ।।
दन्तुरां दक्षिण व्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।
शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ।।

शिवाभिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ।।
सुख प्रसन्नावदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।
एवं सञ्चियन्तयेत् काली सर्वकाम समृद्धिदां ।।"

भावार्थ—"भगवती दक्षिणा कालिका कराल मुख वाली, घोर शब्द वाली, मुक्त केशों वाली, चार भुजाओं वाली, दिव्य तथा मुण्डमाला से विभूषित हैं।

वे सद्यः काटे गये शिर तथा खड्ग को अपने बाँई ओर के निचले तथा ऊपरी हाथों में धारण किए हैं। दाँई ओर के ऊपरी हाथ में अभय तथा निचले हाथ में वरद मुद्रा है।

वे महामेघ की प्रभा तुल्य श्याम शरीर वाली, दिगम्बरा हैं। उनके कण्ठ में मुण्डों की माला है जिनसे रक्तस्राव हो रहा है।

वे अपने दोनों कानों में दो भयानक शवों को कुण्डल, की भाँति पहने हैं, उनके दाँत विकराल हैं एवं उनके स्तन बड़े तथा उन्नत हैं।

वे शवों के हाथों की करधनी पहने हुए हैं, जिनके कारण उनका जननाङ्ग आच्छादित है। वे हास्यमुखी हैं, उनके दोनों होठों के कोनों से रक्तस्राव हो रहा है, उनका मुँह खुला हुआ है।

वे घोर शब्द तथा महारौद्ररूप वाली हैं। वे श्मशानालय में निवास करती है। बालसूर्य मण्डल की भाँति लालवर्ण वाले उनके तीन नेत्र हैं।

वे बड़े दाँतों वाली, दाँई ओर मोतियों के उच्चासन पर शवरूपी महादेव क हृदय के ऊपर स्थित हैं।

शिवाएँ (गीदड़ियाँ) आदि घोर शब्द करती हुई उनके चारों ओर खड़ी हैं। वे महाकाल के साथ विपरीत रति में आसक्त हैं।

वे सुख पूर्वक प्रसन्न मुख वाली हैं। उनके मुख कमल पर मुस्कान सुशोभित है। ऐसी सर्व काम समृद्धिदायिका भगवती काली का चिन्तन (ध्यान) करना चाहिए।"

'हादि' क्रम का ध्यान

"देव्याध्यानमयो वक्ष्ये सर्वदेवोऽपशोभितम् ।
अञ्जनाद्रिनिभां देवीं करालवदनां शिवाम् ।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् ।
महाकालहृदम्भोज स्थितां पीन पयोधराम् ।।

विपरीतरतासक्तां घोर दंष्ट्रां शिवेन वै।
नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृत शेखराम् ॥
सर्वालङ्कार संयुक्तां मुक्तामणि विभूषिताम् ।
मृतहस्तसहस्रैस्तु बद्धकाञ्चीं दिगम्बराम् ॥
शिवाकोटि सहस्रैस्तु योगिनीभिर्विराजिताम् ।
रक्तपूर्ण मुखाम्बोजां मद्यपान प्रमत्तिकाम् ॥
सद्यश्छिन्न शिर: खड्गवामोर्ध्वाध: कराम्बुजाम् ।
अभयोवरदक्षोर्ध्वाध: करां परमेश्वरीम् ॥
वह्न्यर्क शशि नेत्रांच रक्त विस्फुरिताननाम् ।
विगतासु किशोराभ्यां कृत कर्णावतंसिनीम् ॥
कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद्रुधिर चर्चिताम् ।
श्मशानवह्निमध्यस्थां ब्रह्म केशव वन्दिताम् ॥"

भावार्थ—"देवी का ध्यान इस प्रकार करें—भगवती सब देवताओं से सुशोभित हैं अर्थात् सभी देवता उनके चारों ओर खड़े हुए स्तुति कर रहे हैं। वे कज्जलगिरि के वर्ण वाली तथा कराल मुखवाली, कल्याणकारी हैं।

वे मुण्डमाला पहिने हैं, उनके केश बिखरे हुए हैं, उनके मुख पर मुस्कान सुशोभित है, वे महाकाल के हृदय कमल पर स्थित हैं, उनके स्तन बड़े-बड़े हैं।

वे भयानक दाँतो वाली देवी शिव के साथ विपरीत-रति में असक्त हैं। वे नागयज्ञोपवीत पहने हैं तथा शिर पर अर्द्धचन्द्र धारण किये हैं।

वे सभी अलंकारों से युक्त तथा मुक्ता-मणियों से विभूषित हैं। वे एक सहस्र मृतकों के हाथों की करधनी बाँधे हुए दिगम्बरा हैं।

करोड़ों शिवाएँ (गीदड़िया) तथा सहस्रों योगिनियाँ उनके चारों ओर विराजित हैं। उनका मुख-कमल रक्त पूर्ण है तथा वे मद्यपान के कारण प्रमत्ता बनी हुई हैं।

परमेश्वरी के बाँई ओर के ऊपरी हाथ में खड्ग तथा निचले हाथ में सद्य:छिन्न (कटा हुआ) शिर है तथा दाँई ओर का ऊपरी हाथ अभयमुद्रा एवं निचला हाथ वरदमुद्रा में है।

अग्नि, सूर्य तथा चन्द्रमा जैसे उनके तीनों नेत्र हैं। उनके मुख से रक्त बह रहा है।

वे अपने कानों में किशोर वय बालकों के शवों को कुण्डल की भाँति हैं पहने।

वे ऐसी मुण्डमाला धारण किए हैं, जिनके कटे हुए कण्ठों से रक्त स्राव हो रहा है। वे श्मशानाग्नि में स्थित हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु द्वारा वन्दित हैं।"

क्रोधादि-क्रम का ध्यान

"दीपं त्रिकोणं विपुलं सर्वतः सुमनोहरम्।
कूजत् कोकिल नादाढ्यं मन्दमारुत सेवितम्॥
भृंगपुष्पलताकीर्णमुद्यच्चन्द्र दिवाकरम्।
स्मृत्वा सुधाब्धि मध्यस्थं तस्मिनमाणिक्यमण्डपे॥
रत्नसिंहासने पद्मे त्रिकोणोज्ज्वलकर्णिके।
पीठे सञ्चिन्तयेत देवीं साक्षात्त्रैलोक्यसुन्दरीम्॥
नीलनीरजसंकाशा प्रत्यालीढपद स्थिताम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां खण्डेन्दुकृत शेखराम्॥
लम्बोदरी विशालाक्षीं श्वेत प्रेतासन स्थिताम्।
दक्षिणोर्ध्वेन निस्तृंशं वामोर्ध्वनीलनीरजम्॥
कपालंदधतीञ्चैव दक्षिणाधश्चकर्तृकाम्।
नागाष्टकेन सम्बद्ध जटाजूटां सुरार्चिताम्॥
रक्तवर्तुल नेत्रांश्च प्रव्यक्त दशनोज्ज्वलाम्।
व्याघ्रचर्मपरीधानां गन्धाष्टक प्रलेपिताम्॥
ताम्बूलपूर्ण वदनां सुरासुर नमस्कृताम्।
एवं सञ्चितयेत् कालीं 'सर्वाभीष्टप्रदां शिवाम्॥"

भावार्थ—"तीनों कोनों में असंख्य दीपक चारों ओर सुशोभित होकर जगमगा रहे हैं। कोकिलाएँ कूक रही हैं। मन्द-मन्द वायु बह रही है।

भ्रमर, पुष्प, लताओं से आच्छादित स्थल में सूर्य-चन्द्र उदित हैं तथा अमृत के समुद्र के मध्य एक माणिक्यनिर्मित मण्डप बना हुआ है।

वहाँ रत्नसिंहन पर पद्म त्रिकोण की उज्ज्वल कर्णिका वाली पीठ पर विराजमान् साक्षात् त्रैलोक्य सुन्दरी देवी का इस प्रकार चिन्तन करें—

नील-कमल की शोभा युक्त भगवती प्रत्यात्पीठ पद से स्थित हैं। वे चार भुजाओं वाली, तीन नेत्रों वाली तथा मस्तक पर अर्द्धचन्द्र को धारण किये हुए हैं।

वे लम्बे उदर वाली, विशाल नेत्रों वाली, श्वेत-प्रेतासन पर स्थित हैं। वे अपने दाँई ओर के ऊपरी हाथ में खर्पर तथा बाँई ओर के ऊपरी हाथ में नील-कमल धारण किए हैं।

वे बाँई ओर के निचले हाथ में कपाल तथा दाँई ओर के निचले हाथ में कैंची धारण किए हैं। वे आठ नागों से सम्बद्ध हैं, जटाजूटधारिणी हैं तथा देवताओं द्वारा पूजित हैं।

वे रक्तवर्ण गोल नेत्रों वाली हैं। उनके उज्ज्वल दाँत दिखाई दे रहे हैं। वे व्याघ्र चर्म का परिधान पहिने हैं तथा अष्टगन्ध का लेप किए हैं।

उनका मुख ताम्बूल पूरित है। देवता तथा दैत्य उन्हें नमस्कार कर रहे हैं। ऐसी समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली भगवती शिवा का ध्यान करना उचित है।"

वागादि-क्रम का ध्यान

"चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषिताम्।
खड्गञ्च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीं सशरं धनुः॥
मुण्डञ्च खर्परञ्चैव क्रमाद्वामेन विभ्रतीम्।
द्यो लिखन्ती जटामेकां विभ्रती शिरसा स्वयं॥
मुण्डमाला धरा शीर्षे ग्रीवायामपि सर्वदा।
वक्षसा नागहारं तु विभ्रतीं रक्तलोचनाम्॥
कृष्ण वस्त्र धरां कट्यां व्याघ्राजिनसमन्विताम्।
वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणंपदम्॥
विन्यस्य सिंह पृष्ठेच लेलिहानां शवं स्वयं।
साट्टहासां महाघोररावयुक्ता सुभीषणाम्॥"

भावार्थ—भगवती चार भुजाओं वाली, कृष्णवर्णा तथा मुण्डमाला से विभूषिता हैं। वे दाँये हाथों में खडग तथा धनुष-वाण धारण किये हैं। उनके बाँये हाथों में मुण्ड तथा खप्पर है। उनके मस्तक की एक जटा आकाश का स्पर्श कर रही है। वे अपने मस्तक तथा कण्ठ में मुण्डों की माला सदैव धारण किए रहती हैं। उनके वक्षःस्थल पर नाग हार सुशोभित है तथा नेत्र लालवर्ण के हैं। वे कृष्णवर्ण वाली, दिव्यस्वरूपा तथा बाघम्बर धारिणी हैं। वे अपने बाँये पाँव को शव के हृदय पर रखे हैं तथा दाँये पाँव को सिंह की पीठ पर रखे बैठी हैं। वे अट्टहास युक्त महाघोर शब्द करने वाली भीषण स्वरूपा हैं।"

नादि-क्रम का ध्यान

"खड्गञ्च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीन्दीवरद्वयम् ।
कर्तृकां खर्परञ्चैव क्रमाद वामेन विभ्रतीं ॥"

(शेष: वागादि क्रमानुसोरण -)

भावार्थ—भगवती के दाँई ओर वाले दोनों हाथों में क्रमशः खड्ग तथा कमल हैं तथा बाँई ओर वाले दोनों हाथों में क्रमशः कैंची एवं खप्पर हैं।

(शेष ध्यान वागादि-क्रम के अनुसार करें—) ।

दादि-क्रम का ध्यान

"सद्यः कृन्तशिरः खड्गमूर्ध्वद्वय कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदं चैव तयोद्वय करान्विताम् ॥"

(शेष: कादि क्रमानुसारेण)

भावार्थ—भगवती ऊपर के दोनों कर-कमलों में सद्यः कटा हुआ शिर तथा खड्ग लिए हैं एवं नीचे के दोनों हाथ अभय तथा वरद मुद्रा में हैं।

(शेष ध्यान कादि-क्रम के अनुसार करें—)

प्रणवादि-क्रम का ध्यान

इस क्रम का ध्यान 'कादि-क्रम' के अनुसार कहा गया है।

काली गायत्री

"कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

---

३ | सामान्य पूजा-विधि

भगवती के विभिन्न मन्त्रों के साथ पूजा-विधि का उल्लेख यथास्थान किया गया है। वहाँ गंधाक्षत पुष्पादि का प्रयोग करते समय किस कार्य हेतु किस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए, इसे यहाँ लिखा जा रहा है। भगवती की दैनिक-पूजा में भी इन्हीं मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

शौच स्नानदि से निवृत्त हो, धौतवस्त्र धारण कर, पवित्र आसन पर बैठें तथा देवी के पूजा-यन्त्र को चौकी आदि पर अपने सन्मुख रखकर, सर्वप्रथम ध्यान करें।

देवी के विशिष्ट ध्यान के मन्त्रों का उल्लेख प्रथक्-प्रथक् किया गया है। सामान्य-पूजा में निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा भगवती का ध्यान करना चाहिए—

ध्यान-मन्त्रः

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या
वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च
सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥ १ ॥
या माया प्रकृतिः शक्ति श्चण्डमुण्ड विमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदाभव ॥ २ ॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपाल्य विश्वं
विश्वात्मिका धारयतीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्याभवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३ ॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वामीश्वरी देवि चराचरस्य ।। ४ ।।
या श्री: स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी:
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि ।
श्रद्धां सतां कुलजन प्रभवश्य लज्जा
तां त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम् ।। ५ ।।

ध्यानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र से 'आवाहन' करें—

आवाहन-मन्त्र

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निबूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि: नमस्ते शंकर प्रिये ।।

'आवाहन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आसन' प्रदान करने हेतु पृथ्वी अथवा चौकीपर जल का निक्षेप करें—

आसन-मन्त्र

अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
मातर्स्वर्णमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ।।

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पाद्य' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य-मन्त्र

गंगादि सर्वतोर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम् ।
तोय मेतत्सुखं स्पर्श पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अर्घ्य' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य-मन्त्र

गन्धपुष्पा क्षतैर्युक्तमर्ध्यं सम्पादितं मया ।
गृहाणत्वं महादेवि प्रसन्नाभव सर्वदा ।।

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आचमनीय' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करें—

आचमनीय-मन्त्र

आचम्यतां त्वयादेवि भक्तिमेह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम् ॥

'आचमनीय' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से स्नानार्थ जल का निक्षेप करें—

स्नानीय-जल-मन्त्र

जाह्नवी तोयमानीतं शुभं कर्पूर संयुतम्।
स्नापयानि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादि फलप्रदान् ॥

'स्नानीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पंचामृत-स्नान करायें—

पञ्चामृत-स्नान मन्त्र

पयोदधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥

'पञ्चामृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र मन्त्र

वस्त्रं च सोमदेवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरी ॥

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से उपवस्त्र समर्पित करें—

उपवस्त्र-मन्त्र

यमाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा।
तस्यै ते परमेशानि कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क-मन्त्र

दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाणत्वं वरदा भव शोभने ॥

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'गन्ध' समर्पित करें—

गन्ध-मन्त्र

परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरी ॥

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम-मन्त्र

कुंकुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनी कामसम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥

'कुकुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण-मन्त्र

स्वभावं सुन्दरांगर्थं नानाशक्त्याश्रिते शिवे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर मन्त्र—

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुम सन्निभम् ।
पूजितासि महादेवि प्रसीद परमेश्वरी ॥

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'काजल' समर्पित करें—

कज्जल मन्त्र

चक्षुभ्यां कज्जलंरम्यं सुभगे शान्तिकारिके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं ग्रहाण परमेश्वरि ॥

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'सौभाग्य सूत्र' समर्पित करें—

सौभाग्य सूत्र मन्त्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥

'सौभाग्य-सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'गन्धद्रव्य' समर्पित करें—

गन्ध-द्रव्य-मन्त्र

चन्दनागरु कर्पूरं कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥

'गन्ध-द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अक्षत' समर्पित करें—

अक्षत-मन्त्र

रञ्जिता कुंकुमौघेन अक्षताश्चापि शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्नाभवमीश्वरी ॥

अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पुष्प' समर्पित करें—

पुष्प-मन्त्र

मन्दारपारिजातादिपाटली केतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरी ॥

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला-मन्त्र

सुरभि पुष्पनिचयैर्ग्रंथितः शुभमालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'बिल्वपत्र' समर्पित करें—

बिल्वपत्र-मन्त्र

''अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरी ॥

बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'धूप' दें—

धूप-मन्त्र

दशांग गुग्गुलं धूपं चन्दनागरु संयुतम् ।
समर्पितं मयाभक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'दीप' प्रदर्शित करें—

दीप-मन्त्र

घृतवर्तिसमायुक्त महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥

'दीप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से ''नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य-मन्त्र

अन्नं चतुर्विधिं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मेह्यचलां कुरु ॥

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'ऋतुफल' समर्पित करें—

ऋतुफल-मन्त्र

द्राक्षारवर्जूरकदली पनसाम्रकपित्यकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥

'ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आचमनीय जल' समर्पित करें—

आचमनीय-जल-मन्त्र

कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनर्भाम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके ॥

'आचमनीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतुफल-मन्त्र

नारिकेलं च नारंग कलिंगमञ्चिरं तथा ।
ऊर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ॥

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

एलालवंग, कस्तूरी कर्पूरैः सुष्ठुवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ॥

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा-मन्त्र

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'नीराजन' (आरती) करें—

नीराजन-मन्त्र

नीराजनं सुमंगल्यं कपूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्क वह्नि सदृशं महादेवि नमोऽस्तुते ॥

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा मन्त्र

नमस्ते देबि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतांधात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए नमस्कार निवेदित करें—

नमस्कार-मन्त्र

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टांगो ऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥

'नमस्कार' के पश्चात् स्तोत्र आदि का पाठ करें। अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'विसर्जन' करें—

विसर्जन-मन्त्र

इमां पूजा मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थानमनुत्तमम् ॥

॥ इति सामान्य काली-पूजन विधिः ॥

---

४ | द्वाविंशाक्षर दक्षिणकाली-मन्त्र साधन की विशेष विधि

अब भगवती दक्षिण कालिका के बाईस अक्षरों वाले मन्त्र की साधन-विधि का वर्णन किया जाता है। इस मन्त्र को 'विद्याराज्ञी' नाम दिया गया है तथा सब मन्त्रों में प्रधान माना गया है। मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥

भावार्थ—इस मन्त्र के वर्णों का भावार्थ इस प्रकार है—

(१) **'ककार'**—जलरूप है। यह मोक्ष-प्रदायक है।

(२) **'रेफ'**- अग्निरूप है। यह सर्वतेजोमय है।

(३) **क्रीं क्रीं क्रीं**—ये तीनों बीज सृष्टि, स्थिति एवं लयकर्ता हैं।

(४) **बिन्दु**—यह निष्फल ब्रह्मरूप है। यह कैवल्य फल देता है।

(५) **हूं हूं**—ये दोनों बीज शब्द-ज्ञानदायक हैं।

(६) **ह्रीं ह्रीं**—ये दोनों बीज भी सृष्टि स्थिति एवं लयकारक हैं।

(७) **दक्षिण कालिके**—यह सम्बोधन देवी का सामीप्य लाभ देता है।

(८) **स्वाहा**—यह मन्त्र जगत् का मातृ-स्वरूप है तथा समस्त पापों को क्षय करने वाला है।

साधन-प्रयोग विधि

सर्वप्रथम शौचादि प्रातः कृत्यों से निवृत्त हो, धौतवस्त्र धारणकर, पवित्र आसन पर बैठें।

आचमन-विधि

फिर 'क्रीं इस मन्त्र द्वारा तीन बार जल से आचमन करें तथा '**ॐ काल्यै- नमः । ॐ कपालिन्यै नमः**, इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए दोनों ओष्ठों का मार्जन करें । फिर—

ॐ कुल्वायै नमः ।

इस मन्त्र द्वारा हस्त-प्रक्षालन करें अर्थात् दोनों हाथों को पानी से धोडालें, फिर—

ॐ कुरु कुल्वायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, मुख का, स्पर्श करें । फिर—

ॐ विरोधिन्यै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, दाँये नासाछिद्र का स्पर्श करें । फिर—

ॐ विप्र चित्तायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, बाँये नासाछिद्र का स्पर्श करें । फिर—

ॐ उग्रायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, दाँये नेत्र का स्पर्श करें । फिर—

ॐ उग्रप्रभायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, बाँये नेत्र का स्पर्श करें । फिर—

ॐ दीप्तायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, दाँये कान का स्पर्श करें । फिर—

ॐ नीलायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, बाँये कान का स्पर्श करें । फिर—

ॐ धनायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, नाभि का स्पर्श करें । फिर—

ॐ बलाकायै नमः ।

इस मन्त्र का उ चारण कर, वक्ष का स्पर्श करें । फिर—

ॐ मात्रायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, मस्तक का स्पर्श करें । फिर—

ॐ मुद्रायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर दाँये कन्धे का स्पर्श करें। फिर—

ॐ मिलायै नमः ।

इस मन्त्र का उच्चारण कर, बाँये कन्धे का स्पर्श करें।

उक्त विधि से आचमन करके सामान्य पूजापद्धति के अनुसार भूत-शुद्धि तक सब कार्य करके मातृ-बीज 'ह्रीं' इस मन्त्र द्वारा प्राणायाम करें। तदुपरान्त 'ऋष्यादिन्यास' आदि आगे लिखे अनुसार करें।

न्यास से पूर्व 'विनियोग-वाक्य' का उच्चारण करना चाहिए, जो निम्नलिखित है—

विनियोग-वाक्य

"ॐ अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषिरुष्णिक्छन्दो दक्षिणकालिका देवता ह्रीं बीजं हूँ शक्ति, क्रीं कीलकं पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे विनियोगः।"

ऋष्यादिन्यासः

शिरसि भैरव ऋषयेनमः ।
मुखे उष्णिक्छन्दसे नमः ।
हृदि दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः ।
गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः ।
पादयो हूँ शक्तये नमः ।
सर्वाङ्गे क्रीं कीलकायनमः ॥

इसके पश्चात् निम्नानुसार ,कराङ्गन्यास' करें—

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं ।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट ।
ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् ।

उक्त विधि से 'करन्यास' करके "षडङ्गन्यास' करना चाहिए।"

षडङ्गन्यास

ॐ ह्रां, हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।

ॐ ह्रूं शिखायैवषट । ॐ ह्रैं कवचाय हुं ।

ॐ ह्रौ नेत्रत्रयाय वौषट । ॐ ह्रः अस्त्राय फट् ।

अथवा 'क्र' वर्ण में दीर्घ स्वर मिला कर नीचे लिखे अनुसार "कराङ्गन्यास" तथा 'षडङ्गन्यास' करने चाहिए यथा—

ॐ क्रां अगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।

ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हुं ।

ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् ।

'कराङ्गन्यास एवं षडङ्गन्यास' के उपरान्त निम्नलिखित विधि से 'वर्ण-न्यास' करना चाहिए—

वर्णन्यास

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः

इति हृदये ।

एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः

इति दक्षिण बाहौं ।

ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः

इति वाम बाहौ ।

णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः

इति दक्षिण पादे ।

मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमः

इति वाम पादे ।

टिप्पणी—'वर्णन्यास' के सम्बन्ध में विरूपाक्ष का मत है कि इसे उक्त 'सविन्दु रीति' से करना चाहिए, परन्तु 'काली-तन्त्र' के अनुसार 'निर्विन्दु-रीति' से (अर्थात् अनुस्वार रहित केवल अ, क आदि) ही करना चाहिए । आचार्यों के मत में दोनों ही विधियाँ युक्तियुक्त है, अतः जैसी इच्छा हो, उसी के अनुसार 'वर्णन्यास' करें ।

'वर्णन्यास' के उपरान्त 'षोढान्यास' करना चाहिए—

षोढान्यास

'वीर तन्त्र' के अनुसार पहले केवल 'मातृकान्यास' करे तत्पश्चात् क्रमशः समस्त मातृका वर्णों को 'ॐ' मन्त्र से पुटित करके न्यास करें, यथा—

ललाटमें—ॐ अं ॐ नमः ।
मुखमें—ॐ आं ॐ नमः ।
ललाट में—अं ॐ अं नमः ।
मुखमें—आं ॐ आं नमः ।

इत्यादि ।

इसके बाद श्री बीज 'श्रीं' के द्वारा समस्त मातृका वर्णों को पुटित करके, उसी प्रकार मातृकान्यासोक्त स्थान में न्यास करना चाहिए तथा समस्त मातृका वर्णों द्वारा 'श्रीं' बीज को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिए । जैसे—

ललाट में—श्रीं अं श्रीं नमः ।
मुख में—श्री आं श्रीं नमः ।
ललाट में—अं श्रीं अं नमः ।
मुख में—आं श्रीं आं नमः ।

इत्यादि ।

इसके बाद कामबीज 'क्लीं' के द्वारा समस्त मातृकावर्णों को पुटित करके मातृकान्यास के स्थान में तथा मातृका वर्णों द्वारा 'क्लीं' बीज को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिए । जैसे—

ललाट में—क्लीं अँ क्लीं नमः ।
मुख में—क्लीं आं क्लीं नमः ।
ललाट में—अं क्लीं अं नमः ।
मुख में—आं क्लीं आं नमः ।

इत्यादि ।

इसके बाद शक्ति बीज 'ह्रीं' के द्वारा समस्त मातृका वर्णों को पुटित करके मातृका न्यास के स्थान में तथा मातृका वर्णों द्वारा 'ह्रीं' बीज को पुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिए । जैसे—

ललाट में—ह्रीं अं ह्रीं नमः ।
मुख में—ह्रीं आं ह्रीं नमः ।
ललाट में—अं ह्रीं अं नमः ।
मुख में—आं ह्रीं आं नमः ।

इत्यादि ।

इसके उपरान्त ललाट में—

"क्रीं क्रीं ॠं ॠं लृं लॄं क्रीं क्रीं नमः" तथा

'ॠं ॠं लृं लॄं क्रीं क्रीं ॠं ॠं लृं लॄं नमः"

इत्यादि क्रम से मातृका स्थान में न्यास करना चाहिए।

इसके पश्चात् मूल मन्त्र द्वारा मातृका वर्ण को तथा मातृका वर्ण द्वारा मूल मन्त्र को पुटित करके पूर्वोक्त स्थानों में न्यास करना चाहिए। जैसे—

ललाट में—क्रीं अं क्रीं नमः।

मुख में—क्रीं आं क्रीं नमः।

इत्यादि

इसी भाँति अनुलोम तथा विलोमात्क न्यास करके मूल मन्त्र द्वारा १०८ बार 'व्यापक न्यास' करना चाहिए—

इस प्रकार 'षोढान्यास' करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

'षोढान्यास' के पश्चात् 'तत्त्वन्यास' करना चाहिए—

तत्त्वन्यास

पूर्वोक्त बाईस अक्षर वाले मन्त्र को तीन खण्डों में बाँटें।

प्रथम खण्ड में ७, द्वितीय खण्ड में ६ तथा तृतीय में ९ अक्षर रहने चाहिए। इन्हीं खण्डों की योजना से यह न्यास होता है। यथा—

प्रथम खण्ड के अन्त में—

ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।

द्वितीय खण्ड के अन्त में—

ॐ विद्या तत्त्वाय स्वाहा।

तृतीय खण्ड के अन्त में—

ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा।

कहकर न्यास करें। जैसे—

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।"

इस मन्त्र द्वारा चरणों से नाभिपर्यन्त तथा—

"दक्षिणे कालिके ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा।"

इस मन्त्र द्वारा नाभि से हृदय पर्यन्त। तथा—

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्री ह्रीं स्वाहा ॐ शिवतत्वायस्वाहा।"

इस मन्त्र द्वारा हृदय से मस्तक पर्यन्त न्यास करें।

'तत्वन्यास' के पश्चात् आगे लिखे अनुसार 'बीजन्यास' करना चाहिए—

बीजन्यास

ब्रह्मरन्ध्र में—**क्रीं नमः।**
भ्रू मध्य में—**क्रीं नमः।**
ललाट में—**क्रीं नमः।**
नाभि में—**हूं नमः।**
गुह्य में—**हूं नमः।**
मुख में—**ह्रीं नमः।**
सर्वाङ्ग में—**ह्रीं नमः।**

टिप्पणी—उक्त षोढ़ान्यास, तत्त्वन्यास तथा बीजन्यास—ये तीनों न्यास 'काम्य' हैं, अर्थात् नित्य-पूजा में यदि इन न्यासों को न किया जाय, तो पूजा अङ्गहीन रहती है।

बीजन्यास के बाद मूल मन्त्र द्वारा सात बार 'व्यापक न्यास' करके यथा-विधि मुद्रा प्रदर्शन पूर्वक नीचे लिखे अनुसार ध्यान करें—

ध्यान का स्वरूप

भगवती काली के (१) कादि, (२) हादि (३) क्रोधादि, (४) वागादि, (५) नादि, (६) दादि तथा (७) प्रणवादि क्रम के ध्यानों का वर्णन पहले किया जा चुका है। उनमें से साधक को जो रुचिकर लगे, उसी रूप में देवी का ध्यान करना उचित है। सभी प्रकार के ध्यानों का माहात्म्य एक जैसा ही माना गया है।

अर्घ्य-स्थापन

'ध्यान' द्वारा मानस पूजा करने के बाद निम्नलिखित विधि से 'अर्घ्य-स्थापन' करें—

"सर्व प्रथम अपने वाम भाग में पृथ्वी पर 'हूं' कार गर्भित त्रिकोण लिख कर, उस पर अर्घ्यपात्र को स्थापित कर शुद्ध जल से पूर्ण करें। तदुपरान्त उसमें गंधादि छोड़कर "ॐ गङ्गे च०" आदि मन्त्र से उसमें तीर्थों का आवाहन करें। फिर—

"मं वह्नि मण्डलाय दशकलात्मने नमः"
कह कर आधार की। तथा
"अंसूर्य मण्डलायद्वादश कलात्मने नमः"
कह कर 'शङ्ख' की स्थापना करें। फिर—
"ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः"

कह कर जल का पूजन करें। तत्पश्चात्—

"ॐ ह्रां हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

ॐ ह्रू शिखायै वषट्।

ॐ ह्रैं कवचाय हुं।

इन मन्त्रों से क्रमशः अग्नि ईशान, नैर्ऋत्य तथा वायव्य कोणों में पूजन करें। फिर मध्यभाग में—

ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।

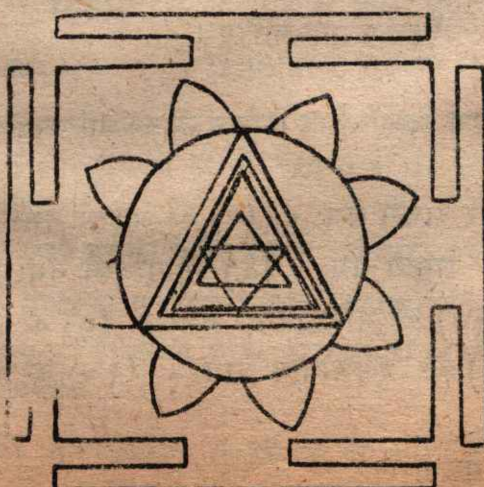
कहकर तथा चारों दिशाओं में

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

कहकर अभ्यर्चन करें। फिर 'मत्स्यमुद्रा' से आच्छादन कर, मूलमन्त्र का १० बार जप करना चाहिए। तत्पश्चात् 'धेनुमुद्रा' द्वारा अमृतीकरण करके, अस्त्र द्वारा संरक्षण करते हुए 'भूतिनी' तथा 'योनि' मुद्राओं को प्रदर्शित करें। फिर उस जल में से थोड़ा सा जल प्रोक्षणी पात्र में डाल कर, मूलमन्त्र द्वारा उस जल से अपने शरीर एवं पूजा के उपकरणों को सिंचित् करने के बाद 'पीठ-पूजा' आरम्भ करें।

पूजन-मन्त्र

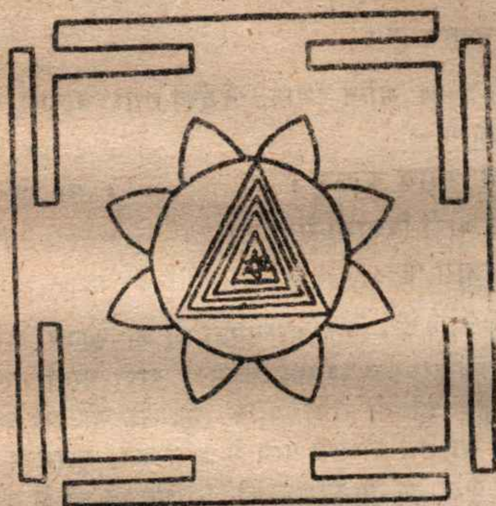
काली पूजा-मन्त्र (१)



चित्र—४

'काली तन्त्र' तथा 'कुमारी कल्प' में यन्त्र-निर्माण की जो विधियाँ वर्णित हैं, उनके अनुसार निर्मित होने वाले मन्त्रों के दो स्वरूपों को यहाँ प्रदर्शित किया जा रहा है। इनमें से किसी भी एक यन्त्र का निर्माण कराना ही पर्याप्त है—

काली पूजा-मन्त्र (२)



चित्र—५

'मुण्डमाला तन्त्र' के अनुसार 'काली पूजा मन्त्र' को तांबे के पत्र (ताम्र-पत्र), मृत मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी, श्मशान की लकड़ी से निर्मित पात्र, शनिवार अथवा मंगलवार के दिन मृत-मनुष्य के शरीर पर, स्वर्णपत्र, रजत (चाँदी) पत्र अथवा लौहपत्र पर अङ्कित कराना चाहिए।

पीठ-पूजा

मन्त्र लेखनोपरान्त निम्नलिखित विधि से 'पीठ-पूजा' करनी चाहिए—

कर्णिका में—

(१) ॐ आधार शक्तये नमः। (२) ॐ प्रकृत्यै नमः। (३) ॐ कूर्माय नमः (४) ॐ शेषाय नमः। (५) ॐ पृथिव्यै नमः। (६) ॐ सुधांबुधये नमः, (७) ॐ मणिद्वीपाय नमः। (८) ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः। (९) ॐ श्मशानाय नमः। (१०) ॐ पारिजाताय नमः।

उसके कर्णिका मूल में—

ॐ रत्नवेदिकायै नमः।

कर्णिका के ऊपर—

ॐ मणि पीठाय नमः।

चारों दिशाओं में—

(१) ॐ मुनिभ्यो नमः, (२) ॐ देवेभ्यो नमः, (३) ॐ शिवाभ्यो नमः, (४) ॐ शिवमुण्डेभ्यो नमः, (५) ॐ धर्माय नमः, (६) ॐ ज्ञानाय नमः, (७) ॐ वैराग्याय नमः, (८) ॐ ऐश्वर्याय नमः (९) ॐ अधर्माय नमः, (१०) ॐ अज्ञानाय नमः (११) ॐ अवैराग्याय नमः, (१२) ॐ अनैश्वर्याय नमः, (१३) ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

केशर में पूर्वादि क्रम से—

(१) ॐ इच्छायै नमः (२) ॐ ज्ञानायै नमः (३) ॐ क्रियायै नमः, (४) ॐ कामिन्यै नमः, (५) ॐ कामदायिन्यै नमः, (६) ॐ रत्यै नमः, (७) ॐ रति प्रियायै नमः, (८) ॐ नन्दायै नमः।

मध्य में—

ॐ मनोन्मन्यै नमः।

उसके ऊपर—

ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः।

पीठ के उत्तर भाग में—

(१) ॐ गुरुभ्यो नमः, (२) ॐ परम गुरुभ्यो नमः। (३) ॐ परापर गुरुभ्यो नमः, (४) ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यो नमः।

उक्त प्रकार से 'पीठ-पूजा' करके पुनर्वार ध्यान कर, हाथ में पुष्पांजलि ले, मूलमन्त्र से कल्पित-मूर्ति, में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी का आह्वान करें—

"ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वां सुस्थिरा भव॥"

इस मन्त्र का उच्चारण करके **मूलमन्त्र का** उच्चारण करते हुए, निम्न लिखित वाक्य कहें—

"काली देवि इहावह **इहावह इह** तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निहिता भव॥"

उक्त वाक्य का उच्चारण करते हुए देवी का आह्वान करें, फिर 'हुँ' से अवगुण्ठन, अङ्गन्यास मन्त्र से सकलीकरण करके धेनु मुद्रा से अमृतीकरण तथा सकलीकरण 'परमीकरण मुद्रा' से परमीकरण करें एवं "भूतिनी, आकर्षिणी, योनि" मुद्राओं को प्रदर्शित करते हुए, 'प्राण-प्रतिष्ठा' कर, मूलमन्त्र से पद्यादि उपचारों द्वारा पूजन करें। पूजन क्रम इस प्रकार है—

पूजन-क्रम

सर्व प्रथम मूल मन्त्र का उच्चारण करें। फिर—

एतत्पाद्यं काल्यै : नमः ।

एवमर्घ्यं स्वाहा ।

इदमाचमनीयं स्वधा ।

स्नानीयं निवेदयामि ।

पुनराचमनीयं स्वधा ।

एष गन्धो नमः ।

एतानि पुष्पाणि वौषट् ।

उक्त विधि से पाद्य, अर्घ्यं, आचमनीय, स्नानीय, पुनराचमनीय, गन्ध तथा पुष्प प्रदान करें।

फिर, मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए पाँच पुष्पांजलि प्रदान करें तथा निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए धूप दें—

"वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥"

उक्त मन्त्र के साथ मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुए **'एष धूपो नमः'** कह कर धूप देनी चाहिए। फिर निम्नलिखित मन्त्र के साथ मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'एष दीपो नमः' कहकर दीपक को प्रज्ज्वलित तथा प्रदर्शित करें। दीपक का मन्त्र इस प्रकार है—

"सुप्रकाशो महादीपः **सर्वतस्तिमिरापहः** ।
सवाह्याभ्यन्तरं ज्योति**र्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्** ॥"

इसके बाद—

"ॐ जयध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा ।"

इस मन्त्र द्वारा घण्टा का पूजन करके उसे **बांये हाथ** से बजाते रहें तथा नीचा मुख करके धूप दें तथा दीपक तक दृष्टि उठाकर 'दीपदान' करें। फिर मूल मन्त्र से तीन नैवेद्य प्रदान कर पुष्पांजलियां देकर नैवेद्य प्रदान करें।

इसके बाद 'आवरण पूजा' करें।

आवरण-पूजा

सबसे पहले **"श्री काली देवि आवरणं ते पूजयामि"**। इस वाक्य का उच्चारण करते हुए, देवी की आज्ञा लेकर पद्म केशरों में आग्नेयादि कोणों के क्रम से षडङ्ग पूजा करें। यथा—

आग्नेय कोण में—**ॐ ह्रां हृदयाय नमः।**
ईशान कोण में—**ॐ ह्रीं शिर से स्वाहा।**
नैऋर्त्य कोण में - **ॐ ह्रू शिखायै वषट्।**
वायव्य कोण में—**ॐ ह्रैं कवचाय हुँ।**
अग्रभाग में—**ॐ ह्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।**
चारों दिशाओं में—**ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।**

कहकर सर्वत्र 'ॐ: नमः' कहते हुए पूजन करें। फिर **'प्रथम-त्रिकोण' में—**

"ॐ काल्यै नमः। ॐ कपालिन्यै नमः। ॐ कुल्वायै नमः। ॐ कुरुकुल्वायै नमः। ॐ विरोधिन्यै नमः। ॐ विप्रचित्तायै नमः।"

कहकर, द्वितीय त्रिकोण में—

"ॐ उग्रायै नमः। ॐ उग्रप्रभायैनमः। ॐ दीप्तायै नमः।"

कहकर, तृतीय, त्रिकोण में—

'ॐ नीलायै नमः। ॐ घनायै नमः। ॐ वलाकायै नमः।"

'कहकर, चतुर्थ त्रिकोण में—

"ॐ मात्रायै नमः। ॐ मुद्रायै नमः। ॐ मितायै नमः।"

कहकर, पूजन करें। पूजन से पूर्व निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान मन्त्रः

सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमाला विभूषिताः।
कर्तरी वामहस्तेन धारयन्त्यः शुचिस्मिताः॥
दिगम्बरा हसन्मुख्यः स्व-स्ववाहन भूषिताः॥

भावार्थ—सभी देवियाँ श्यामवर्णा हैं। सबके हाथों में असि (तलवार), गले में मुण्डमाला, बाँये हाथ में कैंची तथा मुख पर मन्द मुस्कान सुशोभित है। सभी दिगम्बरा हैं और सभी हँसती हुईं अपने-अपने वाहनों पर विराज रही हैं।

ध्यानोपरान्त यन्त्र के अष्टदलों में पूर्वादिक्रम से—

ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ नारायण्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः।"

कहते हुए पञ्चोपचारों से पूजा करें।

भैरव-पूजन

फिर पद्मदलों के अग्र भाग में निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए भैरव-पूजन करे—

ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः।
ॐ रुरु भैरवाय नमः।
ॐ चण्ड भैरवाय नमः।
ॐ क्रोध भैरवाय नमः।
ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः।
ॐ कपालि भैरवाय नमः।
ॐ भीषण भैरवाय नमः।
ॐ संहार भैरवाय नमः।

कहते हुए पूजा कर, मूलमन्त्र से तीन पुष्पाञ्जलियाँ देकर देवी के दाँई ओर महाकाल भैरव का निम्नानुसार ध्यान करें—

महाकालं यजेद्देव्यां दक्षिणे धूम्रवर्णकम्।
बिभ्रतं दण्डखटवाङ्गौ दंष्ट्रा भीममुखं शिशुम्॥
व्याघ्रचर्मावृत कटिं तुन्दिलं रक्तवाससम्।
त्रिनेत्रमूर्ध्वकेशं च मुण्डमाला विभूषितम्॥
जटाभार लसच्चन्द्रखण्डमुग्रं ज्वलन्निभम्॥

भावार्थ—देवी के दक्षिण भाग में धूम्र वर्ण महाकाल का पूजन करें। वे दण्ड तथा खट्वाङ्ग धारण किए हैं। भयानक दाँतों के कारण वे भीषण मुख

वाले हैं। वे कटि में व्याघ्रचर्म पहने हैं। उनका उदर स्थूल है। वे रक्तवर्ण के वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके तीन नेत्र है। केश ऊपर को उठे हैं। गले में मुण्ड-माला सुशोभित है। उनके मस्तक पर जटाएँ तथा अर्द्धचन्द्र प्रकाशित है। वे उग्रस्वरूप वाले तथा अग्नि के समान प्रज्ज्वलित आभा वाले हैं।"

उक्त विधि से ध्यानोपरान्त—

"हूं क्ष्रौं यां रां लां वां आं क्रों महाकाल भैरव सर्व विघ्नान् नाशय नाशय ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।"

कहते हुए पाद्य आदि उपचारों द्वारा यथाविधि पूजन कर, तीन बार तर्पण करके, मूलमन्त्र द्वारा गन्धादि पंचोपचारो से देवी का पूजन करें। फिर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए देवी की अस्त्रपूजा करनी चाहिए—

देवी-अस्त्र-पूजा

देवी के बाँये ऊपरी हाथ में—**ॐ खड्गाय नमः।**
देवी के बाँये निचले हाथ में—**ॐ मुण्डाय नमः।**
देवी के दाँये ऊपरी हाथ में –**ॐ अभयाय नमः।**
देवी के दाँये निचले हाथ में—**ॐ वराय नमः।**

जप-समर्पण

उक्त विधि से अस्त्र-पूजा कर देवी का ध्यान करते हुए यथाशक्ति मूल-मन्त्र का जप करें, तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए जप का समर्पण करें—

"ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं ग्रहाण्यस्मत्कृतंजपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरिः॥"

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी के बांये हाथ में जप का समर्पण करें।

टिप्पणी—जप का समर्पण करते समय जिह्वा को कर्पूर युक्त कर लेना चाहिए। विशेषत 'काम्य-जप' में ऐसा करना अवश्यक है।

जप-समर्पण हेतु सर्वप्रथम मुख में कर्पूर रख कर **'काली कर्पूर स्तवः'** का पाठ करें। फिर प्रदक्षिणा एवं अष्टाङ्ग प्रणाम करते हुए **'जगन्मङ्गल कवच'** का पाठ करें (स्तव तथा कवच इस ग्रंथ के अन्तिम भाग में दिए गए हैं)।

विसर्जन

इसके बाद देवी के अङ्गों में आवरण देवताओं **को विलीन** होता हुआ अनुभव करते हुए ध्यान करें तथा 'संहार मुद्रा' द्वारा

"ॐ काली देवि क्षमास्व ।"

कहते हुए 'विसर्जन' करें तथा पुष्प हाथ में लेकर देवी के तेज को निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने हृदय में आरोपित करें—

"ॐ उत्तेरशिखरे देवि भूम्यां पर्वतवासिनि ।
ब्रह्मयोनि समुत्पन्ने गच्छ देवि ममान्तरम् ।।"

इसके बाद निवेदित किए हुए नैवेद्य का कुछ अश लेकर—

"ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिन्यै नमः ।।"

कहते हुए उसे ईशान कोण में प्रदान करें तथा शेष अंश अपने प्रियजनों को देकर, थोड़ा सा प्रसाद स्वयं भी ग्रहण करें, फिर देवी का चरणामृत पान कर, मस्तक पर निर्माल्य धारण करें तथा मन्त्र पर लगे हुए चन्दन को अपने बाँये हाथ में लेकर उसमें से दाँये हाथ की कनिष्ठिका अंगुली द्वारा माया, बीज 'ह्रीं' लिखकर, उसी से अपने ललाट पर तिलक लगायें। तिलक लगाते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ यं यं स्पृशामि पादाभ्यां यो मां पश्यति चक्षुषा ।
स एव दासतां यातु राजानो दुष्ट दस्यवः ।।"

इसके बाद मूल-मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित पुष्प धारण करें।

टिप्पणी—जो साधक उक्त विधि से एक वर्ष तक देवी की उपासना करता है, वह समस्त सिद्धियों से युक्त होकर, भैरव के समान बन जाता है तथा तीनों लोकों को वशीभूत कर लेने में समर्थ होता है।

पुरश्चरण एवं जप-संख्या

१. 'काली तन्त्र' के अनुसार—इस मन्त्र के पुरश्चरण हेतु दो लाख की संख्या में जप करना चाहिए। साधक को पवित्र तथा हविष्याशी होकर दिन के समय एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना चाहिए तथा रात्रि के समय मुँह में ताम्बूल (पान) रखकर पुनः एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। 'कुमारी कल्प' के अनुसार रात्रि के समय जप शय्या पर बैठ कर करना चाहिए।

जप के बाद घृत द्वारा दशांश होम करना चाहिए।

'स्वतन्त्रतन्त्र' में भी पुरश्चरण की जप संख्या यही निर्दिष्ट की गई है।

२. 'नील सारस्वत तन्त्र' के अनुसार—इस मन्त्र के पुरश्चरण हेतु साधक को दिन में शुद्ध तथा हविष्याशी होकर एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा रात्रि में अशुद्ध भाव से एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए। तत्पश्चात् दशांश होम, तर्पण तथा अभिषेक करना चाहिए।

'विश्वसार तन्त्र' के अनुसार जप का दशांश 'होम', होम का दशांश 'तर्पण' तथा तर्पण का दशांश 'अभिषेक' करना चाहिए।

अभिषेक तथा तर्पण में 'तीर्थ--जल अथवा मधु और शर्करा मिश्रित जल का प्रयोग करना चाहिए।

अभिषेक की दशांश संख्या में ब्राह्मणों को हविष्यान्न पदार्थों का भोजन कराना चाहिए तथा अन्त में गुरुदेव को दक्षिणा से सन्तुष्ट कर पुरश्चरण को पूरा करना चाहिए।

रात्रि में जप के सम्बन्ध में विशेष नियम यह है कि रात्रि के द्वितीय प्रहर से आरम्भ कर तृतीय प्रहर तक ही जप करना चाहिये। रात्रि के अन्तिम प्रहर में जप नहीं करना चाहिये।

३. पूर्णानन्द के मत से उक्त मन्त्र का केवल एक लाख की संख्या में जप करने से ही पुरश्चरण हो जाता है। 'केत्कारी तन्त्र' के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को दिन में तथा शूद्र को रात्रि में होम करना चाहिये।

उक्त विधि से मन्त्र को सिद्ध करने वाले साधक की समस्त मनोभिलाषाएँ पूर्ण होती हैं।

काली-मन्त्र-दीपनी

किसी भी काली मन्त्र का जप करते समय जप के आरम्भ में तथा जपके अन्त में सात-सात बार--

"क्रीं' क्रीं"

इन दोनों बीजों का जप करने से मन्त्र प्रदीप्त हो उठता है।

५

त्रिविंशत्यक्षर दक्षिणकाली मन्त्र-प्रयोग

तेईस अक्षरों वाले दक्षिणकाली मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है—

मन्त्र

"ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

टिप्पणी—इस मन्त्र के आरम्भ से 'ॐ' निकाल देने पर यह 'बाईस अक्षर का मन्त्र रह जाता है। तेईस तथा बाईस अक्षरों वाले दोनों मन्त्रों का विधान एक-सा ही है।

विधान

इसका विधान निम्नानुसार है। सर्व प्रथम निम्नलिखित विनियोग-वाक्य का उच्चारण करें—

विनियोग

"अस्य श्री दक्षिणकाली मन्त्रस्य भैरव ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। दक्षिण कालिके देवता। क्रीं बीजम्। हूं शक्तिः। क्रीं कीलकम्। ममाभीष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः।"

उक्त 'विनियोग-वाक्य' का उच्चारण करने के पश्चात् आगे लिखे अनुसार 'ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादि षडङ्गन्यास' आदि कृत्य करने चाहिये—सर्व प्रथम 'ऋष्यादिन्यास' करें।

ऋष्यादि न्यासः

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।

उष्णिक् छन्द से नमः मुखे।

दक्षिणकालिका देवतायै नमः हृदि ।

क्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।

हू्ं शक्तये नमः पादयोः ।

क्रीं कीलकाय नमः नाभौ ।

विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

(इति ऋष्यादि न्यासः)

'ऋष्यादि न्यास' के पश्चात् निम्नानुसार 'करन्यास' करना चाहिये'

करन्यास

ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ क्रं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ क्रौं कनिष्ठिकांभ्यां नमः ।

ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

(इति करन्यासः)

'करन्यास' के पश्चात् निम्नानुसार 'हृदयादि षडङ्गन्यास' करना चाहिये ।

हृदयादि षडङ्गन्यासः

ॐ क्रां हृदयाय नमः ।

ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ॥

ॐ क्रूं शिखायै वषट् ।

ॐ क्रैं कवचाय हुम् ।

ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।

(इतिः हृदयादि षडङ्गन्यासः)

'हृदयादि षडङ्गन्यास' के पश्चात् निम्नानुसार 'सर्वाङ्गन्यास' करना चाहिये ।

सर्वाङ्गन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमो हृदि ।

ॐ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमो दक्ष भुजे ।

ॐ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमो वाम भुजे ।
ॐ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमो दक्ष पादे ।
ॐ मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं नमो वाम पादे ।
(इति विन्यसेत्)

ॐ क्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।
ॐ क्रीं नमः भ्रू मध्ये ।
ॐ क्रीं नमः ललाटे ।
ॐ ह्रीं नमः नाभौ ।
ॐ ह्रीं नमः गुह्ये ।
ॐ हूं नमः वक्त्रे ।
ॐ हूं नमः गुर्वङ्गे ।
इसके बाद मूल मन्त्र से ६' अथवा ५ बार 'व्यापक न्यास' करें ।
(इति न्यासम्)

'न्यास' करने के उपरान्त निम्नानुसार ध्यान करना चाहिये विभिन्न तन्त्रों में ध्यान के विभिन्न मन्त्रों का उल्लेख हुआ है । यहाँ 'काली तन्त्रोक्त' अन्योक्त तथा हंसतन्त्रोक्त ध्यान-मन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है । इन सभी मन्त्रों का मन-ही-मन उच्चारण करते हुये भगवती कालिका का ध्यान करना चाहिये ।

ध्यान मन्त्र

ॐ सद्यश्छिन्न शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं
घोरास्यां शिरसि स्रजा सुरुचिरान्मुन्युक्त केशावलिम् ।
सृक्कासृक्प्रवहां श्मशान निलयां श्रुत्योः शवालंकृति
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम् ।।१।।
(इति मन्त्रमहोदधि वर्णितं ध्यान)

ॐ शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभय करां शिवाम् ।।१।।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालय वासिनीम् ।।२।।
(इति कालीतन्त्रोक्त ध्यानम्)

करालं वदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषिताम् ॥१॥
सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम्।
अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम् ॥२॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम्।
कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिर चर्चिताम् ॥३॥
कर्णावतंसतानीतशव युग्मभयानकाम्।
घोर दंष्ट्रा करालास्यां पीनोन्नत पयोधराम् ॥४॥
शवानां कर संघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम्।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधाराविस्फुरिताननाम् ॥५॥
घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्।
दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तलम्बकचोच्चयाम् ॥६॥
शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम्।
शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ॥७॥
महाकालेन सार्द्धोद्र्ध्वमुपविष्टरतातुराम् ।※
सुखप्रसन्नवदना स्मेरानन सरोरुहाम् ॥८॥

(इति अन्यच्चध्यानम्)

नमामि दक्षिणामूर्तिं कालिकां परभैरवीम्।
भिन्नाञ्जनचयप्रख्यां प्रवीरशवसंस्थिताम् ॥१॥
गलच्छोणितधाराभिः स्मेरानन सरोरुहाम्।
पीनोन्नतकुचद्वन्द्वां पीनवक्षोनितम्बिनीम् ॥२॥
दक्षिणां मुक्तकेशालीं दिगम्बर विनोदिनीम्।
महाकाल शवा विष्टां स्मेरानन्दोपरिस्थिताम् ॥३॥

※ मतान्तर में यह पाठ निम्नानुसार मिलता है—
"महाकालेन च समं विपरीत रतातुराम्।"

मुखसान्द्रस्मितामोद मोदिनीं मदविह्वलाम् ।
आरक्तमुखसान्द्राभिर्नेत्रालीभिर्विराजिताम् ॥४॥
शवद्वय कृतोत्तंसां सिन्दूर तिलकोज्ज्वलाम् ।
पञ्चाशन्मुण्ड घटितन्माला शोणित लोहिताम् ॥५॥
नानामणिविशोभाढ्य नानालङ्कारशोभिताम् ।
शवास्थिकृत केयूरशंखकङ्कणमण्डिताम् ॥६॥
शववक्षः समारूढां लेलिहानां शवं क्वचित् ।
शवमांसकृतग्रासां साट्टहासं मुहुर्मुहुः ॥७॥
खड्गमुण्डधरां षामे सव्येऽभयवर प्रदाम् ।
दन्तुरां च महारौद्रीं चण्डनादाति भीषणाम् ॥८॥
शिवाभिर्घोररूपाभिर्वेष्टितां भयनाशनीम् ।
माभैर्मास्स्वभक्तेषु जल्पतीं घोरनिःस्वनैः ॥९॥
यूर्याङ्कमिच्छथ ब्रूत ददामीति प्रभाषिणीम् ॥१०॥

(इति हंस तन्त्रोक्त ध्यानम्)

उक्त विधि से श्मशानालय वासिनी भगवती दक्षिण कालिका का ध्यान करके, मानसोपचार से पूजन करे। तत्पश्चात् पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में पद्धति-मार्ग से मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताओं को स्थापित कर

"ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ।"

इस मन्त्र से पीठ-देवताओं का पूजन करने के बाद निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुये पूर्वादि क्रम से नवपीठ-शक्तियों का पूजन करे—

अथ पीठशक्ति पूजनम्

ॐ जयायै नमः ।
ॐ विजयायै नमः ।
ॐ अजितायै नमः ।
ॐ अपराजितायै-नमः ।
ॐ नित्यायै नमः ।
ॐ विलासिन्यै नमः ।

ॐ दोग्ध्र्यै नमः ।

ॐ अघोरायै नमः ।

(मध्य में)

ॐ मङ्गलायै नमः ।

(इति पीठ-शक्ति पूजनम्)

इसके पश्चात् स्वर्ण आदि से निर्मित भगवती के यन्त्र (दक्षिण काली-पूजन का यन्त्र आगे प्रदर्शित है, इसे धातुपत्र पर बनवालें) अथवा मूर्ति को ताँबे के पात्र में रखकर, उसे घृत द्वारा अभ्यङ्ग-स्नान करायें, फिर उसके ऊपर दुग्ध-धारा तथा जल-धारा देकर स्वच्छ वस्त्र में लपेटें तथा

''ॐ ह्रीं कालिका योग पीठात्मने नमः ।''

इस मन्त्र द्वारा पुष्पादि आसन देकर, पीठ के मध्यभाग में स्थापित करें। फिर पद्धति-मार्ग से प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र द्वारा मूर्ति की कल्पना करते हुए पाद्य से पुष्पांजलि पर्यन्त विभिन्न उपचारों द्वारा पूजा कर, देवी की आज्ञा लेकर, निम्नानुसार 'आवरणपूजा' करें—

आवरण-पूजा

सर्वप्रथम पुष्पांजलि हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

''ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये ।
अनुज्ञां दक्षिणे देहि परिवारार्च्यनाय मे ॥''

उक्त मन्त्र का पाठ करने के उपरान्त—

'पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।'

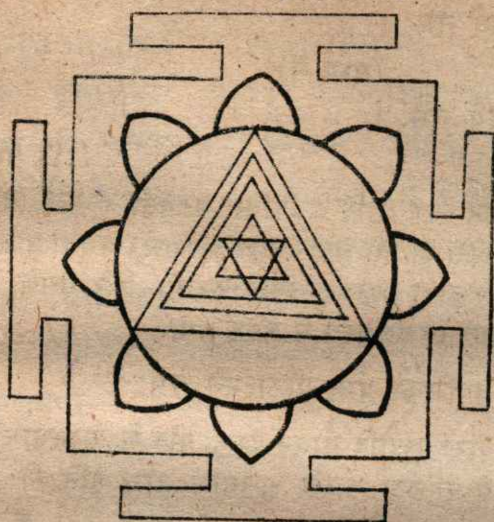
इस वाक्य का उच्चारण करें। फिर नीचे लिखे अनुसार आवरण-पूजा आरम्भ करें—

अथ प्रथमावरण पूजा

षट्कोण केसरों में, आग्नेयादि चारों दिशाओं में तथा मध्य दिशा में षडङ्गों की क्रमशः पूजा आरम्भ करें।

प्रथम आवरण की पूजा आरम्भ करते समय निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करना चाहिए—

दक्षिण काली पूजन यन्त्रम्



चित्र—६

ध्यान-मन्त्र:

"तुषारस्फटिकश्याम नीलकृष्णारुणास्तथा ।
वरदाभयधारिण्य: प्रधान तनव: स्त्रिय: ।।"

ध्यानोपरान्त निम्नानुसार पूजा प्रारम्भ करें—

(१) 'ॐ क्रां हृदयाय नम:
हृदय देवता: श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।
(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

(२) ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा
शिरोदेवता: श्रीपादुकां···

(३) ॐ क्रू शिखायै वजट्
शिखा देवता: श्रीपादुकां···

(४) ॐ क्रैं कवचाय हुँ
कवच देवता: श्री पादुकां···

(५) ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्
नेत्र देवता: श्रीपादुकां···

(६) ॐ क्र: अस्त्राय फट्

अस्त्र देवता: श्रीपादुकां···

इस प्रकार षडङ्गों की पूजा करने के उपरान्त हाथ में पुष्पाञ्जलि लेकर पहले मूल-मन्त्र का फिर निम्नलिखित **प्रार्थना-मन्त्र का उच्चारण** करें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि **शरणागतवत्सले** ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं **प्रथमावरणार्चनम्** ॥"

यह कहकर, पुष्पांजलि दे, **विशेषार्घ्यं से जल-बिन्दु डालकर 'पूजिता-स्तर्पिता: सन्तु'** कहें ।

॥ इति प्रथमावरणम् ॥

अथ द्वितीयावरण पूजा

इसके पश्चात् पूज्य तथा पूजक के **मध्य पूर्वदिशा को** अन्तराल मानकर, तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके, प्राची-क्रम से षट्कोणों में काली आदि का पूजन करें। द्वितीयावरण-पूजा में सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें—

ध्यान मन्त्र

"ॐ सर्वा: श्यामा असिकरा मुण्डमाला विभूषिता: ।
तर्जनीं वामहस्तेन धारयंत्यश्च सुस्मिता: ॥"

॥ इतिध्यानम् ॥

ध्यानोपरान्त निम्नानुसार पूजा प्रारभ करें—

(१) ॐ काल्यै: नम:

काली श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम: ।

(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

(२) ॐ कपालिन्यै नम:

कपालिनी श्रीपादुकां···

(३) ॐ कुल्लायै नम:

कुल्ला श्रीपादुकां···

(४) ॐ कुरुकुल्लायै नम:

कुरुकुल्ला श्रीपादुकां···

(५) ॐ विरोधिन्यै नमः

विरोधिनी श्री पादुकां···

(६) ॐ विप्रचित्तायै नमः

विप्रचित्ता श्री पादुकां···

इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त हाथ में पुष्पांजलि लेकर पहले मूल-मन्त्र का फिर निम्नलिखित प्रार्थना मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।।"

यह कहकर, पुष्पांजलि दे, विशेषार्घ्य से जलविन्दु छिड़ककर, 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' कहें।

।। इति द्वितीयवरणम् ।।

अथ तृतीयावरण पूजा

इसके पश्चात् यन्त्र के तीन कोणों में 'उग्रा' आदि नौ देवियों की पूजा निम्नलिखित क्रम से करें—

प्रथम त्रिकोण के सम्मुख—

(१) ॐ उग्रायै नमः

उग्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

प्रथम त्रिकोण के बाँई ओर—

(२) ॐ उग्रप्रभायै नमः

उग्रप्रभा श्री पादुकां···

प्रथम त्रिकोण के दाँई ओर—

(३) ॐ दीप्तायै नमः

दीप्ता श्री पादुकां···

द्वितीय त्रिकोण के सम्मुख—

(४) ॐ नीलायै नमः

नीला श्री पादुकां···

द्वितीय त्रिकोण के बाँई ओर—

(५) ॐ घनायै नमः
घना श्री पादुकां…

द्वितीय त्रिकोण के दाँई ओर—

(६) ॐ बलाकायै नमः
बलाका श्री पादुकां…

तृतीय त्रिकोण के सम्मुख—

(७) ॐ मात्रायै नमः
मात्रा श्री पादुकां…

तृतीय त्रिकोण के बाँई ओर—

(८) ॐ मुद्रायै नमः
मुद्रा श्री पादुकां…

तृतीय त्रिकोण के दाँई ओर—

(९) ॐ मित्रायै नमः
मित्रा श्री पादुकां…

इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त हाथ में पुष्पांजलि लेकर पहले मूलमन्त्र का, फिर निम्नलिखित प्रार्थना-मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीया वरणार्चनम् ॥"

यह कहकर, पुष्पांजलि दे, **'पूजितास्तर्पिताः सन्तु'** कहें ।

॥ इति तृतीयावरणम् ॥

अथ चतुर्थावरण पूजा

इसके पश्चात् अष्टदल में पूर्वादि क्रम से आठ शक्तियों का पूजन प्रारंभ करें । सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से ध्यान करें—

ध्यान मन्त्र

दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रं महाभयम् ।
बिभ्रती कनकच्छाया ब्राह्मकृष्णा जिनोज्ज्वला ॥१॥

शूलं परश्वधङ्क्षुद्रदुन्दुभीं नृकरोटिकाम् ।
वहंती हिमसंकाशा ध्येया माहेश्वरी शुभा ॥२॥
अंकुशं दण्ड खट्वाङ्गौ पाशं च दधती करैः ।
बन्धूक पुष्पसंकाशा कुमारी कामदायिनी ॥३॥
चक्रं घण्टां कपालं च शंखं च दधती करैः ।
तमालश्यामला ध्येया वैष्णवी विभ्रमोज्ज्वला ॥४॥
मुशलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ।
करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः ॥५॥
अंकुशं तोमरं विद्युत्कुलिशं बिभ्रती करैः ।
इन्द्र नीलनिभेन्द्राणी ध्येया सर्वासमृद्धिदा ॥६॥
शूलं कृपाणं नृशिरः कपालं दधती करैः ।
मुण्डस्रङ्मण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्त विग्रहा ॥७॥
अक्षस्रजं बीजपूरं कपालं दधती करैः ।
वहन्ती हेमसङ्काशा मोहलक्ष्मीस्समीरिता ॥८॥

ध्यानोपरान्त निम्नानुसार पूजा प्रारंभ करें—

(१) ॐ ब्राह्म्यै नमः
ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

(२) ॐ नारायण्यै नमः
नारायणी श्रीपादुकां···

(३) ॐ माहेश्वर्य्यै नमः
माहेश्वरी श्रीपादुकां·····

(४) ॐ चामुण्डायै नमः
चामुण्डा श्री पादुकां···

(५) ॐ कौमार्यै नमः
कौमारी श्रीपादुकां··

(६) ॐ अपराजितायै नमः
अपराजिता श्रीपादुका···

(७) ॐ वाराह्यै नमः
वाराही श्रीपादुकां···

(८) ॐ नारसिंह्यै नमः
नारसिंही श्रीपादुकां···

इस प्रकार पूजन करने के उपरान्त हाथ में पुष्पांजलि लेकर, पहले मूल-मन्त्र का, फिर निम्नलिखित प्रार्थना-मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥"

यह कहकर, पुष्पांजलि दे, 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' कहें।

॥ इति चतुर्थावरणम् ॥

अथ भैरव-पूजनम्

इसके बाद भूपुर के भीतर आठों दिशाओं में पूर्वादिक्रम से आठ भैरवों का पूजन करें। सर्वप्रथम निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान मन्त्र

"भीषणास्यं त्रिनयनमर्द्धचन्द्रं विभूषितम्।
स्फटिकाभं कंकणादि भूषाशत समायुतम् ॥१॥
अष्ट वर्षं वयस्कं च कुन्तलोल्लसितं भजे।
धारयन्तं दण्ड शूले भैरव्यादिसमायुतम् ॥२॥

इस ध्यान के बाद निम्नानुसार पूजा प्रारम्भ करें—

(१) ॐ ऐं ह्रीं अं असिताङ्ग भैरवाय नमः
असिताङ्ग भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तपर्यामि नमः।

(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

(२) ॐ ऐं ह्रीं इं रुरु भैरवायनमः
रुरु भैरव श्रीपादुकां···

(३) ॐ ऐं ह्रीं उं चण्डभैरवाय नमः
चण्डभैरव श्रीपादुकां.....

(४) ॐ ऐं ह्रीं ॠं क्रोध भैरवायनमः
क्रोधभैरव श्रीपादुकां.....

(५) ॐ ऐं ह्रीं लृं उन्मत्त भैरवाय नमः
उन्मत्त भैरव श्रीपादुकां.....

(६) ॐ ऐं ह्रीं एं कपालि भैरवाय नमः
कपालिभैरव श्रीपादुकां.....

(७) ॐ ऐं ह्रीं ओं भीषण भैरवाय नमः
भीषण भैरव श्रीपादुकां.....

(८) ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः
संहारभैरव श्रीपादुकां......

॥ इति भैरव पूजनम् ॥

अथ भैरवीपूजनम्

इसके बाद भैरवों के समीप ही आठ भैरवियों का पूजन करें। सर्वप्रथम निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यान मन्त्रः

भावयेच्च महादेवी चन्द्रकोटियुतप्रभाम् ।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥१॥
अष्टादश भुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् ।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्मुखीम् ॥२॥

इस ध्यान के बाद निम्नानुसार पूजा प्रारम्भ करें—

(१) ॐ श्री भैरव्यै नमः
श्री भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

(इस वाक्य को प्रत्येक मन्त्र के बाद दुहराया जाएगा)

(२) ॐ मं महाभैरव्यै नमः
महाभैरवी श्रीपादुकां.....

(३) ॐ सिं सिंह भैरव्यै नमः
सिंह भैरवी श्रीपादुकां.....

(४) ॐ धूं धूम्र भैरव्यै नमः
धूम्रभैरवी श्रीपादुकां.....

(५) ॐ भीं भीम भैरव्यै नमः
भीम भैरवी श्रीपादुकां.....

(६) ॐ उं उन्मत्त भैरव्यै नमः
उन्मत्त भैरवी श्रीपादुकां.....

(७) ॐ वं वशीकरण भैरव्यै नमः
वशीकरण भैरवी श्रीपादुकां.....

(८) ॐ मों मोहन भैरव्यै नमः
मोहन भैरवी श्री पादुकां.....

।। इति भैरवी पूजनम् ।।

इसके उपरान्त भूपुर से बाहर इन्द्र आदि दश दिक्पालों तथा वज्र आदि आयुधों का पद्धति-मार्गानुसार पूजन करें। फिर धूपदान से लेकर नमस्कार तक पूजा सम्पन्न करने के पश्चात् मन्त्र का जप करना चाहिए। (सामान्य पूजा-पद्धति का उल्लेख पिछले प्रकरण में किया जा चुका है, तदनुसार ही पूजा करें)।

मन्त्र-सिद्धि एवं प्रयोग-विधि

पूजनोपरान्त मन्त्र का एक लाख (१०००००) की संख्या में जप करना चाहिए। जप के बाद कनेर के फूलों से दशांश अर्थात् १०००० आहुतियाँ देकर हवन करना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

उक्त विधि से पूजिता काली साधकों के लिए सिद्धि प्रदायिनी होती है। फिर, साधक महाभैरव द्वारा उक्त प्रयोगों को करें।

विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु मन्त्र की प्रयोग विधियां तथा फल निम्नलिखित है—

(१) जो साधक स्वयं के लिए अथवा दूसरों के लिए लक्ष्मी-प्रदान अथवा प्रसिद्धि-प्रदान हेतु सुन्दरी-स्त्री के मदनावास (गुह्याङ्ग) को देखता हुआ उक्त मन्त्र का १०,००० (दस सहस्र) की संख्या में मन्त्र-जप करता है, वह वृहस्पति-तुल्य हो जाता है।

(२) जो साधक नग्न होकर, बालों को खुला रख कर, श्मशान में स्थित हो, अर्द्धरात्रि के समय १०,००० (दस सहस्र) की संख्या में मन्त्र जप करता है, उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

(३) जो साधक श्मशान में शव (मृत मनुष्य) के हृदय पर नग्न बैठकर, अपने वीर्य से युक्त एक सहस्र मदार-पुष्पों से भक्ति पूर्वक जप करता हुआ एक-एक पुष्प से देवी की पूजा करता है, वह पृथ्वीपति होने का सौभाग्य प्राप्त करता है।

(४) जो साधक रजःस्राव करती हुई नारी-भग का ध्यान करता हुआ १०,००० (दस सहस्र) की संख्या में मन्त्र का जप करता है, वह सुन्दर कवित्व-शक्ति से संसार को विमोहित कर लेता है।

(५) जो साधक शव के हृदय पर, आठ आरे वाले महापीठ पर स्थित शिवजी के साथ मदन-संग्राम (सहवास) करती हुई तथा मुस्कुराती हुई देवी का ध्यान करते हुए, स्वयं भी रमण-क्रिया (सहवास) में प्रवृत्त रहते हुए १,००० (एक सहस्र) की संख्या में मन्त्र का जप करता है, वह शंकर के समान हो जाता है।

(६) जो साधक हविष्यान्न सेवन करता हुआ, दिन के समय, देवी के ध्यान में मग्न होकर जप करता है, वह विद्या, लक्ष्मी, यश तथा पुत्रों से युक्त होकर चिरकाल तक सुखी बना रहता है।

(७) जो साधक रात्रि के समय मैथुन में आसक्त हो, इस मन्त्र का १,००००० (एक लाख) की संख्या में जप करता है, वह राजा होता है।

(८) जो साधक लालकमलों से होम करते हुए इस मन्त्र का १,००००० (एक लाख) की संख्या में जप करता है वह कुवेर को भी जीत लेता है। जो बेल के पत्तों से हवन करते हुए जप करता है, वह राज्य पाता है। जो लालपुष्पों से हवन करते हुए जप करता है, उसे वशीकरण का लाभ होता है। जो भैंसे आदि पशुओं के रक्त से कालिका का तर्पण करके जप करता है, उसके हाथ में सभी सिद्धियाँ शीघ्र आ जाती हैं।

(६) जो मन्त्रवेत्ता शव के ऊपर बैठकर एक लाख की संख्या में जप करता है, उसका मन्त्र तत्काल सिद्ध हो जाता है तथा समस्त अभीष्ट फल प्राप्त होते हैं।

जो व्यक्ति भगवती कालिका की उपासना करता है, उसके सम्बन्ध में यह समझना चाहिए कि उस शरीर धारी ने अश्वमेधादि यज्ञों को पूर्ण कर लिया है, दान दिया है तथा तपस्या की है। जो मनुष्य सदैव काली की पूजा करता है, उसने मानो ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गौरी, लक्ष्मी, गणपति, सूर्य आदि सभी देवताओं की पूजा करली है।

।। इति त्रिविंशत्यक्षर काली मन्त्र प्रयोगः ।।

६

दक्षिणकालिका त्रयोविंशति वर्ण मन्त्र संक्षिप्त-साधन-विधि

दक्षिण कालिका के तेईस अक्षरों वाले एक मन्त्र की विस्तृत साधन विधि का उल्लेख पिछले प्रकरण में किया जा चुका है।

इस प्रकरण में दक्षिणकालिका के तेईस वर्णों वाले ही एक अन्य मन्त्र की संक्षिप्त साधन-विधि का उल्लेख किया जा रहा है। पूर्वोक्त मन्त्र में और इसमें इतना ही अन्तर है कि इस मन्त्र के आदि में प्रणव (ॐ) नहीं है तथा प्रथमावृत्ति में 'क्रीं' का प्रयोग तीन बार हुआ है।

यह मन्त्र भी उसी मन्त्र के समान फल दायक है। जो साधक पूर्व मन्त्र की विशिष्ट पूजा पद्धति का प्रयोग करने में असमर्थ हों, उन्हें इस मन्त्र को यहाँ वर्णित संक्षिप्त साधन-विधि द्वारा सिद्ध करके लाभान्वित होना चाहिए।

मन्त्र

"क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।"

उक्त मन्त्र का पूजन-यन्त्र वही है, जिसका उल्लेख पिछले मन्त्र में किया जा चुका है।

ध्यान

इस मन्त्र का ध्यान निम्नलिखित है—

"शवारूढा महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजं खड्ग मुण्ड वराभय करां शिवाम्॥
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वान्दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥

भावार्थ--देवी शव पर आरुढ़, महाभयंकर रूप वाली, घोर दाँतों वाली, हास्यमुखी, अपनी चार भुजाओं में खड्ग, मुण्ड, वर तथा अभयमुद्रा को धारण करने वाली, कल्याणदायिनी, मुण्डमाला धारिणी, लपलपाती हुई जीभ वाली, दिगम्बरा तथा श्मशान में निवास करने वाली है।

संक्षिप्त पूजा-विधि

सर्वप्रथम अपने बाँई ओर चतुष्कोण का निर्माण करें। फिर—

'ॐ ह्रः सामान्यार्घ्य स्थापयामि।"

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए वहाँ अर्घ्यपात्र स्थापित करें, फिर **'नमः'** शब्द का उच्चारण करते हुए उसे जल-पूरित कर, सूर्यमण्डल अंकुश मुद्रा द्वारा उसमें निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीर्थों का आवाहन करें—

"ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्म्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिकुरु॥
ॐ ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानितेरवै।
तेन सत्येन मे देव तीर्थन्देहि दिवाकर॥"

इसके पश्चात् **"ॐ गङ्गादि सकल तीर्थेभ्यो नमः** कह कर पुष्प अक्षतादि से पूजन कर, निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सूर्य, अग्नि तथा चन्द्र इन तीनों मण्डलों का पूजन करें—

"ॐ अर्कमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः।
ॐ वह्नि मण्डलाय दश कलात्मने नमः।
ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः।"

इसके पश्चात् **"ॐ षडङ्गेभ्यो नमः"** कहकर षडङ्ग से पूजन, अस्त्र से संरक्षण तथा कवच से अवगुण्ठन करके **'वम्'** कह कर, धेनु मुद्रा द्वारा अमृतीकरण कर तथा मत्स्यमुद्रा द्वारा आच्छादित कर दस बार 'प्रणव' (ॐकार) का उच्चारण करें। फिर क्रमशः शंख मुद्रा, धेनुमुद्रा एवं योनिमुद्रा प्रदर्शित करें।

इसके पश्चात् कुंकुम केशर तथा चन्दन आदि से भोजपत्र के ऊपर यन्त्र लिखकर निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास' करे—

ऋष्यादि न्यास

"शिरसि भैरवाय ऋषये नमः।
मुखे उष्णिक्छन्दसे नमः।

हृदये ॐ दक्षिणकालिकायै नमः ।
गुह्ये क्रीं बीजाय नमः ।
पादयोः हूं शक्तये नमः ।
सर्व्वाङ्गे क्रीं कीलकाय नमः ।"

इसके पश्चात् निम्नानुसार षडङ्गन्यास करें—

षडङ्गन्यास

"क्रां हृदयाय नमः ।
क्रीं शिरसे स्वाहा ।
क्रूं शिखायै वषट् ।
क्रैं कवचाय हुम् ।
क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
क्रः अस्त्राय फट् ।

कहकर दिगबन्ध करें। फिर 'करन्यास' करें—

करन्यास

क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
क्रीं तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा ।
क्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।
क्रैं अनामिकाभ्यां हुम् ।
क्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

अन्य कर्त्तव्य

उक्त विधि से न्यास करके दस, सात अथवा पाँच बार 'व्यापक-न्यास' करना चाहिए। फिर चार, आठ अथवा सोलह बार मूल-मन्त्र का जप करते हुए पूरक, कुंभक तथा रेचक—इन तीनों प्राणायामों को करें। तत्पश्चात् भगवती काली का ध्यान करके दोनों हाथों में पुष्पांजलि लेकर, पूर्वोक्त रूप में देवी का ध्यान करते हुए उन्हें हृदय से नासिकाग्र भाग में लाकर, मूलमन्त्र का उच्चारण करने के पश्चात् निम्नलिखित वाक्य कहें—

'एह्येहि महादेवि पादुकाभ्यान्दयानिधे ।"

फिर अंजलि के पुष्पों की ओर मुँह करके अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते ।
यावत्त्वान्पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ।"

यह कहकर पुष्पों को यन्त्र के ऊपर छोड़ दें । फिर मूलमन्त्र का उच्चारण करने के बाद निम्नलिखित वाक्य से देवी का आह्वान करें—

"साङ्गे सायुधे सवाहने सावरणे सपरिवारे दक्षिण कालिके इहागच्छ ।"

यह कहकर 'आवाहन-मुद्रा के आवाहन करें तथा **'इहतिष्ठ'**—कहकर 'स्थापन मुद्रा' से स्थापित करें । तत्पश्चात् **'इहसन्निधेहि'**—कह कर 'सन्निधीकरण-मुद्रा' से सन्निधीकरण करें । फिर **'इह सन्निरुध्यस्व'**—कह कर 'सन्निरोधन मुद्रा' से सन्निरोधन करे । फिर **'इहसम्मुखी भव'**—कह कर 'सम्मुखीकरण-मुद्रा' से सम्मुखीकरण करें ।

इसके पश्चात् अस्त्र से संरक्षण करके **'हुम्'**—से अवगुण्ठित कर, **'वम्'** कहकर 'धेनु-मुद्रा' से अमृतीकरण कर, देवता का षडङ्गन्यास करके मूलमन्त्र द्वारा सकलीकरण कर, **'आं ह्रीं क्रों स्वाहा'** - इस मन्त्र को १२ बार जपकर, 'लेलिहान मुद्रा' द्वारा देवता की प्राण प्रतिष्ठा करें । इस हेतु निम्नलिखित वाक्य को हाथ बाँध कर पढ़ें—

"ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं दक्षिण कालिकायै वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्श्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखञ्चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ।"

फिर 'धेनु-मुद्रा' प्रदर्शित कर, मूलमन्त्र का उच्चारण करने के बाद निम्नलिखित वाक्य को बोलते हुए पाँच पुष्पांजलि प्रदान करें—

"एषपुष्पाञ्जलिस्साङ्गसायुध सवाहन सावरण सपरिवार दक्षिण कालिका देवतायै समर्पयामि नमः ।"

इसी प्रकार मूलमन्त्र के अन्त में निम्नलिखित वाक्यों का उच्चारण करते हुए क्रमशः (१) आचमनीय, (२) अर्घ्य, (३) मधुपर्क, (४) पुनराचमनीय, (५) स्नानीय, (६) रक्तचन्दन, (७) अक्षत, (८) पुष्प, (९) धूप, (१०) दीप तथा (११) नैवेद्य प्रदान करें । यथा—

'इदम्पाद्य मिदमाचमनीयम्, एवोऽर्घ्यः, एष मधुपर्कः, इदम्पुनराचमनीयं, इदंस्नानीयन्दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः, इदं-रक्तचन्दनानुलेपनम्, एते अक्षताः, इमानि पुष्पाणि दक्षिणकालिका देवतायै वौषट्, एषधूपः, एषदीप एतानि नैवेद्यानि कालिका देवतायै नमः ।"

उक्त विधि से संक्षिप्त-पूजा कर, जपमाला हाथ में लें। फिर किसी जल पूर्ण पात्र को अपने बाँई ओर स्थापित कर, मूलमन्त्र द्वारा उसमें से अर्घ्य के लिए जल छिड़क कर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ मातो माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
चातुर्व्वर्गस्त्वयिन्यस्त स्तस्मान्मे सिद्धिदाभव॥"

इसके पश्चात् 'ह्रीं सिद्धयै नमः'—कह कर माला को दाँये हाथ में ले, हृदय के समीप ले जाकर, मध्यमा अँगुली के मध्यभाग से प्रत्येक दाने का स्पर्श करें, परन्तु सुमेरु को छोड़ दें। तदुपरान्त कालका का चिन्तन कर मस्तक में गुरु तथा हृदय में देवी का ध्यान करें। जिह्वा पर मन्त्र को दीपक के रूप में स्थित अनुभव करते हुए उसकी प्रभा में जिह्वा को भी दीपक रूपिणी अनुभव करें। फिर उपाशु-जप करके माला, वर्णमाला, संस्कृत महाशंख, रुद्राक्ष, स्फटिक अथवा किसी अन्य वस्तु की माला पर, (अथवा बिना माला के भी) मूलमन्त्र को १०८ बार जपें तथा माला को मस्तक से लगायें। माला को मस्तक का स्पर्श कराते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ त्वम्माले सर्व्वभूतानां सर्व्वलोक प्रियामता।
शिवङ्कुरुष्व मे भद्रे यशोवीर्य्यञ्च सर्व्वदा॥"

इसके पश्चात् 'ह्रीं सिद्धयै नमः' कह कर, पुनः पूर्ववत् प्राणायाम, न्यास आदि कर, देवता का गन्ध-पुष्प-अक्षतादि से पूजन कर, पुष्प चन्दन अक्षत युक्त शंखोदय द्वारा निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए, जल को तेजोमय जानकर, देवी के बाँये हाथ में समर्पित करें—

"ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्रीत्वङ्गृहाण स्मत्कृतञ्जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥"

इसके उपरान्त माला को सिर से नीचे उतार कर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ त्वम्माले सर्व्वदेवानां सर्व्वसिद्धि प्रदायता।
तेन सत्येन्नमोसिद्धिन्देहि देवि नमो ऽस्तुते॥"

इस प्रकार माला का पूजन कर, उसे यत्नपूर्वक छिपाकर रखदें।

यदि हाथ के स्पर्श के कारण माला भ्रष्ट हो जाय तो उसकी शान्ति हेतु १०८ बार मूलमन्त्र का जप करना चाहिए।

अन्त में, देवी को आठ पुष्पांजलि समर्पित कर, स्तोत्र, कवच आदि का पाठ करना चाहिए।

---

७ | दक्षिण काली के अन्य मन्त्र

विभिन्न तन्त्र ग्रंन्थों में भगवती दक्षिण काली के अनेक मन्त्रों का उल्लेख किया है। सभी मन्त्र सिद्धि प्रद तथा साधक की मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाले हैं। इन मन्त्रों की साधना में प्रातः कृत्य से प्राणायाम तक के बाद उसी विधि से पूजादि सभी कृत्य करने चाहिए, जिनका उल्लेख भगवती दक्षिण कालिका के 'द्वाविंशत्यक्षर मन्त्र-प्रयोग' में किया गया है।

जिस किसी मन्त्र के ध्यान, न्यास, जप संख्या आदि में कुछ अन्तर है, उसका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है।

मनोभिलाषा पूरक एवं शास्त्र-ज्ञान-प्रदायक मन्त्र

(१) **'क्रीं'**—यह एकाक्षर मन्त्र है।

(२) **'ह्रीं'**—यह भी एकाक्षर मन्त्र है।

(३) **क्रीं क्रीं क्रीं**—यह त्र्यक्षर मन्त्र है।

एकाक्षर मन्त्र सभी अभिलाषाओं की पूर्ति करता है तथा त्र्यक्षर मन्त्र का उपासक सभी शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता है।

उक्त दोनों मन्त्रों की पूजा पद्धति, न्यास आदि सब दक्षिण काली के बाईस अक्षरों वाले पूर्वोक्त मन्त्र की भाँति ही हैं।

इनके 'कराङ्ग न्यास' को—

ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। इत्यादि

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। इत्यादि क्रम से करना चाहिए।

इनमें से एकाक्षर-मन्त्र का ध्यान इस प्रकार निर्देशित है—

"शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्।

हास्य युक्तां त्रिनेत्रां च कपाल कर्तृका कराम्॥

मुक्तकेशीं ललज्जिह्वां पिबन्तीं रुधिरं मुहुः ।
चतुर्बाहुयुतां देवीं वराभयकरां स्मेरत् ॥

भावार्थ—'देवी शव पर आरूढ़ हैं । उनकी आकृति महाभयंकर है । दाँत भयानक हैं । वे वर दायिका हैं । वे हास्यमुखी एवं तीन नेत्रों वाली हैं । उनके दो हाथों में कपाल तथा कैंची हैं । उनके बाल बिखरे हुए हैं । उनकी जीभ लपलपा रही है और वे बारम्बार रक्तपान कर रही हैं । वे चार भुजाओं वाली हैं । उनके शेष दो हाथ वर मुद्रा तथा अभय प्रदमुद्रा में हैं ।

पुरश्चरण—उक्त दोनों मन्त्रों के पुरश्चरण में एक लाख की संख्या में जप करना निर्दिष्ट है ।

विद्यारत्न-मन्त्र

"ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।"

यह इक्कीस अक्षर का मन्त्र इस विद्या का सर्वश्रेष्ठ रत्न है । यह समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है ।

इसके पुरश्चरण हेतु एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए । जप का दशांश होम करना चाहिए ।

अन्य विधियां पूर्ववत् ।

त्रिविंशत्य, द्विविंशत्य एवं विंशत्याक्षर मन्त्र

(१) "ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

पूर्वोक्त इक्कीस अक्षर वाले मन्त्र में 'स्वाहा' शब्द जोड़ देने से यह तेईस अक्षरों वाला मन्त्र बनता है ।

(२) "ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

यह बाईस अक्षरों वाला मन्त्र है ।

(३) "ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रींह्रीं स्वाहा ।"

यह बीस अक्षरों वाला मन्त्र है।

इन सब के ध्यान, पूजन आदि की पद्धति पूर्वोक्त दक्षिण कालिका मन्त्र की भाँति ही है।

त्र्यक्षर मन्त्र

"क्रीं क्रीं हूं।"

यह तीन अक्षरों वाला मन्त्र है। इसे 'चामुण्डा कालिका' की साधना में प्रशस्त माना गया है।

सभी विधियाँ पूर्ववत् हैं।

काली हृदय मन्त्र

"ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा।"

प्रसिद्ध है कि इस 'काली हृदय' नामक सिद्ध विद्या के ज्ञान-बल से ही भगवान् सदाशिव ने तीनों भुवनों की सृष्टि की है। यह सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है।

इसकी साधना हेतु प्रातः कृत्य से प्राणायाम तक प्रातः कृत्य समाप्त कर, निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास' करें—

मस्तके—भैरवः ऋषयेनमः।
मुखे—विराट् छन्दसे नमः।
हृदि—सिद्धकाली ब्रह्मरूपायै भुवनेश्वरी देवतायै नमः।
गुह्ये—क्रीं बीजाय नमः।
पादयोः—ह्रीं शक्तये नमः।

इसके उपरान्त पूर्वोक्त 'दक्षिण कालिका' की पद्धति के अनुसार वर्णन्यास तथा कराङ्गन्यास करके, निम्नानुसार 'ध्यान' करें—

खड्गोद्भिन्नेन्दु खण्डस्रवदमृत रसा प्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा,
सव्ये पाणौ कपालाद् गलदसृजमथो मुक्तकेशीपिबन्ती।
दिग्वस्त्रा बद्धकाञ्ची मणिमयमुकुटाद्येयुता दीप्तजिह्वा,
पायान्नीलोत्पलाभा रवि शशि विलसत्कुण्डला लीढ़पादा॥

भावार्थ—"खड्ग द्वारा भिन्न किए गए चन्द्र मण्डल से स्रावित सुधा-रस से जिनका सम्पूर्ण शरीर आप्लावित है, जो तीन नेत्रों वाली है जिनके बाँये हाथ में नर-कपाल है और जो उसमें से गिरते हुए रक्त का पान कर रही हैं, जिनके केश

बिखरे हुए हैं, जो नग्न वेष में हैं। जिनकी कमर में काञ्ची (करधनी) बंधी है। मस्तक पर मणिमय मुकुट है, जिनकी प्रदीप्त जिह्वा है, जिनके शरीर की कान्ति नील-कमल जैसी है, जिनके कानों के कुण्डल सूर्य-चन्द्र की भाँति सुशोभित हैं और जो आलीढ़पद पर खड़ी हैं - ऐसी भगवती कालिका देवी हमारी रक्षा करें।"

उक्त प्रकार से ध्यान करके पूजा की अन्य सब विधियों का प्रयोग पूर्वोक्त दक्षिण कालिका की पद्धति के अनुसार करें।

इस मन्त्र के पुरश्चरण हेतु **इक्कीस सहस्र** (२१०००) की संख्या में जप किया जाता है तथा शिरीष पुष्पों द्वारा जप का दशांश होम किया जाता है।

अन्य मन्त्र

(१) "क्रीं हूं ह्रीं।"

यह तीन अक्षरों वाला मन्त्र महाकाल द्वारा वर्णित है।

(२) "क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।"

यह पञ्चाक्षर मन्त्र ब्रह्मा द्वारा वर्णित है।

(३) "क्रीं क्रीं क्रीं फट स्वाहा।"

यह षडक्षर मन्त्र त्रैलोक्य मोहनकारी है।

(४) "क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।"

तथा

(५) "क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

ये दोनों अष्टाक्षर-मन्त्र चतुर्वर्ग प्रदायक हैं।

(६) ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।"

यह एकादशाक्षरी मन्त्र मनोभिलाषा पूरक है।

उक्त सभी मन्त्रों की पूजा-विधि में प्रातः कृत्य से प्राणायाम के बाद, निम्नानुसार ऋष्यादि न्यास करना चाहिए—

शिरसि—**दक्षिणामूर्त्ति ऋषये नमः।**

मुखे—**पंक्तिश्छन्दसे नमः।**

नाभौ—**ह्रीं शक्तये नमः।**

हृदि- **कालिकायै देवतायै नमः।**

फिर अग्रानुसार 'ध्यान' करना चाहिए—

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमाला विभूषिताम् ।
खड्ग च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीन्दीवर द्वयं ॥
कर्त्रीं च खर्परं चैव क्रमाद् वामेन विभ्रती ।
द्यौ लिखन्ती जटायेकां विभ्रती शिरसा स्वयं ॥
मुण्डमालाधरा शीर्षे ग्रीवायामथ चापराम् ।
वक्षसा नागहारं च विभ्रती रक्तलोचना ॥
कृष्णवस्त्रधरा कट्यां व्याघ्राजिन समन्विता ।
वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदं ॥
विलाप्य सिंह पृष्ठेतु लेलिहाना शवं स्वयं ।
साट्टहासा महाघोर रावयुक्ता सुभीषणा ॥'

भावार्थ—भगवती चार भुजाओं वाली, कृष्णवर्णा तथा मुण्डमाला से विभूषिता हैं। वे अपने दोनों दाँये हाथों में क्रमशः खड्ग तथा दो नील कमल लिए हैं एवं दोनों बाँये हाथों में कैंची और खर्पर लिए है। उनकी दो जटाओं में से एक आकाश को छू रही है। वे शिर तथा कण्ठ में मुण्डमाला एवं वक्षः-स्थल पर नाग हार धारण किए हैं। उनके नेत्र रक्तवर्ण हैं। करि में कृष्ण वस्त्र तथा व्याघ्रचर्म धारण किए हुए हैं। उनका बाँया पाँव शव के हृदय पर तथा दाँया सिंह की पीठ पर रखा हुआ है। वे मद्यपान अट्टहास्य तथा भीषण शब्द कर रही हैं।"

उक्त प्रकार से ध्यान करने के उपरान्त पूर्वोक्त दक्षिणकालिका क्रम से पूजा करनी चाहिए। इस मन्त्र के पुरश्चरण में दो लाख की संख्या में जप किया जाता है।

उक्त मन्त्रों में ग्यारह अक्षर वाले मन्त्र के अतिरिक्त, जितने मन्त्र हैं, उनमें से जिस मन्त्र में जितने अक्षर हैं, उनका उतनी ही लाख की संख्या में जप करने से पुरश्चरण होता है।

विविध मन्त्रः

(१) **'क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा'**

यह एकादशाक्षर मन्त्र **चतुर्वर्ग फलदायक है।**

(२) **'क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके फट्'**

यह दशाक्षर मन्त्र भी धर्म, **अर्थ, काम तथा मोक्ष दायक है।**

(३) क्रीं क्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह अष्टदशाक्षर मन्त्र मनोभिलाषापूरक है।

इन मन्त्रों की साधना हेतु प्रातः कृत्य से प्राणायाम तक के कर्मकर, निम्नानुसार ऋष्यादि न्यास करें।

शिरसि—दक्षिणा मूर्तिऋषये नमः।

मुखे—पंक्तिश्छन्दसे नमः।

हृदये—दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः।

अन्य सभी विधियाँ दक्षिणकालिका के पूर्वोक्त मन्त्र की भाँति ही करें।

(४) 'क्रीं स्वाहा।'

इस मन्त्र के ऋषि भैरव हैं। अन्य सब पूर्ववत्।

(५) क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा—

इस मन्त्र के ऋषि पञ्चवक्त्र हैं। अन्य सब पूर्ववत्।

(६) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

(७) क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

(८) क्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा।

(९) क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।

(१०) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

(११) क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

(१२) नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।

(१३) "ॐ नमः आं क्रों आं क्रो फट् स्वाहा कालि कालिके हूं।"

(१४) "ॐ हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

(१५) "क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

(१६) "ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा।"

(१७) "क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।"
(१८) "क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे स्वाहा।"
(१९) "क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा।"
(२०) "ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा।"
(२१) "ॐ क्रीं कालिके स्वाहा।"
(२२) "ॐ क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्।"
(२३) "क्रीं हूं ह्रीं।"
(२४) ॐ क्रीं।
(२५) क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।
(२६) ऐं नमः क्रीं ऐं नमः क्रीं कालिकायै स्वाहा।
(२७) क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा।
(२८) क्रीं हूं ह्रीं दक्षिण कालिके फट्।
(२९) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।
(३०) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।
(३१) क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।
(३२) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।
(३३) क्रीं दक्षिण कालिके स्वाहा।
(३४) क्रीं हूं हूं ह्रीं हूं हूं क्रीं स्वाहा।
(३५) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्री ह्रीं स्वाहा।
(३६) क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूंक्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।
(३७) नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।
(३८) नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालिके हूं।
(३९) क्रीं क्रीं स्वाहा।
(४०) क्रीं क्रीं फट् स्वाहा।
(४१) क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।

(४२) ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा ।

(४३) नमः आं क्रां आं क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं ।

उक्त सभी मन्त्रों के न्यास तथा पूजन की विधि पूर्वोक्त दक्षिण कालिका के द्वाविंशत्यक्षर मन्त्र की भाँति ही है ।

सामान्यतः इन मन्त्रों के पुरश्चरण हेतु दो लाख की संख्या में जप करना चाहिए । एक नियम यह भी है कि मन्त्र के अन्तर्गत जितनी वर्ण संख्या हो, उतने ही लाख की संख्या में जप करने से मन्त्र का पुरश्चरण होता है । जप संख्या का दशांश होम करना चाहिए ।

इन मन्त्रों की पूजा में पूर्वोक्त 'काली यन्त्र' का प्रयोग किया जा सकता है तथा उसी प्रकार ध्यान भी करना चाहिए ।

गुह्यकाली-मन्त्र प्रयोग

भगवती गुह्यकाली के मन्त्र निम्नलिखित हैं—

इक्कीस वर्णों वाला मन्त्र

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह मन्त्र समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करता है।

सत्रह वर्णों वाला मन्त्र

"हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह मन्त्र चतुर्वर्ग प्रदायक कहा गया है।

सोलह वर्णों वाला मन्त्र

"क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह मन्त्र साधक की समस्त कामनाएें पूर्ण करता है।

चौदह वर्णों वाला मन्त्र

(१) "क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

(२) हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

(३) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके स्वाहा ।"

यह मन्त्र भी पूर्व मन्त्र की भांति ही प्रभावकारी है।

नौ वर्णों वाला मन्त्र

"क्रीं' गुह्ये कालिके क्रीं स्वाहा ।"

यह मन्त्र समस्त मनोभिलाषाएँ पूर्ण करता है।

साधन-विधि

उक्त सभी मन्त्रों की साधना में दक्षिण कालिका की पूजा पद्धति में उल्लिखित न्यास, पूजा आदि का प्रयोग करना चाहिए।

'गुह्यकाली' के बलिदान में, बलि निवेदित करते समय निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ऐह्ये हि गुह्यकालिके मम बलिं गृह्ण गृह्ण मम शत्रून् नाशय नाशय खादय खादय स्फुट स्फुट छिन्धि छिन्धि सिद्धि देहि हूं फट् स्वाहा ।"

गुह्यकाली के 'आसन' का मन्त्र भी इस प्रकार से है—

"ॐ सदाशिव महाप्रेताय गुह्यकाल्यासनाय नमः ।"

अन्य सब बातें दक्षिणाकाली की भाँति ही समझें।

गुह्यकाली के अन्यमन्त्र

भगवती गुह्यकाली के अन्य मन्त्र निम्नलिखित हैं, इन सबकी साधन-विधि भी पूर्वोक्तानुसार ही समझनी चाहिए।

(१) "क्लीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्लीं क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

(२) "क्लीं हूं ह्रीं गुह्य कालिके हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

(३) हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्लीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

टिप्पणी—गुह्यकाली का यन्त्र भी दक्षिण कालिका यन्त्र की भाँति ही है।

९ | भद्रकाली-मन्त्र प्रयोग

षोडशाक्षर मन्त्र

अब भद्रकाली मन्त्र का उल्लेख करते हैं। मन्त्र यह है—

"ॐ ह्रौं कालि महाकालि किलिकिलि फट् स्वाहा।"

इस सोलह अक्षर वाले मन्त्र के न्यास तथा अन्य विधान, पुरश्चरण आदि पूर्वोक्त 'द्वाविंशत्यक्षर दक्षिणकाली मन्त्र' की भाँति ही हैं। इस मन्त्र का 'ध्यान' निम्नानुसार है—

ध्यान

"क्षुत्क्षामा कोटराक्षी मसिमलिन मुखीमुक्तकेशी रुदन्ती
नाहं तृप्ता वदन्ती जगदखिलमिदं ग्रासमेकं करोमि।
हस्ताभ्यां धारयन्ती ज्वलदनल शिखापन्निभं पाशयुग्मं
दन्तैजम्बूफलाभैः परिहरतु भयं पातु मां भद्रकाली॥"

इस प्रकार ध्यान करके पूर्ववत् पूजन करें। एक सौ आठ माला मन्त्र जप करते हुए समस्त भयों का अपहरण करने वाली भगवती भद्रकाली का ध्यान करें।

इस मन्त्र का प्रयोग वैरियों को वश में करने के लिए किया जाता है। यह देवी महादेव के शत्रुओं का निग्रह करने वाली एवं अचिन्त्य धर्म, कर्म तथा अर्थ की सिद्धि देने वाली हैं। जो व्यक्ति जिस कामना से भद्रकाली की उपासना करता है, वह पूर्ण होती है। पुरश्चरण के लिए १००८ बार जप ही पर्याप्त माना गया है।

जो साधक भद्रकाली की पूजा कर प्रतिदिन १०८ बार इस मन्त्र का जप करता है, उसकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

भद्रकाली के अन्य मन्त्र निम्नलिखित हैं—

बीस वर्णों वाला मन्त्र

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह बीस वर्ण वाला भद्रकाली-मन्त्र साधक को चतुर्वर्ग प्रदान करता है।

सोलह वर्णों वाला अन्य मन्त्र

"भद्र कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।"

यह भी सोलह वर्ण वाला मन्त्र है। यह साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है।

साधन-विधि

उक्त सब मन्त्रों की साधना में पूर्वोक्त दक्षिणकालि की पूजा-पद्धति के अनुसार ही न्यास, पूजा आदि कृत्य करने चाहिए। केवल बलि-उत्सर्ग करते समय निम्नलिखित मन्त्र वाक्य का उच्चारण करना चाहिए—

"ऐं ह्रीं ऐह्येहि जगन्मातर्जगतां जननि गृह्ण गृह्ण बलि सिद्धि देहि देहि शत्रु क्षयं कुरु कुरु हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ॐ कालिकायै नमः फट् स्वाहा'।'



चित्र—७

१० | श्मशानकाली मन्त्र प्रयोग

अब श्मशानकाली मन्त्र की प्रयोग विधि का उल्लेख करते हैं।

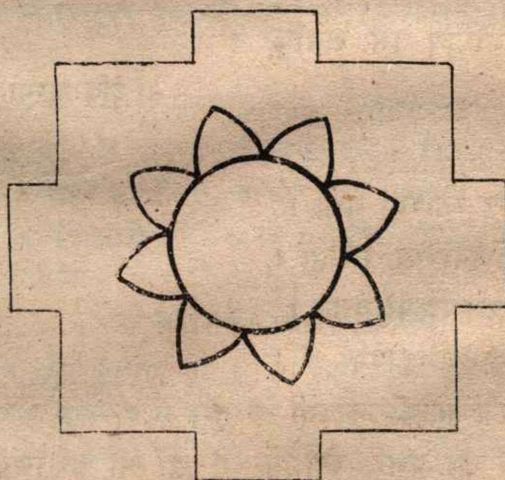
मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं।

यह ग्यारह अक्षरों का मन्त्र है।

श्मशानकाली पूजन यन्त्र का स्वरूप निम्नाङ्कित है—

श्मशानकाली पूजन यन्त्र



चित्र—८

विधान

इस मन्त्र का विधान निम्नानुसार है। सर्वप्रथम 'विनियोग वाक्य' का उच्चारण कर विभिन्न 'न्यास' करने चाहिए फिर क्रमशः ध्यान, पीठपूजा, आवरण पूजा, जप, होम आदि कर्तव्य हैं।

विनियोग

अस्य श्मशानकाली मन्त्रस्य भृगुऋषिः। त्रिवृच्छन्दः। श्मशानकाली देवता। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। मम सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोग।"

इस विनियोग वाक्य का उच्चारण करने के बाद निम्नानुसार विभिन्न 'न्यास' करे—

ऋष्यादि न्यासः

(१) ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि।
(२) त्रिवृच्छन्दसे नमः मुखे।
(३) श्मशान कालिका देवतायै नमः हृदि।
(४) वाग्बीजाय नमः गुह्ये।
(५) ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
(६) क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
(७) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥

करन्यासः

(१) ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
(२) ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
(३) श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्।
(४) क्लीं अनामिकाभ्यां हूं।
(५) कालिके कनिष्ठिकाभ्यां वषट्।
(६) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

॥ इति करन्यासः ॥

हृदयादि षडङ्गन्यासः

(१) ऐं हृदयाय नमः।
(२) ह्रीं शिरसे स्वाहा।

(३) श्रीं शिखायै वषट् ।
(४) क्लीं कवचाय हुं ।
(५) कालिके नेत्रत्रयाय वौषट् ।
(६) ऐं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट् ।

॥ इति हृदयादि षडङ्गन्यासः ॥

उक्त विधि से न्यास करने के बाद निम्नानुसार ध्यान करें—

ध्यानमन्त्रः

अञ्जनाद्रिनिभां देवीं श्मशानालय वासिनीं ।
रक्तनेत्रां मुक्तकेशीं शुष्कमांसातिभैरवां ॥१॥
पिङ्गाक्षीं वामहस्तेन मद्यपूर्णां समांसकाम् ।
सद्यः कृत्तंशिरोदक्षहस्तेन दधतीं शिवाम् ॥२॥
स्मितवक्त्रां सदा चाम मांसचर्वणतत्पराम् ।
नानालङ्कार भूषाङ्गी नग्नां मत्तां सदा शवैः ॥३॥

॥ इति ध्यानः ॥

उक्त विधि से ध्यान करने के उपरान्त 'द्वाविंशत्यक्षर दक्षिण काली मन्त्र प्रयोग' में वर्णित विधि के अनुसार पीठ-पूजा करे। फिर ताम्रपात्र में अष्टदल कमल-वृत्त, उसके बाहर धरणीतल, चौकोर यन्त्र लिखकर उसे ताँबे के पात्र में रखकर, घृत से अभ्यंग करके उसके ऊपर दुग्धधारा तथा जलधारा दकर, स्वच्छ वस्त्र से पौंछने के बाद—

"क्रीं कालिका योगपीत्थनेनमः"

इस मन्त्र द्वारा पुष्पादि का आसन देकर, उस पीठ के मध्य में रखकर, प्राणप्रतिष्ठा करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर, पाद्य से पुष्पांजलि प्रदान पर्यन्त उपचारों द्वारा देवी की पूजा कर, आज्ञा लेकर निम्नानुसार आवरण पूजा करनी चाहिए—

आवरण-पूजा

आठों दलों में पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि प्रदान करें—

(१) ॐ ब्राह्म्यै नमः ।
(२) ॐ माहेश्वर्यै नमः ।

(३) ॐ कौमार्यै नमः ।

(४) ॐ वैष्णव्यै नमः ।

(५) ॐ वाराह्यै नमः ।

(६) ॐ इन्द्राण्यै नमः ।

(७) ॐ चामुण्डायै नमः ।

(८) ॐ महालक्ष्यै नमः ।

इसके बाद अष्टदल के बाहर पूर्वादि क्रम से निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि प्रदान करें—

(१) ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः ।

(२) ॐ रुरु भैरवाय नमः ।

(३) ॐ चण्ड भैरवाय नमः ।

(४) ॐ क्रोध भैरवाय नमः ।

(५) ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः ।

(६) ॐ कपालि भैरवाय नमः ।

(७) ॐ भीषण भैरवाय नमः ।

(८) ॐ संहार भैरवाय नमः ।

इसके पश्चात् भूपुर में इन्द्र आदि दश दिक्पालों की तथा उनके वज्र आदि आयुधों की पूजा करके पुष्पांजलि प्रदान करें ।

उक्त विधि से आवरण पूजा कर, धूपदान से लेकर नमस्कार पर्यन्त पूजा करके मन्त्र का जप करना चाहिए ।

विशेष रूप से श्मशान में जप करना चाहिए । गृहस्थ व्यक्ति यदि चाहे तो घर में भी मछली-मास का उत्तम भोजन करने के बाद, रात्रि के समय नग्न हो, शान्तचित्त से, मन्त्र में जितने वर्ण हैं, उतने लाख की संख्या में जप करे तथा जप संख्या का दशांश होम करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

सामान्यतः जप संख्या ११ लाख बताई गई है । मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर पूर्वोक्त प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए ।

अन्य मन्त्र

श्मशान काली के अन्य मन्त्र निम्नलिखित हैं—

(१) क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं श्मशानकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।'

श्मशान काली का यह इक्कीस वर्णों वाला मन्त्र साधक की कामनाओं को पूर्ण करता है।

(२) क्लीं कालिकायै नमः।

सात वर्णों वाला यह मन्त्र अभीष्ट सिद्धि देता है।

टिप्पणी—उक्त सभी मन्त्रों की पूजा विधि एवं यन्त्र पूर्वोक्त मन्त्र की भाँति ही समझनी चाहिए।

---

११ | महाकाली-मन्त्र प्रयोग

भगवती महाकाली के मन्त्र निम्नलिखित हैं—

अठारह वर्णों वाला मन्त्र

(१) "क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

पन्द्रह वर्णों वाला मन्त्र

(२) "क्रैं क्रैं क्रों क्रों पशून् गृहाण हुं फट् स्वाहा।

बीस वर्णों वाला मन्त्र

(३) "क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।"

भगवती महाकाली के उक्त तीनों 'मन्त्र' चतुर्वर्ग प्रदायक हैं।

साधन-विधि

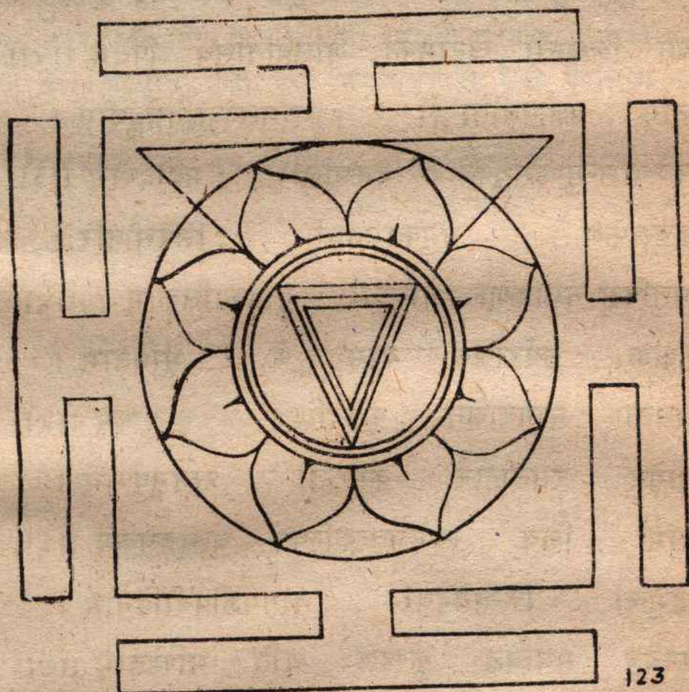
उक्त सब मन्त्रों की साधना में पूर्वोक्त दक्षिण कालिका की पूजा-पद्धति के अनुसार ही न्यास पूजा आदि कृत्य करने चाहिए। केवल बलि उत्सर्ग करते समय निम्नलिखित मन्त्र-वाक्य का उच्चारण करना चाहिए—

"ऐं ह्रीं ऐह्येहि जगन्मातर्जगतां जननि ग्रहण ग्रहण बलि सिद्धि देहि देहि शत्रु क्षयं कुरु कुरु हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् फट् ॐ कालिकायै नमः फट् स्वाहा।"

यन्त्र-पूजन

महाकाली, गुह्यकाली, भद्रकाली तथा श्मशान काली इन चारों देवियों के मन्त्र का स्वरूप एक ही है जिसे नीचे प्रदर्शित किया गया है—

काली यन्त्र



चित्र—६

इन देवियों के पूजन में विशेषता यह है कि यन्त्र के भूपुर में इन्द्रादि दिक्पाल तथा उनके वज्र आदि अस्त्र भूपुर के चतुर्द्वार में विष्णु, शिव, सूर्य और गणेश, भू-गृह में लोक पाल, वाह्यभाग में देवी के अस्त्र तथा भूपुर के चारों ओर पूर्वादि क्रम से विष्णु, शिव, सूर्य तथा गणेश का पूजन करना चाहिए।

ध्यान-मन्त्र

महाकाली, गुह्यकाली, भद्रकाली तथा श्मशान काली इन चारों देवियों, का ध्यान निम्नलिखित मन्त्रों से करना चाहिए। मन्त्र संख्या ४ में जहाँ 'गुह्य-कालिकाम्' शब्द आया है, वहाँ 'महाकालिकाम्', भद्रकालिकाम्, 'श्मशानेश्वरीम्'—इस प्रकार परिवर्तन कर लेना चाहिए। यथार्थ में ये चारों देवियाँ एकही हैं तथा समान फल देती हैं। इनके मन्त्र आदि में ही थोड़ी भिन्नता है, अन्य सब विधियाँ 'दक्षिण कालिका, के समान ही हैं।

यन्त्र को सामने रख कर निम्नानुसार ध्यान करें—

''महामेघ प्रभां देवी कृष्णवस्त्रोसिधारिणीम् ।
ललज्जिह्वां घोरदष्ट्रां कोटराक्षीं हसन्मुखीम् ॥१॥
नागहारलतोपेतां चन्द्रार्द्धकृत शेखराम् ।
द्यां लिखन्तीं जटामेकां लेलिहानासवं पिवम् ॥२॥
नाग यज्ञोपवीताङ्गी नागशय्यानिषेदुषीम् ।
पञ्चाशन्मुण्डसंयुक्तं वनमाला महोदरीम् ॥३॥
सहस्रफण संयुक्तमनन्तं शिरसोपरि ।
चतुर्दिक्षु नागफणा वेष्टितां गुह्यकालिकाम् ? ॥४॥
तक्षक सर्पराजेन वामकङ्कण भूषिताम् ।
अनन्त नागराजेन कृतदक्षिण कङ्कणम् ॥५॥
नागेन रसनाहार कल्पितां रत्ननूपुराम् ।
वामे शिव स्वरूपंतत्कल्पितं वत्स्रूपकम् ॥६॥
द्विभुजां चिन्तयेद्देवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ।
नरदेह समावद्ध कुण्डल श्रुति मण्डिताम् ॥७॥
प्रसन्नवदनां सौम्यां नवरत्न विभूषिताम् ।
नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेवितां शिवमोहिनीम् ॥८॥
अट्टहासां महाभीमां साधकाभीष्टदायिनीम् ॥९॥

भावार्थ—देवी के शरीर का वर्ण मेघ के समान कृष्ण (काला) है। वे कृष्णवस्त्र तथा तलवार धारण किए हुए हैं। उनकी जीभ लाल है तथा दाँत और दाढ़ें अत्यन्त भयंकर हैं। उनके दोनों नेत्र कोटर में घुसे हुए हैं। मुख हास्यपूर्ण है। उनके कंठमें नागहर पड़ा है। कपाल पर अर्द्धचन्द्र है तथा मस्तक की जटाओं में से एक आकाश गामिनी हैं वे रक्त पान कर रहीं हैं। वे नाग का ही यज्ञोपवीत पहने हैं तथा नागशय्या पर स्थित हैं। उनके कंठ में पचास मुण्डों से युक्त वन-माला पड़ी है। उनका उदर बहुत बड़ा है तथा मस्तक पर सहस्रफणधारी अनन्त

नागराज विराजित हैं। वे चारों ओर नागफणों से वेष्ठित हैं। वे नागराज तक्षक को वामकङ्कण तथा अनन्त नाग को दक्षिण कङ्कण के रूप में धारण किए हैं। उनकी करधनी भी नाग-निर्मित है। वे रत्न जटित नूपुर धारण किए हैं। उनके वाम भाग में शिवस्वरूप कल्पित वत्स (बालक) है।

उन नागयज्ञोपवीतिनी देवी की दो भुजाएँ हैं। वे अपने दोनों कानों में नर-देह युक्त कुण्डलों को धारण किए हैं। उनका मुख प्रसन्न है तथा आकृति सौम्य है। ऐसी नवरत्न-विभूषित शिव-मोहिनी देवी की नारद आदि ऋषि-मुनि गण सेवा कर रहे हैं। अट्टहास युक्ता ऐसी महाभयंकारी देवी कालिका साधकों को अभीप्सित वर प्रदान करने वाली हैं।

टिप्पणी--अन्य सब विधियाँ 'दक्षिण कालिका मन्त्र' की भाँति ही समझें।

---

१२ कीलक, अर्गल, कालीक्रम-स्तव, कवच, स्तोत्र सहस्राक्षरी, बीजसहस्राक्षरी, सहस्रनाम आदि

मन्त्र-साधन में पूजन, जप, आरती आदि के बाद भगवती के कीलक अर्गल, कवच, स्तोत्र, सहस्रनाम आदि का यथाशक्ति पाठ करना चाहिए।

द्वाविंशत्यक्षर मन्त्र साधन के बाद 'काली कर्पूर स्तव' तथा 'जगन्मङ्गल कवच' का पाठ निर्देशित है। इस प्रकरण में उन सबको संकलित किया गया है।

पूजा, मन्त्र-साधना के बिना भी इन स्तोत्रादि का पाठ कल्याण एवं अभीष्ट फलदायक होता है।

श्रीकाली कीलकम्

ॐ अस्य श्री कालिका कीलकस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्री दक्षिण कालिका देवता सवार्थ सिद्धि साधने कीलकन्यासे जपे विनियोगः।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कीलकं सर्वकामदम्।
कालिकायाः परं तत्वं सत्यं सत्यं त्रिभिर्ममः॥
दुर्वासाश्च वशिष्ठश्च दत्तात्रेयो बृहस्पतिः।
सुरेशो धनदश्चैव अङ्गिराश्च भृगूद्वहः॥
च्यवनः कार्तवीर्यश्च कश्यपोऽथ प्रजापतिः।
कीलकस्य प्रसादेन सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः॥

अथ कीलक

ॐ कारं तु शिखाप्रान्ते लम्बिका स्थान उत्तमे ।
सहस्रारे पङ्कजे तु क्रीं क्रीं क्रीं वाग्विलासिनी ।।
कूर्चबीजयुगं भाले नाभौ लज्जायुगं प्रिये ।
दक्षिणे कालिके पातु स्वनासापुटयुग्मके ।।
हूंकारद्वन्द्वं गण्डे द्वे द्वे माये श्रवणद्वये ।
आद्यातृतीयं विन्यस्य उत्तराधर सम्पुटे ।।
स्वाहा दशनमध्ये तु सर्ववर्णन्न्यसेत् क्रमात् ।
मुण्डमाला असिकरा काली सर्वार्थसिद्धिदा ।।
चतुरक्षरी महाविद्या क्रीं क्रीं हृदय पङ्कजे ।
ॐ हूं ह्रीं क्रीं ततो हूं फट् स्वाहा च कंठकूपके ।।
अष्टाक्षरी कालिकाया नाभौ विन्यस्य पार्वति ।
क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहान्ते च दशाक्षरी ।।
मम बाहु युगे तिष्ठ मम कुण्डलिकुण्डले ।
हूं ह्रीं मे वह्निजाया च हूं विद्या तिष्ठ पृष्ठके ।।
क्रीं हूं ह्रीं वक्षदेशे च दक्षिणे कालिके सदा ।
क्रीं हूं ह्रीं वह्निजायाऽन्ते चतुर्दशाक्षरेश्वरी ।।
क्रीं तिष्ठ गुह्यदेशे मे एकाक्षरी च कालिका ।
ह्रीं हूं फट् च महाकाली मूलाधार निवासिनी ।।
सर्वरोमाणिमे काली करांगुल्यङ्कपालिनी ।
कुल्ला कटिं कुरुकुल्ला तिष्ठ तिष्ठ सदा मम ।।
विरोधिनी जानुयुग्मे विप्रचित्ता पदद्वये ।
तिष्ठमे च तथा चोग्रा पादमूले न्यसेत्क्रमात् ।।
प्रभा तिष्ठतु पादाग्रे दीप्ता पादांगुलीनपि ।
नीली न्यसेद्विन्दुदेशे घना नादे च तिष्ठ मे ।।
वलाका विन्दुमार्गे च न्यसेत्सर्वाङ्ग सुन्दरी ।
मम पातालके मात्रा तिष्ठ स्वकुल कायिके ।।

मुद्रा तिष्ठ स्वमत्येमां मितास्वङ्गाकुलेषु च ।
एता नृमुण्डमालास्रग्धारिण्यः खड्गपाणयः ॥
तिष्ठन्तु मम गात्राणि सन्धिकूपानि सर्वशः ।
ब्राह्मी च ब्रह्मरंध्रे तु तिष्ठस्व घटिका परा ॥
नारायणी नेत्रयुगे मुखे माहेश्वरी तथा ।
चामुण्डा श्रवणद्वन्द्वे कौमारी चिबुके शुभे ॥
तथामुदरमध्ये तु तिष्ठ मे चापराजिता ।
वाराही चास्थिसन्धौ च नारसिंही नृसिंहके ॥
आयुधानि गृहीतानि तिष्ठस्वेतानि मे सदा ।
इति ते कीलकं दिव्यं नित्यं यः कीलयेत्स्वकम् ॥
कवचादौ महेशानि तस्यः सिद्धिर्न संशयः ।
श्मशाने प्रेतयोर्वापि प्रेतदर्शनतत्परः ॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
सवाग्मी धनवान्दक्षः सर्वाध्यक्षः कुलेश्वरः ॥
पुत्र वान्धव सम्पन्नः समीर सदृशो बले ।
न रोगवान् सदा धीरस्तापत्रय निषूदनः ॥
मुच्यते कालिका पायात् तृणराशिमिवानल ।
न शत्रुभ्यो भयं तस्य दुर्गमेभ्यो न बाध्यते ॥
यस्य देशे कीलकं तु धारणं सर्वदाम्बिके ।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं बरानने ॥
मन्त्राच्छतगुणं देवि कवचं यन्मयोदितम् ।
तस्माच्छतगुणं चैव कीलकं सर्वकामदम् ॥
तथा चाप्यसिता मन्त्रं नील सारस्वते मनौ ।
न सिध्यति वरारोहे कीलकार्गलके विना ॥
विहीने कीलकार्गलके काली कवच यः पठेत् ।
तस्य सर्वाणि मन्त्राणि स्तोत्राण्य सिद्धये प्रिये ॥

॥ इति श्री कालिका कीलकम् समाप्तम् ॥

श्री काली अर्गलम्

ॐ अस्य श्री कालिकार्गलस्तोत्रस्य भैरव ऋषिरनुष्टप् छन्दः श्री कालिका देवता मम सर्वसिद्धिसाधने विनियोगः ।

भावार्थ—इस श्री कालिका अर्गल स्त्रोत्र के भैरव ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, कालिका देवता हैं तथा सम्पूर्ण सिद्धियों के साधन में इसका विनियोग है ।

ॐ नमस्ते कालिके देवि आद्यवीजत्रय प्रिये ।
बशमानय मे नित्यं सर्वेषां प्राणिनां सदा ।।
कूर्च्चयुग्मं ललाटे च स्थातु मे शववाहिना ।
सर्वसौभाग्यसिद्धि च देहि दक्षिण कालिके ।।
भुवनेश्वरि बीजयुग्मं भू युगे मुण्डमालिनी ।
कन्दर्परूपं मे देहि महाकालस्य गेहिनि ।।
दक्षिणे कालिके नित्ये पितृकाननवासिनि ।
नेत्रयुग्मं च मे देहि ज्योतिरालेपनं महत् ।।
श्रवणे च पुनर्लज्जाबीजयुग्मं मनोहरम् ।
महाश्रुतिधरत्वं च मे देहि मुक्त कुन्तले ।।
ह्रीं ह्रीं बीजद्वयं देवि पातु नासापुटे मम ।
देहि नाना विधिमह्यं सुगन्धिं त्वं दिगम्बरे ।।
पुनस्त्रिबीजप्रथमं दन्तोष्ठरसनादिकम् ।
गद्यपद्यमयींवाजीं काव्यशास्त्राद्यलंकृताम् ।।
अष्टादशपुराणानां स्मृतीनां घोरचण्डिके ।
कविता सिद्धिलहरीं मम जिह्वां निवेशय ।।
वह्निजाया महादेवि घण्टिकायां स्थिराभव ।
देहि मे परमेशान बुद्धिसिद्धिरसात्मकम् ।।
तुर्याक्षरी चित्स्वरूपा कालिका मन्त्रसिद्धिदा ।
सा च तिष्ठतु हृत्पद्मे हृदयानन्दरूपिणी ।।
षडक्षरी महाकाली चण्डकाली शुचिस्मिता ।
रक्तासिनी घोरदंष्ट्रा भुजयुग्मे सदाऽवतु ।।

सप्ताक्षरी महाकाली महाकाल शवोद्धता ।
स्तनयुग्मे सूर्यकर्णो नरमुण्डसुकुन्तला ॥
तिष्ठ स्वजठरे देवि अष्टाक्षरी शुभप्रदा ।
पुत्रपौत्रकलत्रादि सुहृन्मित्राणि देहि मे ॥
दशाक्षरी महाकाली महाकालप्रिया सदा ।
नाभौ तिष्ठतु कल्याणी श्मशानालयवासिनी ॥
चतुर्दशार्णवा या च जयकाली सुलोचना ।
लिङ्गमध्ये च तिष्ठस्व रेतस्विनी ममाङ्कके ॥
गुह्यमध्ये गुह्यकाली मम तिष्ठ कुलाङ्गने ।
सर्वाङ्गे भद्रकाली च तिष्ठ मे परमात्मिके ॥
कालि पादयुगे तिष्ठ मम सर्वमुखे शिवे ।
कपालिनी च या शक्तिः खड्गमुण्डधरा शिवा ॥
पादद्वयांगुलिष्वङ्गे तिष्ठस्वपापनाशिनि ।
कुल्लादेवी मुक्तकेशी रोमकूपेषु वैष्णवी ॥
तिष्ठतु उत्तमाङ्गे च कुरुकुल्ला महेश्वरी ।
विरोधिनी विराधे च मम तिष्ठतु शंकरी ॥
विप्रचित्तै महेशानि मुण्डधारिणि तिष्ठमाम् ।
मार्गे दुर्मार्गगमने उग्रा तिष्ठतु सर्वदा ॥
प्रभादिक्षु विदिक्षुमाम् दीप्तां दीप्तं करोतुमाम् ।
नीलाशक्तिश्च पातालेघना चाकाशमण्डले ॥
पातु शक्तिर्वलाका मे भुवं मे भुवनेश्वरी ।
मात्रा मम कुले पातु मुद्रा तिष्ठतु मन्दिरे ॥
मिता मे योगिनी या च तथा मित्रकुलप्रदा ।
सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी ॥
ब्राह्मी ब्रह्मकुले तिष्ठ मम सर्वार्थदायिनी ।
नारायणीविष्णुमाया मोक्षद्वारे च तिष्ठ मे ॥

माहेश्वरी वृषारूढा काशिकापुरवासिनी ।
शिवतां देहि चामुण्डे पुत्रपौत्रादि चानघे ।।
कौमारी च कुमाराणां रक्षार्थं तिष्ठ मे सदा ।
अपराजिता विश्वरूपा जये तिष्ठस्वभाविनी ।।
वाराही वेदरूपा च सामवेद परायणा ।
नारसिंही नृसिंहस्य वक्षःस्थल निवासिनी ।।
सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी ।
सर्वेषां स्थावरादीनां जङ्गमानां सुरेश्वरी ।।
स्वेदजोद्भिजण्डजानां नराणां च भयादिकम् ।
विनाश्याप्यऽभिमतं च देहि दक्षिण कालिके ।।
य इदं चार्गलं देवि यः पठेत्कालिकार्चने ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति खेचरो जायते तु सः ।।

।। इति कालिकार्गल स्तोत्रम् समाप्तम् ।।

श्रीकालीक्रम स्तवम्

ॐ नमामि कालिका देवीं कलिकल्मष नाशिनीम्
नमामि शम्भुपत्नीञ्च नमामि भवसुन्दरीं ।।१।।
आद्यांदेवी नमस्कृत्य नमस्त्रैलोक्य मोहिनीम् ।
नमामि सत्यसंकल्पां सर्वपर्वतवासिनीम् ।।२।।
पार्वतीञ्च नमस्कृत्य नमो नित्यं नगात्मजे ।।३।।

मातस्त्वदीयचरणं शरणं सुराणां
ध्यानास्पदैर्दिशति वाञ्छितवाञ्छनीयम् ।
येषां हृदि स्फुरति तच्चरणारविन्दं
धन्यास्त एव नियतं सुरलोक पूज्याः ।।४।।

गन्धैः शुभैः कुंकुम पङ्कलेपै
मतिस्त्वदीयं चरणं हि भक्ताः ।
स्मरन्ति शृण्वन्ति लुठन्तिधीरा
स्तेषां जरानैव भवेद्भवानि ॥५॥

तवांघ्रिपद्मं शरणं सुराणाम्
परापरा त्वं परमा प्रकृष्टिः ।
दिने दिने देवि भवेत् करस्थः
किमन्यमुच्चैः कथयन्ति सन्तः ॥६॥

कवीन्द्राणां दर्प करकमल शोभा परिचितम् ।
विधुन्वज्जङ्घा मे सकलगणभेतद्गिरिसुते ॥
अतस्त्वत्पादाब्जं जननि सततं चेतमि मम !
हितं नारीभूतं प्रणिहितपदं शाङ्करमपि ॥७॥

ये ते दरिद्राः सततं हि मात
स्त्वदीयपादं मनसा नमन्ति
देवासुराः सिद्धवराश्च सर्वे
तव प्रसादात सततं लुठन्ति ॥८॥

हरिस्त्वत्पादाब्जं निखिलजगतां भूतिरभवत् ।
शिवोध्यात्वा ध्यात्वा किमपि परमं तत्परतरम् ॥
प्रजानां नाथोऽयं तदनु जगतां सृष्टिविहितम् ।
किमन्यत्ते मातस्तव चरणयुगमस्य फलता ॥९॥

इन्द्रः सुराणां शरणं शरण्ये
प्रजापतिः काश्यप एव नान्यः ।
वरः पतिर्विष्णुनवः परेशि
त्व येपादाब्जफलं समस्तम् ॥१०॥

त्वदीयनाभी नव पल्लवेवा
नवांकुरैर्लोमवरैः प्रफुल्लम् ।

सदा वरेण्ये शरणं विधेहि
किम्वापरं चित्तवरैर्विभाव्यम् ॥११॥

त्वदीयपादार्चित वस्तु सम्भवः
सुरासुरैः पूज्यमवाय शम्भुः ।
त्वदीय पादार्चन तत्परो हरिः
सुदर्शनाधीश्वरतामुपालभत् ॥१२॥

धरित्री गन्धरूपेण रसेन च जलं धृतम् ॥
तेजो वह्निस्वरूपेण प्रणवे ब्रह्मरूपधृक् ॥१३॥

मुखं चन्द्राकारं त्रिभुवनपदे यामसहितम्
त्रिनेत्रं मे मातः परिहरित यः स्यात् स तु पशुः ।
न सिद्धिस्तस्य स्यात् क्षुरतसततं विश्वमखिलं
कटाक्षैस्ते मातः सफलपदपद्मं स लभते ॥१४॥

ऋतुस्त्वं हरिस्त्वं शिवस्त्वं सुरेशं ।
पुरा त्वं परा त्वं सदाशीमुरारेः ॥
हरस्त्वं हरिस्त्वं शिवस्त्वं शिवानां ।
गति स्त्वं गतिस्त्वं गति स्त्वं भवानि ॥१५॥

नवाऽहं नवा त्वं नवा वा क्रियाया ।
वरस्त्वं चरुस्त्वं शरण्यं धरायाः ॥
नद स्त्वं नदीं त्वं गति स्त्वं निधीनां ।
सुतस्त्वं सुता त्वं पिता त्वं गृहीणाम् ॥१६॥

त्वदीय मुण्डाख्य भवानि मालां विधाय चित्ते भव पद्मजापयः ।
सुराधिपत्वं लभते मुनीन्द्रः शरण्यमेतत् किमयीह चान्यत् ॥१७॥
नरस्य मुण्डञ्च तथा हि खड्गं भुजद्वये ये मनसा जपन्ति ।
सव्येतरे देवि वराभयञ्च भवन्ति ते सिद्धजना मुनीन्द्राः ॥१८॥
शिरोपरि त्वां हृदये निधाय जपन्ति विद्यां हृदये कदाचित् ।
सदा भवेत्काव्यरसस्य वेत्ता अन्ते परद्वन्द्वमुपाश्रयेत ॥१९॥

दिगम्बरा त्वां मनसा विचिन्त्य
जपेत्पराख्यां जगतां जनीति ।
जपेत्पराख्यां जगतां मतिश्च
किम्बा पराख्यां शरणं भवामः ॥२०॥
शिवाविरावैः परिवेष्टितां त्वां
निधाय चित्ते सततं जपन्ति ।
भवेय देवेशि परापरादि
निरीशतां देवि परा वदन्ति ॥२१॥
त्वदीय श्रृङ्गाररसं निधाय
जपन्ति मन्त्रं यदि वेदमुख्या ।
भवन्ति ते देवि जनापवादं
कविः कवीनामपि चाग्रजन्मा ॥२२॥
विकीर्णवेशां मनसा निधाय
जपन्ति विद्यां चकितं कदाचित् ।
सुधाधिपत्यं लभते नरः स
किमस्ति भूम्यां श्रृणु कालकालि ॥२३॥
त्वदीय बीज त्रयमातरेत
जपन्ति सिद्धास्तु विमुक्तिहेतोः ।
तदेव मास्तवपादपद्मा
भवन्ति सिद्धिश्च दिनत्रये ऽपि ॥२४॥
त्वदीय कूर्चद्वयजापकत्वात्
सुरासुरेभ्यो ऽपि भवेच्च वर्णः ।
धनित्व पाण्डित्यमयन्ति सर्वे
किम्बापरान्देवि परापराख्या ॥२५॥
त्वदीय लज्जाद्वय जापकत्वाद्
भवेन्महेशानि चतुर्थसिद्धिः ।

त्वदीय सत्सिद्धिवरप्रसादा
तवाधिपत्यं लभते नरेशः ॥२६॥
ततः स्वनाम्नः शृणु मातरेतत्
फलं चतुर्वर्ग वदन्ति सन्तः ।
बीजत्रयं वै पुनरप्युपास्य
सुराधिपत्यं लभते मुनीन्द्रः ॥२७॥
पुनस्तथा कूर्च्चयुगं जपन्ति
नमन्ति सिद्धा नरसिंहरूपा ।
ततोऽपि लज्जाद्वयजापकत्वा
ल्लभन्ति सिद्धि मनसो जनास्ते ॥२८॥
त्रिपञ्चारे चक्रे जननि सततंसिद्धि सहितां ।
विचिन्वन्सञ्चिन्वन् परममसृतं दक्षिण पदम् ॥
सदाकाली ध्यात्वां विधि विहित पूजापरिकरा ।
न तेषां संसारे विभवपरिभङ्गप्रमथने ॥२६॥
त्वं श्री स्त्वमीश्वरी काली त्वं ह्री स्त्वञ्च करालिका ।
लज्जा लक्ष्मीः सती गौरी नित्याचिन्त्या चितिः क्रिया ॥३०॥
अकुल्याद्यैश्चित्तै प्रचयपदपद्यैः पदयुतैः ।
सदा जप्त्वा स्तुत्वा जपति हृदि मन्त्रं मनुविदा ।
न तेषां संसारे विभवपरिभङ्गप्रमथने ।
क्षणं चित्तं देवि प्रभवति विरुद्धे परिकरम् ॥३१॥
त्रयस्त्रिंशैः श्लोकैर्यदि जपति मन्त्रं स्तवति च ।
नमञ्चैतानेतान् परममृतकल्पं सुखकरम् ॥
भवेत् सिद्धि शुद्धौ जगति शिरसा त्वत्पदयुगं ।
प्रणम्यं प्राकाम्यं वरसुरजनैः पूज्यविततिभि ॥३२॥

॥ इति कालीक्रम स्तव समाप्तम् ॥

श्री जगन्मंगल कवचम्

॥ भैरव्युवाच ॥

काली पूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो ।
इदानीं श्रोतु मिच्छामि कवचं पूर्व सूचितम् ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःख संकटात् ।
सर्व दुःख प्रशमनं सर्व पाप प्रणाशनम् ॥
सर्व सिद्धि प्रदं पुण्यं कवचं परमाद्भुतम् ।
अतो वै श्रोतुमिच्छामि वद मे करुणानिधे ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राण वल्लभे ।
श्री जगन्मङ्गलं नाम कवचं मन्त्र विग्रहम् ॥
पठयित्वा धारयित्वा त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥
योगिनं क्षोभमनयत् यद्धृत्वा च रघूद्वहः ।
वरदीप्तां जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥
यस्य प्रसादादीशोऽपि त्रैलोक्य विजयी प्रभुः ।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ॥
एवं च सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ॥
ॐ श्री जगन्मङ्गलस्याय कवचस्य ऋषिः शिवः ।
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिला ॥
जगतां मोहने दुष्ट विजये भुक्तिमुक्तिषु ।
योविदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥

॥ कवच ॥

शिरो मे कालिकां पातु क्रींकारैकाक्षरीपरा ।
क्रीं क्रीं क्रीं मेललाटं च कालिका खड्गधारिणी ॥

हूं हूं पातु नेत्रयुग्मं ह्लीं ह्लीं पातु श्रुति द्वयम् ।
दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरि ॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातु कपोलकम् ।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ॥
द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्याखिलप्रदा ।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥
क्रीं हूं ह्लीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम ।
ऐं हूं ऊं ऐं स्तन द्वन्द्वं ह्लीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका ।
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्लीं ह्लीं पातु करौ षडक्षरी मम ॥
क्रीं नाभि मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकेऽवतु ।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरी ॥
क्रीं मे गुह्यं सदापातु कालिकायै नमस्ततः ।
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥
ह्लीं ह्लीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम् ।
काली दशाक्षरीविद्या स्वाहान्ता चोरुयुग्मकम् ॥
ॐ ह्लीं क्रीं में स्वाहा पातु जानुनी कालिका सदा ।
काली हृन्नामविधेयं चतुवर्गफलप्रदा ॥
क्रीं हूं ह्लीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु ।
क्रीं हूं ह्लीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरीमम ॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी ।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥
काली कपालिनी कुरुला कुरुकुल्ला विरोधिनी ।
विपचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषः ॥
नीला घना वलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम् ।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः ॥

रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चा पराजिता॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्रयऽति भूषणाः।
रक्षन्तु स्वायुधेर्दिक्षुः दशकं मां यथा तथा॥
इति ते कथित दिव्य कवचं परमाद्भुतम्।
श्री जगन्मङ्गलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम्॥
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्।
गुरु पूजां विधायाथ विधिवत्प्रपठेत्ततः॥
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्ज्ञानं च वा पुनः।
एतच्छतार्धमावृत्य त्रैलोक्य विजयी भवेत्॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः।
महाकविर्भवेन्मासात् सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥
पुष्पाञ्जलीन् कालिका यै मूलेनैव पठेत्सकृत्।
शतवर्षसहस्रांणां पूजायाः फलमाप्नुयात्॥
भूर्जे विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारणाद्बुधः॥
त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात्।
पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् नानाविद्यानिधिर्भवेत्॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्र स्पर्शवात्ततः।
नाशमायान्ति सर्वत्र कवचस्यास्य कीर्तनात्॥
मृतवत्सा च या नारी वन्ध्या वा मृतपुत्रिणी।
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यास्यधारणात्॥
वह्वपत्या जीववत्साभवत्येव न संशयः।
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः॥
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्।
स्पर्शामुद्धूय कमला वाग्देवी मन्दिरे मुखे॥

पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्दक्षकालिकाम् ॥
शतलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य विद्या न सिद्ध्यति ।
सहस्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥
जपेदादौ जपेदन्ते सप्तवाराण्यनुक्रमात् ।
नोधृत्य यत्र कुत्रापि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥
लिखित्वा स्वर्णपात्रे वै पूजाकाले तु साधकः ।
मूर्ध्नि धार्यं प्रयत्नेन विद्यारत्नं प्रपूजयेत् ॥
॥ इति श्री जगन्मङ्गलकवचम् ॥

श्रीमद्दक्षिणकालिका कवचम्

कैलासशिखरारूढं भैरवं चन्द्रशेखरम् ।
वक्षःस्थले समासीना भैरवी परिपृच्छति ॥
॥ श्री भैरव्युवाच ॥
देवेश परमेशान लोकानुग्रहकारकः ।
कवचं सूचितं पूर्वं किमर्थं न प्रकाशितम् ॥
यदि मे महती प्रीतिस्तवास्ति कुल भैरव ।
कवचं कालिका देव्याः कथयस्वानुकम्पया ॥
॥ श्री भैरव उवाच ॥
अप्रकाश्य मिदं देवि नर लोके विशेष
लक्षवारं वारितासि स्त्री स्वभावाद्धि पृच्छसि
॥ देव्युवाच ॥
सेवका वहवो नाथ कुलधर्म परायणाः ।
यतस्ते त्यक्तजीवाशा शवोपरि चितोपरि ॥

तेषां प्रयोग सिद्धयर्थं स्वरक्षार्थं विशेषतः ।
पृच्छामि बहुशो देव कथयस्व दयानिधे ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

कथयामि श्रृणु प्राज्ञे कालिका कवचं परम् ।
गोपनीयं पशोरग्रे स्वयोनिपपरे यथा ॥

अस्य श्रीकालिका कवचस्य भैरव ऋषिः उष्णिक् छन्दः अद्वैत-रूपिणी श्री दक्षिणकालिका देवता ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्रीं कीलकं सर्वार्थं साधन पुरः सरमन्त्र सिद्धौ विनियोगः ।

सहस्रारे महापद्मे कर्पूरधवलो गुरुः ।
वामोरुस्थिततच्छक्तिः सदा सर्वत्ररक्षत ॥
परमेशः पुरः पातु परापरगुरुस्तथा ।
परमेष्ठी गुरुः पातु दिव्य सिद्धिश्च मानवः ॥
महादेवी सदा पातु महादेवः सदावतु ।
त्रिपुरो भैरवः पातु दिव्यरूपधरः सदा ॥
ब्रह्मानन्दः सदापातु पूर्णदेवः सदावतु ।
चलश्चित्तः सदापातु चेलाञ्चलश्च+ पातुमाम् ॥
कुमारः क्रोधनश्चैव वरदः स्मरदीपनः ।
मायामायावती चैव सिद्धौघाः पातु सर्वदा ॥
विमलो कुशलश्चैव भीमसेनः सुधारकः ।
मीनो गोरक्षकश्चैव भोजदेवः प्रजापतिः ॥
मूलदेवो रन्तिदेवो विघ्नेश्वर हुताशनः ।
सन्तोषः समयानन्दः+ पातु मां मनवा सदा ॥
सर्वेऽप्यानन्दनाथान्तः अम्बान्तां मातरः क्रमात् ।
गणनाथः सदा पातु भैरवः पातु मां सदा ॥

+ पाठान्तरः—(१) चेला श्चपल, (२) चेला लोचन ।
+ पाठान्तरः—स्मरानन्दः ।

वटुको नः सदा पातु दुर्गा मां परिरक्षतु ।
शिरसः पादपर्यन्तं पातु मां घोरदक्षिणा ॥
तथा शिरसि मां काली हृदि मूले च रक्षतु ।
सम्पूर्ण विद्यया देवी सदा सर्वत्र रक्षतु ॥
क्रीं क्रीं क्रीं वदने पातु हृदि हूं हूं सदावतु ।
ह्रीं ह्रीं पातु सदाधारे दक्षिणेकालिके हृदि ॥
क्रीं क्रीं क्रीं पातु मे पूर्वे हूं हूं दक्षे सदावतु ।
ह्रीं ह्रीं मां पश्चिमे पातु हूं हूं पातु सदोत्तरे ॥
पृष्ठेपातु सदा स्वाहा मूला सर्वत्र रक्षतु ।
षडङ्गे युवती पातु षडङ्गेषु सदैव माम् ॥
मन्त्रराजः सदा पातु ऊर्ध्वाधो दिग्विदिक् स्थितः ।
चक्रराजे स्थिताश्चापि देवताः परिपान्तु माम् ॥
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता पातु पूर्वे त्रिकोणके ।
नीला घना वलाका च तथा परत्रिकोणके ॥
मात्रा मुद्रा मिता चैव तथा मध्य त्रिकोणके ।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥
बहिः षट्कोणके पान्तु विप्रचित्ता तथा प्रिये ।
सर्वाः श्यामाः खड्गधरा वामहस्तेन तर्जनीः ॥
ब्राह्मी पूर्वदले पातु नारायणि तथाग्निके ।
माहेश्वरी दक्षदले चामुण्डा रक्षसेऽवतु ॥
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ॥
ऐं ह्रीं असिताङ्गः पूर्वे भैरवः परिरक्षतु ।
ऐं ह्रीं रुरुश्चाजिनकोणे ऐं ह्रीं चण्डस्तु दक्षिणे ॥
ऐं ह्रीं क्रोधो नैर्ऋतेऽव्यात् ऐं ह्रीं उन्मत्तकस्तथा ।
पश्चिमे पातु ऐं ह्रीं मां कपाली वायु कोणके ॥

ऐं ह्रीं भीषणाख्यश्च उत्तरे ऽवतु भैरवः।
ऐं ह्रीं संहार ऐशान्यां मातृणामङ्कगा शिवाः ॥
ऐं हेतुको वटुकः पूर्वदले पातु सदैव माम्।
ऐं त्रिपुरान्तको वटुकः आग्नेय्यां सर्वदावतु ॥
ऐं वह्नि वेतालो वटुको दक्षिणे मां सदाऽवतु।
ऐं अग्निजिह्ववटुको ऽव्यात् नैर्ऋत्यांपश्चिमे तथा ॥
ऐं कालवटुकः पातु ऐं करालवटुकस्तथा।
वायव्यां ऐं एकः पातु उत्तरे वटुको ऽवतु ॥
ऐं भीम वटुकः पातु ऐशान्यां दिशि मां सदा।
ऐं ह्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहान्ताश्चतुः षष्टिचमातरः ॥
ऊर्ध्वाधो दक्षवामार्गे पृष्ठदेशे तु पातु माम्।
ऐं हूं सिंह व्याघ्रमुखी पूर्वे मां परिरक्षतु ॥
ऐं कां कीं सर्पमुखी अग्निकोणे सदाऽवतु।
ऐं मां मां मृगमेषमुखी दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥
ऐं चौं चौं गजराजमुखी नैर्ऋत्यां मां सदाऽवतु।
ऐं में में विडालमुखी पश्चिमे पातु मां सदा ॥
ऐं खौं खों क्रोष्टुमुखी वायुकोणे सदाऽवतु।
ऐं हां हां ह्रस्वदीर्घमुखी लम्बोदर महोदरी ॥
पातुमामुत्तरे कोणे ऐं ह्रीं ह्रीं शिवकोणके।
ह्रस्वजङ्घतालजङ्घः प्रलम्बौष्ठी सदाऽवतु ॥
एताः श्मशानवासिन्यो भीषणा विकृताननाः।
पान्तु मां सर्वदा देव्यः साधकाभीष्टपूरिकाः ॥
इन्द्रो मां पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्या मग्निदेवता।
दक्षे यमः सदा पातु नैर्ऋत्यां नैर्ऋतिश्च माम् ॥
वरुणोऽवतु मां पश्चात् वायुर्मां वायवेऽवतु।
कुबेरश्चोत्तरे पायात् ऐशान्यां तु सदाशिवः ॥

ऊर्ध्वं ब्रह्मा सदापातु अधश्चानन्तदेवता ।
पूर्वादिदिक् स्थिताः पान्तु बज्राद्याश्चायुधाश्चमाम् ॥
कालिका पातु शिरसि हृदये कालिका ऽवतु ।
आधारे कालिका पातु पादयोः कालिका ऽवतु ॥
दिक्षु मा कालिका पातु विदिक्षु कालिका ऽवतु ।
ऊर्ध्वं मे कालिका पातु अधश्च कालिका ऽवतु ॥
चर्मासृङ् मांस मेदाऽस्थि मज्जा शुक्राणि मे ऽवतु ।
इन्द्रयाणि मनश्चैव देहं सिद्धि च मे ऽवतु ॥
आकेशात् पादपर्य्यन्तं कालिका मे सदाऽवतु ।
वियति कालिका पातु पथि नाकालिका ऽवतु ॥
शयने कालिका पातु सर्वकार्येषु कालिका ।
पुत्रान् मे कालिका पातु धनं मे पातु कालिका ॥
यत्र मे संशयाविष्टास्ता नश्यन्तु शिवाज्ञया ।
इतीदं कवचं देवि ब्रह्मलोकेऽपि दुर्लभम् ।
तव प्रीत्या मायाख्यातं गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥
तव नाम्नि स्मृते देवि सर्वज्ञं च फलं लभेत् ।
सर्वं पापः क्षयं यान्ति वाञ्छा सर्वत्र सिद्ध्यति ॥
नाम्नाः शतगुणं स्तोत्रं ध्यानं तस्मात् शताधिकम् ।
तस्मात् शताधिकोमन्त्रः कवचं तच्छताधिकम् ॥
शुचिः समाहितो भूत्वा भक्ति श्रद्धा समन्वितः ।
संस्थाप्य वामभागेतु शक्तिं स्वामि परायणाम् ॥
रक्तवस्त्रपराधीनां शिवमन्त्रधरां शुभाम् ।
या शक्तिः सा महादेवी हररूपश्च साधकः ॥
अन्योऽन्य चिन्तयेद्देवि देवत्वमुपजायते ।
शक्तियुक्तो यजेद्देवीं चक्रे वा मनसापि वा ॥

भोगैश्च मधुपर्काद्यै स्ताम्बूलैश्च सुवासितैः ।
ततस्तु कवचं दिव्यं पठदेकमनाः प्रिये ॥
तस्य सर्वार्थं सिद्धिस्यान्नात्र कार्याविचारणा ।
इदं रहस्यं परमं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥
या सकृत्तुपठद्देवि कवचं देवदुर्लभम् ।
सर्वयज्ञ फलं तस्य भवेदेव न संशयः ॥
संग्रामे च जयेत् शत्रून् मातङ्गानिव केशरी ।
नास्त्राणि तस्य शस्त्राणि शरीरे प्रभवन्ति च ॥
तस्य व्याधि कदाचिन्न दुःखं नास्ति कदाचन ।
गतिस्तस्यैवसर्वत्र बायुतुल्यः सदा भवेत् ॥
दीर्घायुः कामभोगीशो गुरुभक्तः सदाभवेत् ।
अहो कवच माहात्म्यं पठमानस्य नित्यशः ॥
विनापि नययोगेन योगीश समतां व्रजेत् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं पुनः पुनः ॥
नशक्नोमि प्रभावं तु कवचस्यास्य वर्णितम् ॥

॥ इति श्री उत्तरतन्त्रे श्रीमद्दक्षिणा कालिका कवचं समाप्तम् ॥

श्री काली कर्पूर स्तोत्रम्

कर्पूरंमध्यमान्त्यस्वरपरिरहितं
सेन्दुवासाक्षि युक्तं ।
बीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहर बधु
त्रिःकृतं ये जपन्ति ॥
तेषां गद्यानि पद्यानि च मुख कुहरा-
दुल्लसन्त्येव वाचः ॥

स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचि रुचिरे
सर्वसिद्धि गतानाम् ।।१।।

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतो
बीजमन्यन्महेशि ।
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो
वार मेकं कदाचित् ।।
जित्वा वाचामधीशं धनदमपिचिरं
मोह यन्नम्बुजाक्षी ।
वृन्दं चन्द्रार्द्धचूड़े प्रभवति स महा-
घोर शावावतंसे ।।२।।

ईशोवैश्वानरस्थः शशधर विलसद्
वाम नेत्रेण युक्तो ।
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद्विगलित चिकुरे
कालिके ये जपन्ति ।।
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते
वश्यभावं नयन्ति ।
सृक्क्द्वन्द्वास्रधाराद्वयधरवदने
दक्षिणे कालिके ति ।।३।।

ऊर्ध्वं वामे कृपाणं करकमलतले
छिन्नमुण्डं ततोऽधः ।
सव्ये भीतिवरं च त्रिजगदघहरे
दक्षिणे कालिके च ।।
जप्त्वैतन्नाम ये वा तव विमलतनुं
भावयन्त्येतदम्ब ।
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितरदने
सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ।।४।।

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिल्वलितं तत्त्रयं कूर्च युग्मं ।
लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखितदधष्ठ द्वयं योजयित्वा ।।
मातर्ये त्वां जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्त स्वरूपं ।।
ते लक्ष्मी लास्य लीला कमल दलदृशः कामरूपा भवन्ति ।।५।।
प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्त गुह्यं ।
त्वन्नामना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति ।।
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे ।
वाग्देवी देव मेण्डस्रगतिशयलसत् कण्ठि पीनस्तनाढ्ये ।।६।।

गतासूनां बाहु प्रकरकृतकाञ्ची परिलस-
न्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभवन विधात्रीं त्रिनयनाम् ।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत-
प्रसक्तांत्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः ।।७।।
शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थिनिकरैः,
परं सङ्कीर्णायां प्रकटित चितायां हरवधूम् ।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनाति युवतीं,
सदात्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ।।८।।
बदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जडधियो
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् ।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माननमिते,
तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः ।।९।।
समन्तादापीनस्तनजघनहृग्यौवनवती,
रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित चिकुरस्तस्य वशगाः,
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ।।१०।।
समाः स्वस्थीभूतां जपति विपरीतां यदि सदा,
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकाल सुरताम् ।

तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः,
कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धि निवहाः ॥११॥
प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च,
समस्तं क्षित्यादि प्रलय समये संहरचि च ।
अतस्त्वं धाताऽसि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि,
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥१२॥
अनेके सेवन्ते भवदधिक गीर्वाणनिवहान्,
विमूढास्ते मातः किमपि नहि जानन्ति परमम् ।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरञ्च्यादि विबुधैः,
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्दनिरताम् ॥१३॥
धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं,
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ।
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं,
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥१४॥
श्मशानस्थः सुस्थो गलित चिकुरो दिक्पटधरः,
सहस्रस्त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम् ।
जपंस्त्वत्प्रत्येकं मनुमपि तव ध्यान निरतो,
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ॥१५॥
गृहे सम्मार्जन्या परिगलित वीर्यं हि चिकुरं,
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने ।
समुच्चार्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत् कालि सततं,
गजारूढो याति क्षिति परिवृढः सत्कविवरः ॥१६॥
सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो,
पुरोध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
स गंधर्वश्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी-
नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ॥१७॥

त्रिपञ्चारे पोठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां,
महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् ।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो,
जनो यो ध्यायेत्त्वामयि जननि स स्यात् स्मरहरः ॥१८॥
सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते,
परञ्चौष्ट्रं भेषं नरमहिष योश्छागमपि वा ।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां,
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति ॥१६॥
वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो
दिवा मातर्युष्मच्चरण युगलध्यान निपुणः ।
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं,
जपेल्लक्षं स स्यात् स्मरहर समानः क्षितितले ॥२०॥
इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारण जनुः,
स्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम् ।
निशार्द्धे वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठित,
प्रलापस्तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥२१॥
कुरङ्गाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलं,
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ।
रिपुः कारागारं कलयित च तं केलिकलया,
चिरं जीवन्मुक्तः स भवति च भक्तः प्रतिजनुः ॥२२॥

॥इति श्री महाकाल विरचितं स्वरूपाख्यं श्री काली कर्पूर स्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीकाली स्तवः

नमामि कृष्ण रूपिणीं कृष्णाङ्गयष्टिधारिणीम् ।
समग्रतत्त्वसागरमपारपारगह्वराम् ॥१॥
शिवाप्रभां समुज्ज्वलां स्फुरच्छशाङ्कशेखराम् ।
ललाटरत्नभास्करां जगत्प्रदीप्तिभास्कराम् ॥२॥
महेन्द्रकश्यपार्चितां सनत्कुमारसंस्तुताम् ।
सुरासुरेन्द्रवन्दितां यथार्थनिर्मलाद्भुताम् ॥३॥
अतर्क्यरोचिरूर्जितां विकारदोषवर्जिताम् ।
मुभुक्षुभिर्विचिन्तितां विशेषतत्त्वसूचिताम् ॥४॥
मृतास्थिनिर्मितस्रजां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम् ।
सुशुद्धतत्त्वतोषणां त्रिवेदपारभूषणाम् ॥५॥
भुजङ्गहारहारिणीं कमालखड्गधारिणीम् ।
सुधार्मिकोपकारिणीं सुरेन्द्रवैरिघातिनीम् ॥६॥
कुठारपाशचापिनीं कृतान्तकामभेदिनीम् ।
शुभां कपालमालिनीं सुवर्णकल्पशाखिनीम् ॥७॥
श्मशानभूमिवासिनीं द्विजेन्द्रमौलिभासिनीम् ।
तमोऽन्धकारयामिनीं शिवस्वभाव कामिनीम् ॥८॥
सहस्रसूर्य्यराजिकां धनञ्जयोग्रकारिकाम् ।
सुशुद्ध काल कन्दलां सुभृङ्गवृन्दञ्जुलाम् ॥९॥
प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीम् ।
स्वकर्मकारणे गतिं हरप्रियाञ्च पार्वतीम् ॥१०॥
अनन्तशक्तिकान्तिदां यशोऽर्थभुक्तिमुक्तिदाम् ।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम् ॥११॥
जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देवि पाहिमाम् ।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यमोक्षतः ॥१२॥
सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः ।
जराः परे शिवेऽधुना प्रसाधि मां करोमि किम् ॥१३॥

अतीव मोहितात्मनो वृथा विचेष्टितस्य मे।
कुरु प्रसादितं मनो यथास्मि जन्मभञ्जनः ।।१४।।
तथा भवन्तु तावका यथैव घोषितालकाः।
इमां स्तुतिं ममेरिताँ पठन्ति कालिसाधकाः।
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोहगह्वरे ।।१५।।

।।इति श्री कालीस्तवम्।।

श्री कालिकाहृदय स्तोत्रम्

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्री दक्षिणकालिकाम्बा हृदयस्तोत्रमहामन्त्रस्य महाकाल-भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं, महाषोढा स्वरूपिणी महाकाल महिषी श्री दक्षिणाकालिकाम्बादेवता प्रसादात् धर्मार्थकाममोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

।। करादि षडङ्गन्यास ।।

ॐ क्रां ॐ क्रीं ॐ क्रूं ॐ क्रैं ॐ क्रौं ॐ क्रः—इत्यनेन कर षडङ्गः।

।। ध्यानम् ।।

छुच्छ्यामां कोटराक्षीं प्रलयघनघटां घोर रूपां प्रचण्डा।
दिग्वस्त्रां पिङ्गकेशीं डमरुमथ श्रणीं खड्गपाशाभयानि ।।
नागंघंटां कपालं करसरसिरुहां कालिकां कृष्णवर्णां।
ध्यायामि ध्येयमानां सकल सुखकरीं कालिकां तां नमामि ।।

।। अथहृदयम् ।।

ॐ क्रीं क्रीं क्रूं हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ हंसः सोहं ॐ हंसः ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी। अं आं रूपयोग्रेण योग-

सूत्रग्रंन्थि भेदय भेदय ईं ईं रुद्र ग्रंन्थि भेदय भेदय उं ऊं विष्णु ग्रंन्थि भेदय भेदय ॐ अं क्रीं आं क्रीं ईं क्रों ईं क्रों उं हूं ऊं हूं ऋं ह्लीं ऋं ह्लीं लृं द लॄं क्षि एं ग्रे ऐं कालि ओं के औं क्रीं ॐ अं क्रीं क्रीं अः हूं हूं ह्लीं ह्लीं स्वाहा महाभैरवी हूं हूं महाकालरूपिणी ह्लीं ह्लीं प्रसीद प्रसीद-रूपिणी ह्लीं ह्लीं ठः ठः क्रीं अनिरुद्धा सरस्वती हूं हूं ब्रह्मविष्णु ग्रह-बन्धनी रुद्रग्रहबन्धनी गोत्रदेवता ग्रह बन्धनी आधि व्याधि ग्रहबन्धनी सन्निपात ग्रहबन्धनी सर्वदुष्ट ग्रहबन्धनी सर्वदानव ग्रहबन्धनी सर्वदेव ग्रहबन्धनी सर्वगोत्रदेवता ग्रहबन्धनी सर्वग्रहान् नेडि नेडि विक्पट विक्पट क्रीं कालिके ह्लीं कपालिनि हूं कुल्ले ह्लीं कुरुकुल्ले हूं विरो-धिनि ह्लीं विप्रचित्तें स्फ्रें हौं उग्रे उग्रप्रभे ह्लीं उं दीप्ते ह्लीं घने हूं त्विषे ह्लीं नीले च्लूं च्लूं नीलपताके ॐ ह्लीं घने घनाशने ह्लीं बलाके ह्लीं ह्लीं ह्लीं मिते आसिते असित कुसुमोपमे हूं हूं हूंकारि हां हां हांकारि कां कां काकिनि रां रां राकिनि लां लां लाकिनि हां हां हाकिनि क्षिस् क्षिस् भ्रम भ्रम उत्त उत्त तत्त्वविग्रहे अरूपे अमले विमले अजिते अपराजिते क्रीं स्त्रीम् स्त्रीम् हूं हूं फ्रें फ्रें दुष्टविद्राविणी आं ब्राह्मीं ईं माहेश्वरी ऊं कौमारी ऋं वैष्णवी लॄं वाराही ऐं इन्द्राणी ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डायै औं महालक्ष्यै अः हूं हूं पंचप्रेतोपरिसंस्थितायै शवालंका-रायै चितान्तस्थायै भैं भैं भद्रकालिके दुष्टान् दारय दारय दारिद्रं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु विरूपाक्षी विरूपाक्ष वरदायिनि अष्टभैरवीरूपे ह्लीं नवनाथात्मिके ॐ ह्लीं ह्लीं सत्ये रां रां राकिनि लां लां लाकिनि हां हां हाकिनि कां कां काकिनि क्षिस् क्षिस् वद् वद् उत्त उत्त तत्त्वविग्रहे अरूपे स्वरूपे आद्यमाये महाकालमहिषि ह्लीं ह्लीं ह्लीं ॐ ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्लीं ह्लीं महामाये दक्षिण कालिके ह्लीं ह्लीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं मां रक्ष रक्ष मम पुत्रान् रक्ष रक्ष मम स्त्रीं रक्ष रक्ष ममोपरि दुष्टबुद्धि दुष्ट प्रयोगान् कुर्वन्ति कारयन्ति करिष्यन्ति तान् हन हन मम मन्त्रसिद्धि कुरु कुरु दुष्टान् दारय दारय

दारिद्रं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु आत्मतत्त्वं देहि देहि हंसः सोहं ॐ क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ सप्तकोटि स्वरूपे आद्ये आद्य-विद्ये अनिरुद्धा सरस्वति स्वात्मचैतन्यं देहि देहि मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ मम मनोरथं कुरु कुरु स्वाहा ।

।। इतिहृदयम् ।।

।। फलश्रुतिः ।।

इदन्तु हृदयं दिव्यं महापापौघनाशनम् ।
सर्वदु:खोपशमनं सर्वव्याधि विनाशनं ।।
सर्वशत्रु क्षयङ्करं सर्वसङ्कट नाशनं ।
ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयं गुर्वङ्गनागमम् ।।
सर्वशत्रुहरं त्येव हृदयस्य प्रसादतः ।
भौमवारे च संक्रांतौ अष्टम्यां रविवासरे ।।
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च शनिवारे च साधकः ।
हृदयानेन संकीर्त्य किं न साधयते नरः ।।
अप्रकाश्यमिदं देवि हृदयं देव दुर्लभम् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।।
प्रकाशयति देवेशि हृदयं मन्त्रविग्रहम् ।
प्रकाशात् सिद्धहानिः स्यादवश्यंनरकं व्रजेत् ।।
दारिद्रं तु चतुर्दश्यां योषितः संगमैः सह ।
वारत्रयं पठेद्देवि प्रभाते साधकोत्तमः ।।
षण्मासेन महादेवि कुबेर सदृशो भवेत् ।
विद्यार्थी प्रजपेन्मन्त्रं पौर्णिमायां सुधाकरे ।।
सुधीसंवर्त्तनां ध्यायेद्देवीमावरणैः सह ।
शतमष्टोतरं मन्त्रं कविर्भवति वत्सरात् ।।
अर्कवारेऽर्क बिम्बस्थां ध्यायेद्देवी समाहितः ।
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं देवतादर्शनं कलौ ।।

भवत्येव महेशानि कालीमन्त्र प्रभावतः ।
मकारपञ्चकं देवि तोषयित्वा यथाविधिः ।।
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं इदन्तु हृदयं पठेत् ।
सकृदुच्चारमात्रेण पलायन्ते महापदः ।।
उपपातकदौर्भाग्य शमनं भुक्ति मुक्तिदम् ।
क्षयरोगाग्निकुष्टघ्नं मृत्युसंहार कारकम् ।।
सप्तकोटिमहामन्त्र पारायण फलप्रदम् ।
कौट्यश्वमेधफलदं जरामृत्यु निवारकम् ।।
कि पुनर्बहुनोक्तेन सत्यं सत्यं महेश्वरी ।
मद्यमांसासवैर्देवि मत्स्यमाक्षिकपायसैः ।।
शिवाबलिं प्रकर्तव्यामिदन्तु हृदयं पठेत् ।
इहलोके भवेद्राजा मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ।।
शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः ।
संवत्सर प्रयोगेन साक्षात् शिवमयो भवेत् ।।
महादारिद्र्य निर्मुक्तं शापानुग्रहणे क्षमः ।
काशीयात्रा सहस्राणि गंगास्नान शतानि च ।।
ब्रह्महात्यादिभिर्पापैः महापातक कोटयः ।
सद्यः प्रलयतां याति मेरुमन्दिर सन्निभम् ।।
भक्तियुक्तेन मनसा साधयेत् साधकोत्तमः ।
साधकाय प्रदातव्यं भक्तियुक्ताय चेतसे ।।
अन्यथा दापयेद्यस्तु स नरो शिवहा भवेत् ।
अभक्ते वञ्चके धूर्ते मूढे पण्डितमानिने ।।
न देयं यस्य कस्यापि शिवस्य वचः यथा ।
इदं सदाशिवेनोक्तं साक्षात्कारं महेश्वरी ।।
परमं पदमासाद्य खेचेरोजायतेनरः ।।

।। इति श्री काली हृदयम् ।।

महा कौतूहल दक्षिणकाली हृदय स्तोत्रम्

॥ श्री महाकाल उवाच ॥

महाकौतूहलं स्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम् ।
श्रृणु प्रिये महागोप्यं दक्षिणाय: श्रुणोपितम् ॥
अवाच्येमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितं ।
अन्येभ्य: कुरु गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे ॥

॥ श्री देव्युवाच ॥

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा ।
तत्सर्वं कथ्यतां शंभो दयानिधि महेश्वर: ॥

॥ श्री महाकाल उवाच ॥

पुरा प्रजापतेः शीर्षच्छेदनं च कृतावहन् ।
ब्रह्महत्या कृतेः पापैर्भैरवंच ममागतम् ॥
ब्रह्महत्या विनाशाय कृतं स्तोत्रं मयाप्रिये ।
कृत्या विनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम् ॥

ॐ अस्य श्री दक्षिणकाल्या हृदय स्तोत्रं मंत्रस्य श्री महाकाल ऋषिरुष्णिक्छन्द: श्री दक्षिण कालिका देवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्ति: नम: कीलकं सर्वत्र सर्वदा जपे विनियोग: ।

ॐ क्रां हृदयाय नम: । ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रै कवचाय हुं, ॐ क्रौ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्र: अस्त्राय फट् । इति हृदयादि न्यास: ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीं ।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥
नीलोत्पलदल प्रख्यां शत्रुसंघ विदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥
विभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥
षशासन स्थितां देवीं मुण्डमाला विभूषिताम् ॥

॥ अथ हृदय स्तोत्रम् ॥

ॐ कालिका घोररूपाढ्यां सर्व काम फलप्रदा ।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥
ह्लीं ह्लीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ।
तव स्नेहान्मया ख्यातं न देयं यस्य कस्यचित् ॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके ।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥
नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृत शेखराम् ।
जटाजूटाञ्च संचिन्त्य महाकाल समीपगाम् ॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः ।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं सत्यं वरानने ॥
यन्त्रं श्रृणु परं देव्याः सर्वार्थ सिद्धिदायकम् ।
गोप्यं गोप्यतरं गोप्यं गोप्यं गोप्यतरं महत् ॥
त्रिकोणं पञ्चकं चाष्ट कमलं भूपुरान्वितम् ।
मुण्ड पंक्तिं च ज्वालं च काली यन्त्रं सुसिद्धिदम् ॥
मन्त्रं तु पूर्व कथितं धारयस्व सदा प्रिये ।
देव्या दक्षिण काल्यास्तु नाम मालां निशामय ॥
काली दक्षिण काली च कृष्णरूपा परात्मिका ।
मुण्डमाला विशालाक्षी सृष्टि संहारकारिका ॥
स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका ।
भगसर्पि पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा ॥
आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका ।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥
एतानि नाममाल्वानि ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥
ॐ कालीं कालहरां देवीं कङ्काल बीज रूपिणीम् ।
कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥

कामहंत्री कूर्ममांसप्रिया कूर्मादि पूजिता ।
केलिनी करकी कारा करकूर्म्म निषेविनी ॥९॥
कटकेशरमध्यस्था कटकी कटकार्चिता ।
कटप्रिया कटरता कटकूर्म्म निषेविनी ॥१०॥
कुमारी पूजनरता कुमारीजनसेविता ।
कुलाचार प्रिया कौलप्रिया कुलनिषेविनी ॥११॥
कुलीना कुलधर्मज्ञा कुलभीति-विमर्दिनी ।
कामधर्मप्रिया कामा नित्याकामस्वरूपिणी ॥१२॥
कामरूपा कामहरा काममन्दिरपूजिता ।
कामागारस्वरूपा च कामाख्या कामभूषिता ॥१३॥
क्रियाभक्तिरता कामा काञ्चिनी चैव कामदा ।
कोलपुष्पाम्बरा कोला निष्कोला कलहान्तिका ॥१४॥
कौषिकी केतिकी कुम्भी कुन्तिला दिविभूषिता ।
इत्येवं शृणु चार्व्वाङ्गि रहस्यं सर्वं मङ्गलम् ॥१५॥
यः पठेत् परमा भक्त्या स शिवो नाऽत्र संशयः ।
शतनामप्रसादेन किं न सिध्यन्ति भूतले ॥१६॥
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च वासवाद्या दिवौकसः ।
सहस्रपठनाद्देवि सर्वे च विगतज्वराः ॥१७॥
नास्ति नास्ति महामाये तन्त्रमध्ये कथञ्चन ।
कृपया च विना देवि विना भक्त्या महेश्वरी ॥१८॥
प्रसन्ना स्यात् करालास्या स्तवपाठाद्दिगम्बरा ।
सत्यं वच्मि महेशानि अतः परतरं न हि ॥१९॥
न गोलोके न वैकुण्ठे न च कैलाश मन्दिरे ।
अतः परतरा विद्या स्तोत्रं कवचमेव च ॥२०॥
त्रिलोकेषु जगद्धात्री नास्ति नास्ति कदाचन ।
रात्रावपि दिवाभागे सन्ध्यायां वा सुरेश्वरी ॥२१॥

प्रजपेत् भक्तिभावेन रहस्यं स्तवमुत्तमम् ।
शतनामप्रसादेन मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥२२॥
कुजवारे चतुर्दश्यां निशाभागे पठेत्तु यः ।
स कृती सर्वशास्त्रज्ञः स कुलीनः सदा शुचिः ॥२३॥
सकुलज्ञः सकालज्ञः स धर्म्मज्ञो महीतले ।
प्राप्नोति देवदेवेशि सत्यं परम सुन्दरी ॥२४॥
स्तवपाठाद् वरारोहे कि न सिध्यन्ति भूतले ।
आणिमाद्यष्टसिद्धिश्च भवत्येव न संशयः ॥२५॥
रात्रौ बिल्वतलेऽश्वत्थमूले ऽपराजितातले ।
प्रपठेत् कालिकास्तोत्रं यथाभक्त्या महेश्वरी ॥
शतवार प्रपण्नान्मंत्रसिद्धि भवेद्ध्रुवम् ॥२६॥

॥ इति श्री कालीशत नामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री काली अष्टोत्तरशत नाम स्तोत्रम्

श्री भैरव उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने ।
यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

स्तोत्र

काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी ।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरव पूजिता ॥
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीय स्वभाविनी ।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी ॥
कस्तूरिरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी ।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥
कुलकान्ता करालस्या कामार्त्ता च कलावती ।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥

कुलजा कुलमन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रीं रूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥
कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥
कलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी ॥
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी ॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी ॥
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी ॥
कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलासवासिनी।
कात्यायनी कार्य्यंकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी ॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कङ्किनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया ॥
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कलाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥
कान्तारवासि कान्तिश्च कठिना कृष्णवल्लभा।

फलश्रुति

इति ते कथितम् देवि गुह्याद्गुह्यतरम् परम्।
प्रपठेद्य इदम् नित्यम् कालीनाम शताष्टकम् ॥

त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्यासाध्यम् न विद्यते ।
प्रातः काले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि ॥
यः पठेत्परया भक्त्या कालीनाम शताष्टकम् ।
कालिका तस्य गेहे च संस्थानम् कुरुते सदा ॥
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः ।
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये ॥
शताष्टकम् जपेन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम् ।
कालीं संस्थाप्य विधिवत्श्रुत्वा नामशताष्टकैः ॥
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः ॥

श्री कालिका सहस्रनाम स्तोत्रम्

॥ श्री शिव उवाच ॥

कथितोऽयं महामन्त्रः सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः ।
यामासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्यपदमुत्तमम् ।
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त विधिना भवान् ।
कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्यविजिगीषया ॥

॥ श्री राम उवाच ॥

प्रसन्नो यदि मे देव परमेश पुरातन ।
रहस्यं परमं देव्याः कृपया कथय प्रभो ॥
विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिं ।
विना गंधं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां ॥
प्राणायामं विना ध्यानं विना भूतविशोधनम् ।
विनादानं विना जापं येन काली प्रसीदति ॥

॥ शिव उवाच ॥

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंश समुद्भवः ।
भक्तानामपि भक्तोऽसि त्वमेव साधयिष्यसि ॥

देवीं दानव कोटिघ्नीं लीलया रुधिर प्रियाम् ।
सदा स्तोत्र प्रियामुग्रां कामकौतुक लालसां ।।
सर्वदानन्द हृदयामासवोत्सव मानसाम् ।
माध्वीकमत्स्यमांसानुरागिणीं वैष्णवीं पराम् ।।
श्मशानवासिनीं प्रेतगण नृत्यमहोत्सवाम् ।
योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम् ।।
तामुग्रकालिकां राम प्रसीदयितुमर्हसि ।
तस्या: स्तौत्रं परं पुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् ।।
तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ।
गोपनीयं प्रयत्नेत पठनीयं परात्परम् ।।
यस्यैक कालपठनात् सर्वे विघ्ना: समाकुला: ।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वत: ।।
गद्यपद्यमयी वाणीं तस्य गङ्गाप्रवाहवत् ।
तस्यदर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभा गता: ।।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्नसंशय: ।
राजानो ऽपि च दासत्वं भजंते किं परे जना: ।।
निशीथे मुक्तकेशस्तु: नग्न: शक्ति समाहित: ।
मनसा चिन्तयेत् कालीं महाकालेन चार्चितां ।।
पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम् ।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते ।।
यथा ब्रह्ममृतैर्ब्रह्मकुसुमै: पूजिता परा ।
प्रसीदति तथानेन स्तुता काली प्रसीदति ।।

।। विनियोग: ।।

अस्य श्री दक्षिण कालिका सहस्रनाम स्तोत्रस्य महाकालभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्द: श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग: ।

॥ कालिका सहस्रनाम स्तोत्र ॥

श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी ।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी ।
कालभैरव भार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरूपिणी ।
कस्तूरीरस लिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वर गामिनी ॥
ककारवर्णं सर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी ।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती ॥
कांता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी ।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गति नाशिनी ॥
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी ।
कृशाङ्गी कुलिशांगी क्रीं क्रीङ्कारी कमला कला ॥
करालास्या कराली च कुलकांतापराजिता ।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला ॥
नीलाघना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता ।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला ॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहका ।
वज्राङ्गी वज्रकङ्काला नृमुण्डस्रग्विणी शिवा ॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त विभूषणा ।
रक्तचन्दन सिक्ताङ्गी सिंदूरारुण मस्तका ॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा ।
महादंष्ट्रा महामाया सुदन्ती युगदन्तुरा ॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेताम्बुजेक्षणा ॥

अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ।
प्रफुल्लपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी ।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी ॥
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा ।
प्रेतदेहाकर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ॥
प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता ।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी ॥
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य विभूषणा ।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाशिनी ॥
नृमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नतस्तनी ॥
दिगम्बरी महारावा सृक्कान्तरक्तवाहिनी ।
घोररावा शिवासंगा निःसंगा मदनातुरा ॥
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धुनिवासिनी ।
अभिमत्तामहामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी ॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा ।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा ॥
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी ।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी ॥
जगज्जीववती हैमवती माया महालया ।
नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी ॥
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी ।
मोहरात्रि महारात्रि दारुणाभा सुरासुरी ॥
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनीजरा ।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥

श्रुतिस्मृति महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी ।
चिंतांचिता स्वधा स्वाहा निद्रातंद्रा च पार्वती ।।
अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्यातपस्विनी ।
गंङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा ।।
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिधृंतिः क्षमा ।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती ।।
स्रोतस्वती स्रोतवती मातंगी विजया जया ।
नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्य निवासिनी ।।
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी ।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी ।।
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी ।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ।।
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा ।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया ।।
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी ।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चन्द्रस्वरूपिणी ।।
सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान् ।
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ।।
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा ।
सर्वज्ञा सिद्धिवा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा ।।
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी . तामसी दया ।
तमिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी ।।
चार्वङ्गी चंचला लोलजिह्वा चारु चरित्रिणी ।
त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती ।।
सत्त्ववती. धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी ।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा ।।

भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती ।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया ।।
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा ।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा ।।
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी ।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ।।
अम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा ।
शङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ।।
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी ।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी ।।
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता ।
जटिनी बिम्बिनी नीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका ।।
बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्रमाथिनी ।
महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका ।।
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परहस्तिनी ।
रक्तप्रिया मांसरुचिरा सवासरक्तमानसा ।।
गलच्छोणितमुण्डालिकण्ठमाला विभूषणा ।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी ।।
व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलिनी सिंहवाहिनी ।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभाविनी ।।
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ।
सुभ्रूर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ।।
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी ।
अमोघा ऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवश्यनुवादिनी ।।
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालमुख्य सुरान्तका ।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ।।

मदिरा मदिरान्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी ।
सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ।।
जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जयशालिनी ।
सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभकारिणी ।।
शिवदूती भूतिमती विभूतिर्भीषणानना ।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ।।
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपतिप्रिया ।
सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठाकाष्ठा प्रतिष्ठिता ।।
धनिष्ठा धनदा धन्यावसुधा स्वप्रकाशिनी ।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ।।
महाकुलीना निष्कामा सकामा कमजीवना ।
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी ।।
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ।
कार्त्तिकी कीर्त्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा ।।
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ।
त्रैलोक्य जननी हृष्टा मनोज्ञा मधुरूपिणी ।।
तडाग निम्नजठरा शुष्कमांसास्थि मालिनी ।
आवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्यपावनीश्वरी ।।
व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्त्तिः शर्वरी भीमनादिनी ।
क्षेमङ्करी शंकरी च सर्वसम्मोह कारिणी ।।
श्रद्धंतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ।
अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमङ्गला ।।
सर्वप्रियंकरी भोग्य धरणी पिशिताशना ।
भयङ्करी पापहरा निष्कलङ्का वशङ्करी ।।
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रान्या वायुवेगिनी ।
सहस्रसूर्यसकाशा चन्द्रकोटि समप्रभा ।।

वह्निमण्डलसंस्था च सर्वतत्त्व प्रतिष्ठिता।
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याधिदेवता॥
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका।
ईज्या पूज्या विभाभूतिः सत्कीतिर्ब्रह्मरूपिणी॥
रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः।
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी॥
ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी।
आधाररूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी॥
अज्ञा प्रज्ञापूर्णमनाश्चन्द्र मुख्यनुकूलिनी।
वावदूका निम्ननाभिः सत्या संध्या दृढव्रता॥
आन्वीक्षिकी दंडनीति स्त्रयी त्रिदिव सुन्दरी।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी॥
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिंगिनी॥
भुक्ति सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा।
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्वनिवासिनी॥
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा॥
पिंगला कपिला जिह्वारसज्ञा रसिका रसा।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तका॥
पाञ्चाली रुक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका।
अमृतातुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी॥
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीर सुन्दरी।
उग्रतारा यशोदाख्या दैवकी देवमानिता॥
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका।
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा॥

योगेश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दुरूपिणी ।
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरी प्रभा ॥
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशंडी प्रकटा तिथिः ।
द्रविणी गोपनी माया कामबीजेश्वरी क्रिया ॥
शांभवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा ।
अमेय विक्रमा क्रूरा सम्पत्शाला त्रिलोचना ॥
सुस्थीहव्य वहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा ।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणीधरा ॥
त्रिखंडा बोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ।
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनिरूपिणी ॥
अनंगकुसुमानंगमेखलानंगरूपिणी ।
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी ॥
षडंगयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी ।
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्गरूपिणी ॥
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ॥
त्रिकोण निलया नित्या परमामृतरञ्जिता ।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी ॥
त्वरिता भक्ति संसक्ता भक्तवश्या सनातनी ।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशङ्करी ॥
सर्वसौन्दर्य निलया सर्वसौभाग्य शालिनी ।
सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्य निरूपिणी ॥
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रत चारिणी ।
कुमारीभक्ति सुखिनी कुमारीरूपधारिणी ॥
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदा प्रिया ।
कुमारी सेवकासंगा कुमारी सेवकालया ॥

आनन्दभैरवी बालाभैरवी बटुभैरवी ।
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी ॥
महाभैरव पत्नी च परमानन्द भैरवी ।
सुधानन्दाभैरवी च उन्मादानन्द भैरवी ॥
मुक्तानन्दा भैरवी च तथा तरुण भैरवी ।
ज्ञानानन्दाभैरवी च अमृतानन्द भैरवी ॥
महाभयङ्करी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी ।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ॥
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी ।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥
महांकुश स्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा ।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुर सुन्दरी ।
सिन्दूर पूर रुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥
सर्वाङ्ग सुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयिणी ।
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी ॥
जावायावकसिन्दूर रक्तचन्दनरूपधृक् ।
चामरी बालकुटिलनिर्मला श्यामकेशिनी ॥
वज्रमौक्तिक रत्नाढ्य किरीट मुकुटोज्ज्वला ।
रत्नकुण्डल संसक्त स्फुरद्गण्ड मनोरमा ॥
कुंजरेश्वर कुम्भोत्थ मुक्तारञ्जित नासिका ।
मुक्ताविद्रुम माणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥
सूर्यकान्तेन्दु कान्ताढ्यः स्पर्शाश्मकंठभूषणा ।
बीजपूरस्फुरद्बीज दन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥
कामकोदण्डकाभुग्नभ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ।
मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ॥

मनोज्ञ शष्कुली कर्णा हंसीगति विडम्बिनी ।
पद्मरागांगद ज्योतिर्दोश्चतुष्कप्रकाशिनी ।।
नानामाणि परिस्फूर्जच्छुद्ध कांचन-कंकना ।
नागेन्द्रदन्त निर्माणवलयांकित पाणिनी ।।
अंगुरीयक चित्रांगी विचित्रं क्षुद्रघण्टिका ।
पट्टम्बरपरीधाना कलमञ्जीर शिंजिनी ।।
कर्पूरागरुकस्तूरी कुंकुम द्रव लेपिता ।
विचित्र रत्ना पृथिवी कल्प शाखितलास्थिरता ।।
रत्नद्वीप स्फुरद्रक्त सिहासन विलासिनी ।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी ।।
सहस्रदलपद्मान्तश्चन्द्रमण्डलवर्त्तिनी ।
ब्रह्मरूपशिव क्रोड नानासुखविलासिनी ।।
हर विष्णु विरिंचीन्द्र ग्रहनायक सेविता ।
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी ।।
मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्द मेखला ।
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता ।।
माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी ।
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपा सुमेखला ।।
गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव सुभङ्करी ।
पिङ्गला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गन्धिनी ।।
आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद् योनिरयोनिजा ।
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी ।।
भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी ।
लिंगाख्यां चैव लिंगेशी त्रिपुराभैरवी तथा ।।
लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरूपधक् ।
लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती ।।

भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा ।
गृध्ररूपा शिवारूपा चक्रिणी चक्ररूपधृक् ।
लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया लिंगनिवासिनी ॥
लिंगस्था लिंगिनी लिंगरूपिणी लिंगसुन्दरी ।
लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा ॥
लिंगनामसदानन्दा भगनामसदागतिः ।
लिंगमालाकण्ठभूषा भगमाला विभूषणा ॥
भगलिंगामृतप्रीता भग लिंग स्वरूपिणी ।
भगलिंगस्य रूपा च भगलिंग सुखावहा ॥
स्वयम्भू कुसुमप्रीता स्वयम्भू कुसुमार्चिता ।
स्वयम्भू कुसुमप्राणा स्वयम्भू पुष्पतर्पिता ॥
स्वयम्भू पुष्प घटिता स्वयम्भू पुष्पधारिणी ।
स्वयम्भू पुष्पतिलका स्वयम्भू पुष्प चर्चिता ॥
स्वयम्भू पुष्पनिरता स्वयम्भू कुसुमग्रहा ।
स्वयम्भू पुष्पयज्ञांशा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ॥
स्वयम्भू पुष्पनिचिता स्वयम्भू कुसुमप्रिया ।
स्वयम्भू कुसुमादान लालसोन्मत्तमानसा ॥
स्वयम्भू कुसुमानन्दलहरी स्निग्धदेहिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमाधारा स्वयम्भू कुसुमाकुला ।
स्वयम्भू पुष्पनिलया स्वयम्भू पुष्पवासिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमस्निग्धा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ।
स्वयम्भू पुष्पकरिणी स्वयम्भू पुष्पवाणिका ॥
स्वयम्भू कुसुमध्याना स्वयम्भू कुसुम प्रभा ।
स्वयम्भू कुसुमज्ञाना स्वयम्भू पुष्पभागिनी ॥
स्वयम्भू कुसुमोल्लासा स्वयम्भू पुष्पवर्षिणी ।
स्वयम्भू कुसुमोत्साहा स्वयम्भू पुष्परूपिणी ॥

स्वयम्भू कुसुमोन्मादा स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी ।
स्वयम्भू कुसुमाराध्या स्वयम्भू कुसुमोद्भवा ॥
स्वयम्भू कुसुमव्याग्रा स्वयम्भू पुष्पपूर्णिता ।
स्वयम्भू पूजक प्रज्ञा स्वयम्भू होतृमातृका ॥
स्वयम्भू दातृरक्षित्री स्वयम्भू रक्तारिका ।
स्वयम्भू पूजकग्रस्ता स्वयम्भू पूजकप्रिया ॥
स्वयम्भू वन्दकाधारा स्वयम्भू निन्दकान्तिका ।
स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा स्वयम्भू प्रंदपुत्रिणी ॥
स्वयम्भू प्रदसस्मेरा स्वयम्भू च शरीरिणी ॥
सर्वकालोद्भव प्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका ।
सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवोदभवा ॥
कुण्डपुष्प सदा प्रीतिगोल पुष्पसदारतिः ।
कुण्डगोलोद्भव प्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका ॥
स्वम्यभू वा शिवा धात्री पावनी लोकपावनी ।
कीर्तिर्यशस्विनी मेघा विमेधा शुक्रसुन्दरी ॥
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चन्दमण्डला ।
सूक्ष्मा सूक्ष्मा वलाका च वरदा भयनाशिनी ॥
वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्ध विनाशिनी ।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी ॥
दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थ प्रकाशिनी ।
दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्वकार्य विनाशिनी ॥
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धु निवासिनी ।
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजा सदारतिः ॥
शुक्रपूज्या शुक्रहोमा सन्तुष्टा शुक्रवत्सला ।
शुक्रमूर्त्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी ॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्र संस्पृहा शुक्रसुन्दरी ।
शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्याति शुक्रिणी ॥

महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टि विधायिनी ।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दक वन्दिता ॥
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका ।
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा ॥
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दक नाशिनी ।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्वत् शुक्राकर्षण कारिणी ॥
शारदा साधक प्राणा साधकासक्तमानसा ।
साधकोत्तम सर्वस्वा साधकाऽभक्तरक्तपा ॥
साधकानन्द सन्तोषा साधकानन्द कारिणी ।
आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मस्वरूपिणी ॥
त्रिकूटस्था पञ्चकूटा सर्वकूटशरीरिणी ।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमाला विधायिनी ॥
इति श्री कालिका नाम सहस्रं शिवभाषितम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षात्महापातक नाशनम् ॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
लभते गाणपत्यं स यः पठेत् साधकोत्तमः ॥
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदथ ।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः स याति कालिकापुरम् ॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिम्मानवः स्मरेत् ।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमांगतिम् ॥
बंध्वा वा काकबंध्या वा मृतवत्सा च यांगना ।
श्रुत्या स्तोत्रमिदं पुत्रान् लभते चिरजीविनः ॥
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
देवीपाद प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम् ॥

॥ इति श्रीकालिका कुल सर्वस्वे कालिका सहस्र नाम स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

श्री काली सहस्राक्षरी

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा शुचिजाया महापिशाचिनी दुष्टचित्तनिवारिणी क्रीं कामेश्वरी वीं हं वाराहिके ह्रीं महामाये खं खः क्रोधाधिपे श्रीमहालक्ष्यै सर्व-हृदयरञ्जनि वाग्वादिनीविधे त्रिपुरे हंस्त्रि हसकहलह्रीं हस्त्रैं ॐ ह्रीं क्लीं मे स्वाहा ॐ ॐ ह्रीं ईं स्वाहा दक्षिण कालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा खड्गमुण्डधरे कुरकुल्ले तारे ॐ ह्रीं नमः भयोन्मादिनी भयं मम हन हन पच पच मथ मथ फ्रें विमोहिनी सर्वदुष्टान् मोहय मोहय हयग्रीवे सिंहवाहिनी सिंहस्थे अश्वारूढे अश्वमुरिपु विद्राविणी विद्रावय मम शत्रून् मां हिंसितुमुद्यतास्तान् ग्रस ग्रस महानीले वलाकिनी नील-पताके क्रें क्रीं क्रें कामे संक्षोभिणी उच्छिष्टचाण्डालिके सर्वजगद्व-शमानय वशमानय मातङ्गिनी उच्छिष्टचाण्डालिनी मातङ्गिनी सर्व-शङ्करी नमः स्वाहा विस्फारिणी कपालधरे घोरे घोरनादिनी भूर शत्रून् विनाशिनी उन्मादिनी रों रों रों रों ह्रीं श्रीं हसौः सौं वद वद क्लीं क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं क्रीं कति कति स्वाहा काहि काहि कालिके शम्बर-घातिनि कामेश्वरी कामिके ह्रं ह्रं क्रीं स्वाहा हृदयालये ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा ठः ठः ठः क्रीं ह्रं ह्रीं चामुण्डे हृदयजनाभि असूनवग्रस ग्रस दुष्टजनान् अमून् शंखिनी क्षतजर्चचितस्तने उन्नतस्तने विष्टंभकारिणि विद्याधिके श्मशानवासिनी कलय कलय विकलय विकलय कालग्राहिके सिंहे दक्षिणकालिके अनिरुद्धये ब्रूहि ब्रूहि जगच्चित्रिरे चमत्कारिणि हं कालिके करालिके घोरे कह कह तडागे तोये गहने कानने शत्रुपक्षे शरीरे मर्दिनि पाहि पाहि अम्बिके तुभ्यं कल विकलायै बलप्रमथानायै योगमार्ग गच्छ गच्छ निदर्शिके देहिनि दर्शनं देहि देहि मर्दिनि महिष-मर्दिन्यै स्वाहा रिपून्दर्शने दर्शय दर्शय सिंहपूरप्रवेशिनि वीरकारिणि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् वाहा शक्तिरूपायै रों वा गणपायै रों रों रों व्यामोहिनि यन्त्रनिके महाकायायै प्रकटवदनायै लोलजिह्वायै मुण्डमालिनि

महाकालरसिकायै नमो नमः ब्रह्मरन्ध्रमेदिन्यै नमो नमः शत्रुविग्रहकलहान् त्रिपुरभोगिन्यै विषज्वालामालिनी तन्त्रनिके मेघप्रभे शवावतंसे हंसिके कालि कपालिनी कुल्ले कुरुकुल्ले चैतन्यप्रभेप्रज्ञे तु साम्राज्ञि ज्ञान ह्रीं ह्रीं रक्ष रक्ष ज्वालाप्रचण्डचण्डिकेयं शक्तिमार्तण्ड भैरवि विप्रचित्तिके विरोधिनि आकर्णय आकर्णय पिशिते पिशितप्रिये नमो नमः खः खः खः मर्दय मर्दय शत्रून् ठः ठः ठः कालिकायै नमो नमः ब्राह्यै नमो नमः माहेश्वर्यै नमो नमः कौमार्यै नमो नमः वैष्णव्यैः नमो नमः वाराह्यै नमो नमः इन्द्राण्यै नमो नमः चामुण्डायै नमो नमः अपराजितायै नमो नमः नारसिंहिकायै नमो नमः कालि महाकालिके अनिरुद्धके सरस्वति फट् स्वाहा पाहि पाहि ललाटं भल्लाटनी अस्त्रीकले जीववहे वाचं रक्ष रक्ष परविद्यां क्षोभय क्षोभय आकृष्य आकृष्य कट कट महामोहिनिके चीरसिद्धिके कृष्णरूपिणी अजनसिद्धिके स्तम्भिनि मोहिनि मोक्षमार्गानि दर्शय दर्शय स्वाहा ।

॥ इति श्री काली सहस्राक्षरीं समाप्तम् ॥

श्री काली बीज सहस्राक्षरी

ॐ क्रीं हुं ह्रीं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं

हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौ
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौंहसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौंहसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौंहसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
ऐं ऐं
ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐंऐं ऐं ऐं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं
ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं
ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं
श्मशान कालिकायै घोररूपायै शवासनायै अभयखड्गमुण्डधारिण्यै
दक्षिणकालिके मुण्डमालि चतुर्भुजौ नागयज्ञोपवीते क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षी क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं

क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं
तुं तुं
तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं
तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं
तुं तुं
तुं तुं तुं तुं तुं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं फट् फट्
फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट्
स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा ।

॥ इति श्री काली बीज सहस्राक्षरी समाप्तम् ॥

श्री काली क्षमापराध स्तोत्रम्

प्राग्देहस्थोय दाहं तव चरण युगान्नाश्रितो नार्च्चितोऽहं ।
तेनाद्या कीर्तिवर्गैर्ज्जठरजदहनै र्बाद्ध्यमानो बलिष्ठैः ॥
क्षिप्त्वाजन्मान्तरान्नः पुनरिहभविता क्वाश्रयः क्वापि सेवा ।
क्षन्तव्योमेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥१॥
वाल्येवालाभिलायैर्ज्जडित जडमति बाललीला प्रसक्तो ।
नत्वांजानामिमातः कलिकलुषहरा भोगमोक्ष प्रदात्रीम् ॥
नाचोरो नैव पूजा न च यजन कथा न स्मृतिर्नैव सेवा ।
क्षन्तव्येमेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥२॥
प्राप्तोहं यौवनञ्चे द्विषधर सदृशै रिन्द्रियैर्दष्ट गात्रो ।
नष्ट प्रज्ञः परस्त्री परधन हरणे सर्व्वदा साभिलाषः ॥
त्वत्पादम्भोज युग्मङ् क्षणमपि मनसा न स्मृतोहं कदापि ।
क्षन्तव्येमेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥३॥
प्रौढ़ोभिक्षाभिलाषी सुत दुहितृ कलत्रार्थ मन्नादि चेष्ट ।
क्व प्राप्स्ये कुत्रयामी त्वनुदिन मनिशञ्चिन्तयामग्न देहः ॥
नोतेध्यानन्त चास्था न च भजन विधिन्नाम सङ्कीर्तनंव्वा ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥४॥
वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृश विवशतनु श्श्वासकासातिसारैः ।
कर्ण्णनिहो ऽक्षिहीनः प्रगलित दशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः ॥
पश्चात्तापेनदग्धो मरण मनुदिनन्ध्येय मात्रन्नचान्यत् ।
क्षन्तव्यो मेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥५॥
कृत्वास्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नोकृतं नैव पुष्प ।
न्ते नैवेद्यादिकञ्च क्वचिदपि न कृतं नापिभावोन भक्तिः ॥
नन्यासो नैव पूजां न च गुण कथनं नापि चार्च्चाकृताते ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥६॥
जानामि त्वां न चाहं भवभयहरणीं सर्व्व सिद्धिप्रदात्री ।
न्नित्यानन्दोदयाढ्यान्त्रितय गुणमयी न्नित्व शुद्धोदयाढ्याम् ॥

मिथ्याकर्म्माभिलाषैरनुदिनमभित: पीडितो दु:ख सङ्घैः ।
क्षन्तव्योमेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥७॥
कालाभ्रां श्यामालाङ्गीं विलित चिकुरा खङ्गमुण्डाभिरामा।
न्त्रास त्राणेष्टदात्रीम् कुणपगणशिरो मालिनीन्दीर्घनेत्राम् ॥
संसारस्यैक साराम्भवजन नहराम्भावितोभावनाभिः ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥८॥
ब्रह्मा विष्णु स्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोज युक्त ।
म्भाग्याभावान्न चाहम्भव जननि भवत्पाद युग्मम्भजामि ॥
नित्यंल्लोभ प्रलोभैः कृतविशमतिः कामुकस्त्वाम्प्रयाषे ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥६॥
रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुप युत तनुः कामनाभोग लुब्धः ।
कार्य्याकार्य्या विचारी कुलमति रहितः कौलसङ्घैर्विहीनः ॥
क्वध्यानन्ते क्वचार्च्चा क्वमनुजपनन्नैव किञ्चित् कृतोऽहम् ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कापरूपे कराले ॥१०॥
रोगी दु:खी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पांप चेता ।
निद्रालस्य प्रसक्तास्सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा ॥
किन्ने पूजा विधानन्त्वयिक्वचनुमतिः क्वानुरा क्वचास्था ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥११॥
मिथ्या व्यामोह रागैः परिवृतमनसः क्लेशङ्गान्वितस्य ।
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरण विरहिणः पापकर्म्म प्रवृत्ते ॥
दारिद्र्यस्य क्वधर्मः क्वचजननिरुचिः क्वस्थितिस्साधु सङ्घैः ।
क्षन्तव्यो मे पराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥१२॥
मातस्तातस्यदेहज्जर्नी जठरगः संस्थितस्त्वद्वशेहन् ।
त्वं हर्त्रा कारयित्रं कर गुणमयी कर्महेतु स्वरूपा ॥
स्वम्बुद्धिश्चित्त संस्थाप्यहमतिभवती सर्व्वमेतत्क्षमस्व ।
क्षन्तव्योमेपराधः प्रकटित वदने कामरूपे कराले ॥१३॥

त्वम्भूमिस्त्वञ्जलञ्च त्वमसि हुतवह स्त्वञ्जगद्वायुरूपा ।
त्वञ्चाकाशम्मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्व्विका पूर्व्वपूर्व्वा ।।
आत्मात्वञ्चासिमात: परमसिभवती त्वत्परन्नैव किञ्चित् ।
क्षन्तव्यो मे पराध: प्रकटित वदने कामरूपे कराले ।।१४।।
त्वङ्काली त्वञ्चतारात्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं ।
त्वन्दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वम् हि लक्ष्मी: शिवा त्वम् ।।
धूमा मातङ्गिनीत्वन्त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या ।
क्षन्तव्यो मे पराध: प्रकटित वदने कामरूपे कराले ।।१५।।
स्तोत्रेणानेन देवीम्परिणमति जनो य: सदाभक्तियुक्तो ।
दुष्कृत्यादुर्ग्गं सङ्घम्परितरति शतं व्धिघ्नतांनाशमेति ।।
नाधिर्व्याधि: कदाचिद्भवति यदि पुनस्सर्वदा सापराध: ।
स्सर्वन्तत्कामरूपे त्रिभुवन जननि क्षामये पुत्र बुद्ध्या ।।१६।।
ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपति
दानशीलो दयात्मा ।
नि: पापी नि: कलङ्की कुलपति कुशल
स्सत्यवाग्धार्म्मिकश्च ।।
नित्यानन्दो दयाढ्य: पशुगणविमुख
स्सत्पथा चारुशील: ।
संसाराब्धि सुकेन प्रतरति गिरिजा
पादयुग्मावलम्बात् ।।१७।।

।। इति श्री कालीक्षमापराध स्तोत्रम् समाप्तम् ।।

श्री ककरादि कालीशतनाम स्तोत्रम्

शृणु देवि जगद्वन्द्ये स्तोत्रमेतदनुत्तमम् ।
पठनाच्छ्रवणादस्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
असौभाग्य प्रशमनं सुखसम्पद्विवर्धनम् ।
अकालमृत्युहरणं सर्वापद्विनिवारणम् ॥
श्रीमदाद्या कालिकायाः सुखसान्निध्यकारणम् ।
स्तवस्यास्य प्रसीदेन त्रिपुरारिरहं प्रिये ॥
स्तोत्रस्याय ऋषिर्देवि ! सदाशिव उदाहृतः ।
छन्दो ऽनुष्टुप्देवताद्या कालिका परिकीर्तिता ॥
धर्मकामार्थमोक्षषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।

॥ स्तोत्र ॥

ह्रीं काली श्री कराली च क्रीं कल्याणी कलावती ।
कमला कलिदर्पघ्नी कपर्दीश कृपान्विता ॥
कालिका कालमाता च कालानल समद्युतिः ।
कर्पादिनी करालास्या करुणामृतसागरा ॥
कृपामयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा ।
कृशानुः कपिला कृष्णा कृष्णानन्दविर्द्धिनी ॥
कालरात्रिः कामरूपा कामपाशविमोचिनी ।
कादम्बिनी कलाधारा कलिकल्मषनाशिनी ॥
कुमारी पूजन प्रीता कुमारी पूजकालया ।
कुमारीभोजनानन्दा कुमारीरूपधारिणी ॥
कदम्बवनसञ्चारा कदम्बवनवासिनी ।
कदम्बपुष्पसन्तोषा कदम्बपुष्पमालिनी ॥
किशोरी कलकण्ठा च कलनादनिनादिनी ।
कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरीप्रिया ॥
कमलासनसन्तुष्टा कंकालमाल्यधारिणी ।
कपालपात्रनिरता कमलापनवासिनी ॥

कमलालयमध्यस्था कमलामोदमोदिनी ।
कलहंसगतिः क्लैव्यनाशिनी कामरूपिणी ॥
कामरूपकृतावासा कामपीठविलासिनी ।
कमनीया कल्पलता कमनीयविभूषणा ॥
कमनीयगुणाराध्या कोमलाङ्गी कृशोदरी ।
कारणामृत सन्तोषा कारणानन्दसिद्धिदा ॥
कारणानन्दजापेष्टा कारणार्चनहर्षिता ।
कारणार्णवसम्मग्ना कारणव्रतपालिनी ॥
कस्तूरीसौरभा मोदा कस्तूरी तिलकोज्ज्वला ।
कस्तूरीपूजनरता कस्तूरीपूजनप्रिया ॥
कस्तूरीदाहजननी कस्तूरीमृगतोषिणी ।
कस्तूरीभोजनप्रीता कर्पूरामोदमोदिता ॥
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरचंदनोक्षिता ।
कर्पूरकारणाह्लादा कर्पूरामृतपायिनी ॥
कर्पूरसागरस्नातां कर्पूरसागरालया ।
कूर्चबीजजपप्रीता कूर्चजापपरायणा ॥
कुलीना कौलिकाराध्या कौलिकप्रियकारिणी ।
कुलाचारा कौतुकिनी कुलमार्ग प्रदर्शिनी ॥
काशीश्वरी कष्टहर्त्री काशीशवरदायिनी ।
काशीश्वरीकृतामोदा काशीवरमनोरमा ॥
कलमञ्जीरचरणा क्वणत्काञ्चीविभूषणा ।
काञ्चनाद्रिकृतागारा काञ्चनाचल कौमुदी ॥
कामबीजजपानन्दा कामबीजस्वरूपिणी ।
कुमतिघ्नी कुलीनार्तिनाशिनी कुल कामिनी ॥
क्रीं ह्रीं श्रीं मन्त्रवर्णेन कालकण्टकघातिनी ।
इत्याद्याकालिकादेव्याः शतनाम प्रकीर्तितम् ॥

ककारकूटघटितम् कालीरूप स्वरूपकम् ।
पूजाकाले पठेद्यस्तु कालिकाकृतमानसः ।।
मन्त्रसिद्धिर्भवेदाशु तस्य काली प्रसीदति ।
बुद्धि विद्या च लभते गुरोरादेशमात्रतः ।।
धनवान् कीर्तिमान् भूयाद्दानशीलो दयान्वितः ।
पुत्रपौत्रसुखैश्वर्यमोदते साधको भुविः ।।
भौमावास्या निशाभागेमपञ्चक समन्वितः ।
पूजयित्वा महाकालीमाद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ।।
पठित्वा शतनामानि साक्षात्कालीमयो भवेत् ।
नासाध्य विद्यते तस्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।।
विद्यायां वाक्पतिः साक्षात् धने धनपनिर्भवेतु ।
समुद्र इव गाम्भीर्ये बले च पवनोपमः ।।
तिग्मांशुरिव दुष्प्रेक्ष्यः शशिवच्छुभदर्शनः ।
रूपे मूर्तिधरः कामी योषिता हृदयङ्गमः ।।
सर्वत्र जयमाप्नोति स्तवस्यास्यः प्रसादतः ।
यं यं कामं पुरस्कृत्य स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ।।
तं तं काममवाप्नोति श्रीमदाद्याप्रसादतः ।
रणे राजकुले द्यूते विवादे प्राणसंकटे ।।
दस्युग्रस्ते ग्रामदाहे सिंहव्याघ्रावृते तथा ।
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे ग्रहराज भयेऽपि वा ।।
ज्वरदाहे चिरव्याधौ महारोगादि संकुले ।
बालग्रहादि रोगे च तथा दुःस्वप्नदर्शने ।।
दुस्तरे सलिले वापि पोते वातविपद्गते ।
विचिन्त्य परमां मायामाद्यां कालीं परात्पराम् ।।
यः पठेच्छतनामानि दृढ़भक्तिसमन्वितः ।
सर्वापद्भ्यो मुच्येत देवि सत्यं न संशयः ।।

न पापेभ्यो भयं तस्य न रोगोभ्यो भयं क्वचित् ।
सर्वत्र विजयस्तस्य न कुत्रापि पराभवः ।।
तस्यदर्शनमात्रेण पलायन्ते विपद्गणाः ।
स वक्ता सर्वशास्त्राणां स भोक्ता सर्वसम्पदाम् ।।
स कर्ता जाति धर्माणां ज्ञातीनां प्रभुरेव सः ।
वाणी तस्य वसेद्वक्त्रे कमला निश्चला गृहे ।।
तन्नाम्ना मानवाः सर्वे प्रणमन्ति ससम्भ्रमा ।
दृष्ट्या तस्य तृणायन्ते ह्यणिमाद्यष्टसिद्धयः ।।
आद्याकाली स्वरूपाख्यं शतनाम प्रकीर्तितम् ।
अष्टोत्तरशतावृत्या पुरश्चयस्यि गीयते ।।
पुरस्क्रियान्वितं स्तोत्रं सर्वाभीष्टफलप्रदम् ।
शतनामस्तुतिमिमामाद्याकाली स्वरूपिणीम् ।।
पठेद्वा पाठयेद्वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात् ।।

।। इति श्री ककारादि कालीशतनाम स्तोत्रम् ।।

अथ श्री काली तन्त्रम्

।। अथ प्रथम पटलः ।।

।। सपर्या विधि ।।

कैलास शिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरु ।
उवाच पार्वती देवी भैरवं परमेश्वरं ।।

।। श्री पार्वत्युवाच ।।

देवदेव महादेव सृष्टिस्थित्यन्त कारक ।
किं तद्ब्रह्ममयंधामं श्रोतुमिच्छामि तत्वतः ।।
कालिकायां महाविद्यां समस्तभेद संयुतां ।
सपर्य्यभिद सहितां चतुर्वर्ग फलप्रदां ।।

॥ श्री भैरव उवाच ॥

महाविद्यां महामायां महायोगीश्वरीं परां ।
सर्वविद्या महाराज्ञीं सर्वसारस्वत प्रदां ॥
कामत्रयं वह्निसंस्थं रतिविन्दु विभूषितं ।
कूर्चयुग्मं तथा लज्जा-युगलं तदनन्तरं ॥
दक्षिणे कालिके चेति पूर्वबीजानि चोद्धरेत् ।
अन्ते वह्निवधूं दद्यात् विद्याराज्ञी प्रकीर्तिता ॥
नात्रसिद्ध्याद्यपेक्षाऽस्ति न वा मित्रारि लक्षणं ।
न वा प्रयास बाहुल्यं न कामक्लेश सम्भवः ॥
यस्या स्मरणमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥

भावार्थ—कैलाश शिखर पर असीन देवाधिदेव, जगद्गुरु परमेश्वर भैरव से पार्वती जी ने पूछा ।

पार्वती जी बोलीं—हे देवाधिदेव महादेव ! आप सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय कर्त्ता हैं । मैं चतुर्वर्ग प्रदान करने वाली ब्रह्मस्वरूपा कालिका देवी महाविद्या के मन्त्र तथा पूजा भेद के विषय में सुनना चाहती हूं ।'

भैरव जी ने कहा—महामाया, माहायोगीश्वरी परब्रह्मरूपा सर्वविद्या, महाराज्ञी महाविद्या हैं, वे समस्त विद्याओं को देती हैं । क्रमशः तीन ककारों में रेफ, दीर्घ ईकार तथा बिन्दु का योग होने से तीन बीज (क्रीं क्रीं क्रीं) । इनके बाद दो कूर्च बीज (हूं हूं), फिर दो लज्जाबीज (ह्रीं ह्रीं), फिर 'दक्षिणे कालिके' ये दो पद, फिर क्रमशः पूर्वोक्त सातों बीज और अन्त में 'स्वाहा' का योग करने से दक्षिण कालिका का बाईस अक्षर का मन्त्र बनाता है । यथा—

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

इस मन्त्र के लिए सिद्ध, साध्य, आदि चक्रों का विचार करने की आवश्यकता नहीं है और इसकी उपासना में चौगुना जप आदि परिश्रम करने अथवा योग आदि का आश्रय लेकर शरीर को कष्ट देने की ही आवश्यकता पड़ती है । इस मन्त्र के स्मरण मात्र से ही मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है ।

भैरवोस्य ऋषि प्रोक्तः उष्णिक् छन्द उदाहृतं ।
देवता कालिका प्रोक्ता लज्जाबीजं तु बीजकं ॥

शक्तिस्तु कूर्चबीजं स्यादनिरुद्ध सरस्वती ।
कवित्वार्थे नियोगः स्यादेवं ऋष्यादि कल्पना ॥

भावार्थ—इस मन्त्र के ऋषि भैरव हैं, छन्द उष्णिक् है, देवता दक्षिणा-कालिका हैं, बीज लज्जाबीज अर्थात् 'ह्रीं' है, शक्ति कूर्चबीज अर्थात् 'हूं' है, विद्या अनिरुद्ध सरस्वती है तथा कवित्व शक्ति की प्राप्ति में इसका विनियोग किया जाता है।

(**विशेष**—इसका कीलक 'क्रीं' है।)

अङ्गन्यास करन्यासौ यथावदभिधीयते ।
षड्दीर्घभाजा बीजेन प्रणवाद्येन कल्पयेत् ॥
हृदयाय नमः प्रोक्तं शिरसे वह्निवल्लभा ।
शिखायै वषडित्युक्तं कवचाय हुमीरितं ॥
नेत्रत्रयाय वौषट्स्यादस्त्राय फडितिक्रमः ।
एवं यथाविधि कृत्वा वर्णन्यासं समाचरेत् ॥
वर्णन्यासं प्रवक्ष्यामि येन देवीमयो भवेत् ।
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ वै हृदयं स्पृशेत् ॥
ए ऐ ओ औ ततोऽयं अः क ख ग घ पुनस्ततः ।
उक्त्वा च दक्षिणं भुजं स्पृशेत् साधकसत्तमः ॥
ङ च छ ज समुच्चार्य झ ञ ट ठ ड ढ तथा ।
इति वामभुजे न्यस्य ण त थ द पुनः स्मरेत् ॥
ध न प फ ब भ इति दक्षिणजंघके न्यसेत् ।
म य र ल व श ष स ह ल क्ष वामजंघके ॥
इति वर्णान् प्रविन्यस्य मूलविद्यां समुच्चरन् ।
सप्तधा व्यापकं कुर्याद् येन देवीमयो भवेत् ॥
व्यापक संन्यस्य ततो ध्यायेत् परां शिवां ।
पीठन्यासं तत कुर्याद् येन देवीमयो भवेत् ॥
हृत्सरोजे सुधासिन्धुमध्ये द्वीपं सुवर्णजं ।
परितः पारिजातांश्च मध्ये कल्पतरुं ततः ॥

तन्मूले हेमनिर्माणं द्वाश्चतुष्ट्यभूषितं ।
मण्डपं मन्दवातेन पराक्रान्तं सुधूपितं ॥
मन्त्र तन्त्र प्रतिष्ठाप्य तत्र पूजां समाचरेत् ।
श्मशानं तत्र सम्पूज्य तत्र कल्पद्रुमं यजेत् ॥
तन्मूले मणिपीठञ्च नानामणि विभूषितं ।
नानालङ्कार भूषाढ्यं मुनिदेवैश्च भूषितं ॥
शिवाभिर्बहुमांसास्थि मोदमानाभिरन्ततः ।
चतुर्दिक्षु शवमुण्डाश्चिताङ्गारास्थिभूषिताः ॥
इच्छाज्ञाना क्रिया चैव कामिनी कामदायिनी ।
रतिः रतिप्रिया नन्दा मध्ये चैव मनोन्मनी ॥
हसौः सदाशिवेत्युक्त्वा महाप्रेतेति [illegible] ।
पद्मासनाय हृदयं पीठन्यास उदाहृतः ॥
एवं देहमये पीठे चिन्तयेदिष्ट देवतां ।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि स्मरणाच्छिवतां यजेत् ॥

भावार्थ—इसके पश्चात् 'ॐ क्रां हृदयाय नमः' आदि से अङ्गन्यास, कर-न्यास, व्यापक न्यास तथा पीठन्यास आदि करने चाहिए ।

फिर हृदय कमल मे सुधा-समुद्र, उसके मध्य में स्वर्ण-द्वीप, उसमें पारिजात वृक्षों के बीच कल्पतरु तथा उसके मूल मे स्वर्ण-निर्मित चारद्वारों वाले मण्डप में, जिसमें कि मन्द वायु के कारण चारों ओर धूप की सुगन्ध उठ रही हो, मन्त्र-तन्त्र को स्थापित कर पूजा करे । फिर वहीं श्मशान की पूजा कर कल्पवृक्ष का यजन करे । उसके मूल में मणिपीठ तथा अनेक मणियों से विभूषित अनेक अलंकारों, मुनियों, देवताओं तथा मांसअस्थि आदि का सेवन करने वाली, आनन्दित शिवाओं (सियारिनों) एवं चारों दिशाओं में बिखरे हुए शव, मुण्ड, चिता, अङ्गारों आदि से विभूषित (१) इच्छा, (२) ज्ञाना, (३) क्रिया, (४) कामिनी, (५) कामदायिनी, (६) रति, (७) रतिप्रिया तथा (८) नन्दा—इन आठ शक्तियों के मध्य मनोन्मिनी शक्ति के विराजमान होने की कल्पना करें । तत्पश्चात् सदाशिव रूपी महाप्रेत के ऊपर स्थित देवी काली का अपने हृदयकमल रूपी पीठ में ध्यान तथा चिन्तन करने वाला व्यक्ति शिवत्व को प्राप्त कर लेता है । ध्यान का स्वरूप अग्रानुसार है—

(ध्यान)

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमाला विभूषितां ॥
सद्यश्छिन्न शिरः खड्ग वामाधोर्ध्वकराम्बुजां ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोर्ध्वाध पाणिकां ॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीं ।
कंठावसंक्तमुण्डालीं गलद्रुधिर चर्चितां ॥
कर्णावतंसतानीत शवयुग्म भयानकां ।
घोरदंष्ट्रां करालस्यां पीनोन्नत पयोधरां ॥
शवानां करसङ्घातैः कृतकाञ्चींहसन्मुखीं ।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधारा विस्फुरिताननां ॥
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीं ।
बालार्कमण्डलाकार लोचनत्रितयान्वितां ॥
दन्तुरां दक्षिणव्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयां ।
शवरूप महादेव हृदयोपरि संस्थितां ॥
महाकालेन च समं विपरीत रतातुरां ।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्वितां ॥
सुख प्रसन्नवदनां स्मेरानन सरोरुहां ।
योगिनी चक्रसहितां कालिकां भावयेत् सदा ॥
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वकामार्थसिद्धये ।

(अर्चन विधिः)

अथार्चनविधिं वक्ष्ये देव्या सर्वसमृद्धिदं ।
येनानुष्ठितमात्रेण स्वयं भैरव रूपवान् ॥
येनानुष्ठित मात्रेण भवाब्धौ न निमज्जति ।
अनेकहेम रत्नादि माणिक्यवर सिद्धिदं ॥
इन्द्रादि सुरवृन्दानां सात्रनैक फलप्रदं ।
विपक्षकुल संहार कारणं पौरुषप्रदं ॥

शान्तिकं पौष्टिकंञ्चैव वशीकरणमुत्तमं ।
मारणोच्छेदजनकमाकृष्टिकरमुत्तमं ।।
समस्तशोकशमनमानन्दाब्धौ निमज्जनं ।
चतुः समुद्रपर्यन्त मेदिनी साधनोत्तमं ।।
स्त्रीरत्न कुल सन्दापि पुत्रपौत्र विवर्धनं ।

भावार्थ—अब समस्त समृद्धियों को देने वाली देवी की अर्चन विधि को कहते हैं; जिनका अनुष्ठान करने मात्र से ही समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा सब प्रकार के दुःख-कष्टों का नाश होकर, स्त्री, पुत्र, पौत्रादि की वृद्धि होती है ।

आदौ यन्त्रं प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा ऽमरतांव्रजेत् ।।
आदौ त्रिकोणं विन्यस्य त्रिकोणं तद्वहिर्न्यसेत् ।
ततो वै विलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयमुत्तमं ।।
वृत्तं विलिख्य विधिवल्लिखेत् पद्मं सुलक्षणं ।
ततो वृत्तं विलिख्यैव लिखेद् भूपुर मेककं ।।
चतुरस्त्रं चतुर्द्वारमेवं मण्डलमालिखेत् ।

भावार्थ—पहले आधार यन्त्र का वर्णन करते हैं। सर्वप्रथम एक अधोमुख त्रिकोण का निर्माण करें। इस त्रिकोण के बाहर क्रमशः एक के बाद एक करके चार त्रिकोण और बनाएँ। इस प्रकार पाँच त्रिकोण हुए। ये सब समबाहु त्रिभुजाकार होंगे। इन्हें मध्य में रखकर इनके बाहर एक वृत्त बनाएँ। वृत्त के बाहर अष्टदल कमल का निर्माण करें। कमल के बाहर एक अन्य वृत्त बनाएँ। वृत्त के बाहर चार द्वारों से युक्त चतुरस्त्र भूपुर का निर्माण करें (पहले त्रिकोण के ठीक बीच में एक बिन्दु तथा 'क्रीं क्रीं' इन दो बीजों को भी लिखना चाहिए)—दक्षिणाकाली पूजा का यन्त्र यही है।

पीठपूजां ततः कृत्वा स्ववामेऽर्घ्यं न्यसेत् प्रिये ।।
मूलविद्यां षडङ्गेन मूलमन्त्रेण चार्चयेत् ।
ततो हृदय पद्मान्तः स्फुरन्तीं परमां कलां ।।
यन्त्रमध्ये समावाह्य न्यासजालं प्रविन्यसेत् ।
ततोध्यात्वा महादेवीमुपचारान् प्रकल्पयेत् ।।
नमस्कृत्य महादेवी ततः आवरणं यजेत् ।
कालीं कपालिनीं कुल्लां कुरुकुल्लां विरोधिनीं ।।

विप्रचित्तां तु सम्पूज्य बहिः षट्कोणके ततः ।
उग्रामुग्रप्रभां दीप्तां तथा मध्य त्रिकोणके ॥
नीलां घनां वलाकाञ्च तथैवान्य त्रिकोणके ।
मात्रां मुद्रां मिताञ्चैव तथैवान्त स्त्रिकोणके ॥
सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमाला विभूषिताः ।
तर्जनीं वामहस्तेन धारयन्त्यः शुचिस्मिताः ॥
ततो वै मातरः पूज्या ब्राह्मी नारायणी तथा ।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥
वाराही च तथा पूज्या नारसिंही तथैव च ।
अनुलेपनकं गन्धो धूपदीपो तथैव च ॥
त्रिस्त्रिः पूजा प्रकर्तव्या सर्वासामपि साधकैः ।
गुरु पंक्तिं षडङ्गञ्च दिक्पालांश्च ततोऽर्च्चयेत् ॥
एवं पूजां पुरा कृत्वा मूलेनैव यथाविधि ।
नैवेद्यादीन् यथाशक्त्या दद्याद् देव्यै पुनः पुनः ॥
ततो वैदशवारांस्तु दीपं दद्यात्तु साधकः ।
पुष्पादिकं पुनर्दद्यान्मूलेनैव यथाविधि ॥
ततः सावहितो मन्त्री गुरुं नत्वा शिरः स्थितं ।
देवीं ध्यात्वा चाष्टोत्तर सहस्रं प्रजपेन्मनुं ॥
तेजोमयं जपफलं देव्या हस्ते समर्पयेत् ।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वमिति मन्त्रेण मन्त्रवित् ॥
ततः शिरसिवै पुष्पं दत्त्वाष्टाङ्गं प्रणम्य च ।
विसृज्य परमा भक्त्या संहारेणैव भक्तितः ॥
उद्वास्य हृदये देवीं तन्मयो भवतिध्रुवं ।
पुरश्चरण कालेऽपि पूजा चैषा प्रकीर्तिता ॥

भावार्थ—फिर पीठ-पूजाकर, अपनी बाँई ओर अर्घ्य स्थापित कर, षडङ्ग-पूजा करते हुए पुनः ध्यान करें। हृदय कमल में प्रकाशित देवी यन्त्र में आवाहन कर आवरण पूजा आरम्भ करें। यन्त्र के पाँच त्रिकोणों के पन्द्रह कोणों में क्रमशः

(१) काली, (२) कपालिनी, (३) कुल्ला, (४) कुरुकुल्ला, (५) विरोधिनी, (६) विप्रचित्ता, (७) उग्रा, (८) उग्रप्रभा, (९) दीप्ता, (१०) नीत्ला, (११) घना, (१२) बलाका, (१३) मात्रा, (१४) मुद्रा एवं (१५) मिता-इन पन्द्रह देवियों का पूजन करें। ये सभी श्यामवर्णा, दाँये हाथ में असि तथा बाँये में यष्टि धारण किये हैं, गले में मुंडमाला पहने स्मित मुखी हैं।

फिर (१) ब्राह्मी, (२) नारायणी, (३) माहेश्वरी, (४) चामुण्डा, (५) कौमारी (६) अपराजिता, (७) वाराही तथा (८) नारसिंही इन आठ मातृकाओं का पूजन करें। प्रत्येक देवी को तीन-तीन बार अनुलेपन, गन्ध, धूप तथा दीपक प्रदान करें। फिर गुरु पंक्ति, षडङ्ग एवं इन्द्र आदि दस दिक्पालों का पूजन करें।

आवरण-देवताओं का पूजन करने के बाद मूल देवता को यथाशक्ति नैवेद्यादि निवेदित करें, फिर गुरु को प्रणाम कर मूल देवता का ध्यान कर १००८ बार मन्त्र का पाठ करें, तदुपरान्त 'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री' इस मन्त्र से देवी के बाँये हाथ में जप का फल समर्पित करें। फिर मस्तक पर पुष्प चढ़ा साष्टाङ्ग प्रणाम कर संहार मुद्रा द्वारा विसर्जन कर देवी को अपने हृदय में धारण करें। पुरश्चरण के समय इसी प्रकार पूजा करनी चाहिए।

॥ इति श्री काली तन्त्रे सपर्या विधि नाम प्रथम पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ द्वितीय पटलः ॥

(पुरश्चरण विधि)

॥ भैरव उवाच ॥

साधनं सिद्धिमन्त्रस्य वक्ष्यामि परमाद्‌भुतं।
भाग्यहीनोऽपि मूर्खोऽपि यद्‌बोधादमरो भवेत् ॥
साधयेत् सकलान् कामान् सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
आदौ पुरस्क्रियां कुर्यान्नियमेन यथाविधि ॥
लक्षमेकं जपेद् विद्यां हविष्याशी दिवा शुचिः।
रात्रौ ताम्बूल पूरास्यः शय्यायां लक्षमानतः ॥
नानाचारो न कर्तव्यो न चारणमितस्ततः।
भूतहिंसा न कर्तव्या पशुहिंसा विशेषतः ॥

वलिदान विना देव्या हिंसां सर्वत्र वर्जयेत् ।
अन्यमन्त्र पुरस्कारं निन्दां चैव विवर्जयेत् ॥
ततः सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगार्हो न चान्यथा ।
जीवहीनो यथा देही सर्वकर्मसु न क्षमः ॥
पुरश्चरणहीनोऽपि तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः ।
तस्मादादौ पुरश्चर्यां कृत्वा साधक सत्तमः ॥
प्रयोगं च ततः कुर्यात् सर्वं साधक दुर्लभम् ॥

भावार्थ – अब मन्त्र की साधन विधि सुनो यथाविधि पुरश्चरण की क्रियाएँ करके एक लाख की संख्या में मन्त्र जप करें। पशुभाव में हविष्याशी तथा संयत रहकर प्रातः से मध्याह्न तक जप करें, फिर वीर भाव में रात्रि के समय एक लाख की संख्या में मन्त्र-जप करें।

देवी की बलि के अतिरिक्त अन्य किसी प्राणी की हिंसा न करें। इस प्रकार पुरश्चरण द्वारा मन्त्र-सिद्धि प्राप्त करने के बाद अन्य प्रयोगों को करना चाहिए।

॥ इति श्री कालीतन्त्रे पुरश्चरण विधि नाम द्वितीय पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ तृतीय पटलः ॥

(नैमित्तिक विधि)

॥ भैरव उवाच ॥

ततो होम विधिं वक्ष्ये सर्वसिद्धि प्रदायकं ।
लतापुष्पान्वितं कृत्वा वर्णानां शतकं सुधीः ॥
तानि सम्मन्त्र्य विधिवदसकृत् साधकोत्तमः ।
ततो वै होमयेत् तानि संस्कृतेऽग्नौ यथाविधि ॥
युगानामयुतं तेन पूजनं जायते शिवे ।
अनेन क्रमयोगेन यश्चरेद् भुवि साधकः ॥
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
धीरो भवति वाग्मी च सर्वसिद्धिमुपालभेत् ॥

हुनेदाज्येन भुक्तेन मांसेन रुधिरेण च ।
कृष्णपुष्पेण साज्येन सरक्तेन विशेषतः ॥
आमिषादिभिरप्येवं श्मशाने जुहुयात् सुधीः ।
महाकालं हुनेद् यत्नात् पश्चात् देवीं विशेषतः ॥
त्रिधा विभज्य विद्यां वै साधकः शुद्ध मानसः ।
मासं रक्तं त्वचं केशं नखं भक्तञ्च पायसम् ॥
आज्यं चैव विशेषेण जुहुयात् सर्वसिद्धये ।
एवं कृते तु सर्वत्र लभते सिद्धिमुत्तमां ॥
यद् यत् कामयते कामी तत्तदाप्नोति निश्चितं ।
देववन्मानवो भूत्वा भुनक्ति बहुलं सुखं ॥
तर्पणस्य विधिं वक्ष्ये येन कार्याणि साधयेत् ।
तर्पयेच्च पयोभिश्च रक्तधारायुतैस्तथा ॥
मज्जाभिश्च तथा तद्वत् स्वकीयेन परेण च ।
आकर्षितायाः कन्यायाः कुलप्रक्षालनेन च ॥
मेष माहिष रक्तेन नररक्तेन चैव हि ।
मूष मार्जार रक्तेन तर्पयेद् देवतां परां ॥
एवं तर्पणमात्रेण साक्षात् सिद्धीश्वरो भवेत् ।
कविता जायते तस्य द्राक्षारस परम्परा ॥
बृहस्पति समो भूत्वा देववद् भुवि मोदते ।
न तस्य पापपुण्यानि जीवन्मुक्तो भवेद् ध्रुवं ॥

भावार्थ—इस पटल में जप, होम तथा तर्पण की विधि का वर्णन है । यह विधि वीरभाव की है, जिसमें लता-पुष्प, विल्वपत्र, घृत, चावल, मांस, रुधिर, आदि वस्तुओं द्वारा श्मशान में होम करने का विधान है । रक्तधारा युक्त जल, मज्जा एवं पशु-रक्त आदि के तर्पण का भी वर्णन है । इससे अणिमादिक, अष्ट सिद्धियों, विद्वत्ता तथा वाक्‌सिद्धि प्राप्त होना कहा गया है । यह भी बताया है कि इन क्रियाओं को करने से साधक के सभी पाप-पुण्य नष्ट हो जाते हैं और वह जीवन्मुक्ति को प्राप्त करता है । शक्ति-कुल प्रक्षालित-जल का भी वर्णन है । इन सब

विषयों को विस्तार पूर्वक गुरु-मुख से श्रवण करना चाहिए और उन्हीं के निर्देशानुसार इन क्रियाओं को करना भी चाहिए—यह हमारा मत है। जिन वस्तुओं के प्रयोग का वर्णन इस पटल में किया गया है, उनका यदि कोई साङ्केतिक अर्थ हो तो वह भी गुरु-मुख से ही जाना जा सकता है।

॥ इति श्री कालीतन्त्र नैमित्तिक विधि नाम तृतीय पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ चतुर्थ पटलः ॥

(काम्य विधि)

॥ भैरव उवाच ॥

अथ काम्य विधि वक्ष्ये येन सर्वत्र सर्वगः।
साधकः साधयेत् सिधि देवानामपि दुर्लभां ॥
कुलागार पुष्पितायां दृष्ट्वा यो जपते नरः।
अयुतैक प्रमाणेन साधकः स्थिर मानसः ॥
केवलं गुप्तभावेन सतु विद्यानिधिर्भवेत्।
संस्कृताः प्राकृताः शब्दा लौकिका वैदकाश्च ये ॥
वशमायान्ति ते सर्वे साधकस्य च नान्यथा।
अथवा मुक्तकेशश्च हविष्याशी सुसंयतः ॥
प्रजपेदयुतं प्राज्ञ एतदेव फलं लभेत्।
नग्नां परलतां पश्यन्नयुतं यस्तु साधकः ॥
प्रजपेत् स भवेद् सद्यो विद्याया वल्लभः स्वयं।
तस्य दर्शन मात्रेण वादिनः कुण्ठतां गताः ॥
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य वक्त्रात् प्रवर्तते।
तत्पदे सुधियः सर्वे प्रणमन्ति मुदान्विताः ॥
तस्य वाक्य परिचयज्जडा भवन्ति वाग्मिनः।
अथवा मुक्त केशश्च हविष्यं भक्षयेन्नरः ॥

प्रजपेदयुतं तस्य एष प्रतिनिधि स्मृत: ।
धनकामस्तु यो विद्वान् महदैश्वर्य कामुक: ।।
बृहस्पतिसमो यस्तु भवितुं कामयेन्नर: ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा कुलमामंत्र्य मंत्रवित् ।।
मैथुनं य: प्रयात्येव स तु सर्वफलं लभेत् ।
लतारतेषु जप्तव्यं महापातक मुक्तये ।।
लता यदि न लभ्येत तदा मज्जां प्रयत्नत: ।
समुत्सार्य जपेन्मन्त्री सर्वकामार्थसिद्धये ।।
तासां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यमप्रियं तथा ।
सर्वथा च न कर्तव्यमन्यथा सिद्धिरोधकृत् ।।
स्त्रियो देवा: स्त्रिय: प्राणा: स्त्रिय एव विभूषणं ।
स्त्री सङ्गिना सदा भाव्यमन्यथा स्वस्त्रियामपि ।।
विपरीतरता सा तु भाविता हृदयोपरि ।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा नासाध्यं विद्यते क्वचित् ।।
तद्धस्तावचितं पुष्पं तद्धस्तावचितं जलं ।
तद्धस्तावचितं भोज्यं देवताभ्यो निवेदयेत् ।।
महाचीनद्रुमलतावेष्टित: साधकोत्तम: ।
रात्रौ यदि जपेन्मन्त्रं सैव कल्पलताभवेत् ।।
महाचीनद्रुमलतावेष्टनेन च यत्फलं ।
तस्यापि षोडशांशेन कलां नार्हन्ति ते शवा: ।।
शवासनाधिकफलं लतागेह प्रवेशनं ।
श्मशानालयमागत्य मुक्तकेशो दिगम्बर: ।।
जपेदयुत संख्यं तु सर्वकामार्थसिद्धये ।
महाचीनद्रुमल ा मज्जाभिर्विल्वपत्रकं ।।
सहस्रं देवीमभ्यर्च्य श्मशाने साधकोत्तम: ।
तदा राज्यमवाप्नोति यदि सा न पलायते ।।

स्वगात्ररुधिराक्तैश्च विल्वपत्रैः सहस्रशः ।
श्मशाने ऽभ्यर्च्य कालीं तु वागीश समतां व्रजेत् ।।
अनादिकां तथा दृष्ट्वा लक्षं जपित भूमिपः ।
निर्मलां च तथा दृष्ट्वा वश्यार्थमयुतं जपेत् ।।

भावार्थ—इस पटल में वीर-भाव सम्मत अनेक काम्यविधियों का वर्णन है। स्त्रियों के साथ श्रेष्ठ व्यवहार, उनको ही देवता समझने तथा उनके द्वारा लाई गई वस्तुओं का पूजा में प्रयोग करने आदि विषयों पर विशेष बल दिया है। इस पटल के आशय को भी गुरु-मुख से ही सुनना-समझना आवश्यक है।

।। इति श्री कालीतन्त्रे काम्यविधि नाम चतुर्थ पटलः समाप्तम् ।।

॥ अथ पञ्चम पटलः ॥

(सिद्धिविद्या विधिः)

।। भैरव उवाच ।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रं कल्पद्रुमंपरं ।
येन जप्तेन विधिवत् सिद्ध्योऽष्टा भवन्ति हि ।।
यस्याः स्मरणमात्रेण वाचश्चित्रीयते नृणां ।
यज्ज्ञानादमरत्वं च लभेन्मुक्ति चतुर्विधां ।।
ये जपन्ति परां देवीं नियमेन तु संस्थिताः ।
देवाः सर्वे नमस्यन्ति किं पुनर्मानवादयः ।।
वृहस्पतिसमो वाग्म धने धनपतिर्भवेत् ।
कामतुल्यश्च नारीणां रिपूणां शमनोपमः ।।
तस्य पादाम्बुज द्वन्द्वं राज्ञा किरीट भूषणं ।
तस्य मूर्ति विलोक्यैव कुबेरोपि तिरस्कृतः ।।
य एनां पूजयेद् देवीं नियमे पितृकानने ।
तस्य चाज्ञाकराः सर्वे सिद्ध्योऽष्टौ भवन्ति हि ।।

तस्यैव जननी धन्या पिता यस्य सुरोपम: ।
सम्प्रदायविदां वक्ता य एनां वेत्ति तत्त्वत: ।।
अस्या विज्ञानमात्रेण कुलकोटि: समुद्धरेत् ।
नंदन्ति पितर: सर्वे गाथा गायन्ति ते मुदा ।।
अपि न: स्वकुले कश्चित् कुलज्ञानी भविष्यति ।
स धन्य: स च विज्ञानी स कवि: स च पण्डित: ।।
स कुलीन: स सुकृती स वशी स च साधक: ।
स ब्राह्मण: स वेदज्ञ: सोऽग्निहोत्री स दीक्षित: ।।
स तीर्थसेवी पीठानां स निवासी च सर्वदा: ।
स सोमपायी च व्रती स यज्वा स च साधक: ।।
स सन्यासी च योगी च स मुक्त: स च ब्रह्मवित् ।
स वैष्णव: स शैवश्च स सौर: स च गाणप: ।।
स च विज्ञानवेत्ता च य एनां वेत्ति तत्त्वत: ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वावस्थासु सर्वदा ।।
एनां ज्ञात्वा यजेन् मन्त्री सुखमोक्षफलप्रदां ।
नम: पाशाङ्कुशे द्वेधा फट् स्वाहा कालि कालिके ।।
दीर्घतनुच्छद: कालीमनु: पञ्चदशाक्षर: ।
अनया सदृशी विद्या त्रैलोक्ये नापि विद्यते ।।
विद्यारत्नं प्रवक्ष्यामि श्रुत्वा कर्णावतंसवत् ।
मायाद्वयं कूर्चयुग्ममैंद्रान्तम्मादन त्रयं ।।
मायाविन्दीश्वर युतं दक्षिणे कालिके पदं ।
संहारक्रमयोगेन बीज सप्तकमुद्धरेत् ।।
एकविंशत्यक्षराढ्यस्ताराद्य: कालिकामनु: ।
पूर्वोक्तमन्त्रवत् कुर्यात् पूजां सर्वां विचक्षण: ।।

भावार्थ—इस पटल में भगवती दक्षिण कालिका के पन्द्रह तथा इक्कीस अक्षर वाले मन्त्रों की साधन-विद्या का वर्णन किया गया है। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

(१) नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं ।

तथा—

(२) ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ।

यह दूसरा मन्त्र 'विद्यारत्न' के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी पूजा-विधि बाईस अक्षर वाले मन्त्र के समान ही है। इस पटल के पूर्ण आशय को भी गुरु-मुख से ही जानना चाहिए।

॥ इति श्री काली तन्त्रे सिद्धविद्या विधि नाम पञ्चम पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ षष्ठ पटल ॥

(वीर-साधना)

॥ भैरव उवाच ॥

शृणु देवि वरारोहे वीरसाधनमुत्तमं ।
नृणां शीघ्र फलावाप्त्यै प्रकारान्तरमुच्यते ॥
चतुष्पथे चतुर्दिक्षु पुरुषं हृदयं खनेत् ।
जीवितं ब्रह्मरन्ध्रे वै दीपान् प्रज्वालयेत् सुधीः ॥
मध्ये तथा खनेदेकं तत्र मूर्द्धासनं भवेत् ।
पूर्वोक्तेन च मार्गेण तत्र संस्कारमाचरेत् ॥
महाकालादिदेवेभ्यो बलिं पूर्ववदाहरेत् ।
कल्पोक्तपूजां संपूज्य जपेत् प्रयतमानसः ॥
दंताक्षमालया चैव राजदंतेन मेरुणा ।
दिग्वासाः प्रजपेन्मन्त्रमयुतं सर्वदैवतं ॥
जपान्ते च बलिं दत्वा दक्षिणा विभवावधिः ।
सर्वसिद्धीश्वरो विद्वान् सर्वदेव नमस्कृतः ॥
अथवा विजनेऽरण्ये स्थिरयोगासनो नरः ।
उदयास्तं दिवा जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥

विल्ववृक्षे निज क्रोड़े शवमारोप्य यत्नतः ।
नृसिंहमुद्रया बीक्ष्य जपेन्मातृकयाः नरः ॥
सहस्रं तत्र जप्त्वा वै सर्वसिद्धीश्वरोभवेत् ।
बटमूले शवं नीत्वा तत्रदेवीं प्रपूज्य च ॥
सुप्त्वा तत्र मनुं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरोभवेत् ।
करकाञ्चीं समादाय मुण्डमाला विभूषितः ॥
तेनैव तिलकं कृत्वा तत्तद्भस्म विभूषितः ।
श्मशाने च सकृज्जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
कुङ्कुमागरु कस्तूरीं रोचनागरु चन्दनं ।
कर्पूरं पद्मरागञ्च केसरं हरि चन्दनम् ॥
एकत्र साधितं कृत्वा प्रत्येकं साधयेत्ततः ।
एतत्तिलकमात्रेण राजानं वश मानयेत् ॥
जिह्वाग्रे रुधिरं कृत्वा आकाशे च समाहरेत् ।
तेनैव गुटिकां कृत्वा भद्रकालीं तता जपेत् ॥
नीलां नीलपताकां च ललजिह्वां करालिकां ।
ललाट तिलकं कृत्वा साधको वीतभीः स्वयं ॥
महाष्टमी नवम्योस्तु संयोगे पुरतः स्थितः ।
छागमहिषमेषाणां चतुर्दिक्षुशरान् क्षिपेत् ॥
कबन्धान् मुण्डपुञ्जं च दीपादिभिरलंकृतं ।
मध्ये कबन्धमास्तीर्य तत्र गन्धर्वरूपधृक् ॥
ताम्बूलपूर रक्तास्ये मञ्जानाञ्ति च लोचनं ।
कृत्वाकालीमनुं जप्त्वा सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
विपद्रवियुतं देवि नेत्रान्तं चन्द्रभूषितं ।
बीजं प्रत्येक द्रव्याणां मिलितानां च पार्वति ॥
मूलमन्त्रेण मन्त्रं यो जपेत् साष्टशतत्रयं ।
जिह्वाग्रे रुधिरं गृह्य चामुण्डे घोर निस्वने ॥

बलिं गृह्ण वरं देहि रुधिरं गगनेऽमले ।
कालि कालि प्रचण्डोग्रे ततोऽस्त्रं कवचं ततः ॥
कालिकेयं समाख्याता वीराणां हितकाम्यया ।
कूर्चयुग्मं महादेवि नीलायाः कथितं तव ॥
वियद्भृगुयुतं देवि कुलमिश्रं रवी रतिः ।
चन्द्रखण्डसमायुक्तं ततो नीलपदं ततः ॥
पताके हूं फडन्ते स्यात् पूर्वकूट मनुर्मतः ।
सुगुप्तेयं महाविद्या तव स्नेहात्मयोच्यता ॥
जयश्रीकरणीदेवी पताकेव रणस्थले ।
तेन नीलपताकेयं विद्यां वै वीरसाधने ॥
उग्रचण्डा महाविद्या या पुरा कथिता प्रिये ।
ललाज्जिह्वा तु सा प्रोक्ता योज्या वै वीर साधने ॥
या सौ विद्या महातारा सा करालेति कीर्त्तिता ।
भूमिपुत्र समायुक्ता यामावस्या शुभोदया ॥
भाद्रेपुनृक्षयोगेन तस्यां वीरवरोत्तमः ।
विष्णुक्रान्तां समानीय निक्षिपेन्मृतभूमिषु ॥
तत्र तां साधितां कृत्वा तद्दिने मत्स्यहट्टके ।
तत्र तं साधितं मत्स्यमेकमूल्येन दापयेत् ॥
तज्जलेनाभिषेकं च पूर्ववच्च शिरोपरि ।
साधितां विजयां तस्य उदरे मुखवर्त्मना ॥
क्षिप्त्वा तत्र खनेन्मत्स्य मञ्जनाञ्चित लोचनः ।
पूर्वद्रव्येण तिलकमुत्थाय च मनुं जपेत् ॥
स्वयं वै तत्र भगवान् भैरवो लगुडान्वितः ।
गतभीतिस्ततो वीरस्तं विलोक्य जपेन्मनुं ॥
यदि भाग्यवशाद्देवि लगुडस्तत्र लभ्यते ।
तदा स्वयं भैरवोऽसौ स्वयं वीरेश्वरो भवेत् ॥

मत्स्यमानीय देवेशि निक्षिपेत् पितृकानने ।
तत्रासकृज्जपित्वा तु देवतामेलनं भवेत् ॥
तत्र नत्वा महादेवं महादेवीं च भाविनि ।
तद्भस्मतिलकं कृत्वा स्वयं वीरेश्वरो भवेत् ॥
निशायां मृतहट्टे च उन्मत्तानन्दभैरवः ।
दिग्वासा बिमलीभस्मभूषणो मुक्तकेशकः ॥
कपाली खड्गहस्तश्च जपेन् मातृकया यदि ।
तदा तस्य महादेवी सर्वसिद्धिः करे स्थिता ॥
डाकिनीं योगिनीं वापि अन्यं वा भूतलाङ्गनां ।
तत्राप्यानीय संपूज्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
सर्वेषां जीवहीनानां जन्तूनां वीरसाधने ।
ब्राह्मणं गोमयं त्यक्त्वा साधयेद् वीरसाधनम् ॥
मृतासनं विना देवि पूजयेत् पार्वतीं शिवां ।
तावत् कालं वसेद्घोरं यावदाहूतसंप्लवं ॥
महाशवाः प्रशस्ताः स्युः प्रधानं वीरसाधने ।
क्षुद्राप्रयोग कर्तॄणां प्रशस्ताः सर्वसिद्धिदाः ॥
एवं वीरक्रमं देवि कथितं च तवानघे ।
न कस्यचित् प्रवक्तव्यं मम प्रीत्या महेश्वरि ॥

भावार्थ—इस पटल में वीराचार की विभिन्न विधियों का वर्णन है। चतुष्पथ-साधन, शव-साधन, लगुड़-साधन तथा वीर-साधन की अनेक विधियाँ अनेक प्रकार से उल्लिखित है। (१) भद्रकाली, (२) नीला, (३) नील पताका, (४) ललज्जिह्वा तथा (५) करालिका—इन पांच देवियों के मन्त्रों तथा उनके साधनों के विषय में भी बताया गया है। विभिन्न प्रकार के विशेष-तिलकों की चर्चा भी है। इन्हें करने से साधक को भुक्ति-मुक्ति एवं सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। यह भी कहा गया है कि इन साधनों के विषय में किसी को बताना नहीं चाहिए। इस पटल के आशय को भी गुरु-मुख द्वारा श्रवण करके उन्हीं के निर्देशानुसार किसी कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए।

॥ इति कालीतन्त्रे वीर-साधना नाम षष्ट पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ सप्तम पटलः ॥

(रहस्य-पुरश्चरण विधिः)

॥ देव्युवाच ॥

ज्ञातमेतन्मया देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः ।
अशक्तानां तु मे देव पुरश्चरणमुच्यतां ॥
सिध्यन्ते च यथा मन्त्रा लभन्ते सिद्धिमुत्तमां ॥

॥ भैरव उवाच ॥

श्मशाने च पुरश्चर्या कथिता भुवि दुर्लभा ।
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्डं समाहृतं ।
पञ्चगव्येन मिलितं चन्दनाद्यैर्विशेषतः ॥
निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानतः कानने वने ।
तत्र तद्दिवसे रात्रौ सहस्र यदि मानवः ॥
एकाकी प्रजपेन्मन्त्रं स भवेत् कल्प पादपः ।
अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
शवमानीय तद्द्वारे तेनैव परिखन्यते ।
तद्दिनात्तद्दिनं यावत्तावदष्टोत्तरं शतं ॥
स भवेत् सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा ।
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमुच्यते ॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ।
सूर्योदयात् समारभ्य यावत् सूर्योदयान्तरं ॥
तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे चैव ग्रासावधि विमुक्तित
यावत्संख्यं मनुं जप्यात्तावद्धोमादिकं चरे
सूर्यग्रहणकालाद्धि नान्यः कालः प्रशस्यते
तत्र यद्यत् कृतं कर्म तदनन्तफलं लभेत् ॥

अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यन्तं विशेषतः ॥
भक्तितः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत् सहस्रकं ।
जपेदेकाकी विजने केवलं तिमिरालये ॥
अष्टम्यादिनवम्यन्तमुपवासपरो भवेत् ।
अन्यत्र गुरुमार्गस्य लंघनं नैव कारयेत् ॥
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
अष्टमी सन्धिवेलायामष्टोत्तर लतागृहं ॥
प्रविश्य मन्त्री विधिवत्ताः समभ्यर्च्य यत्नतः ।
पूर्वोक्तकल्पमासाद्य पूजादिकं समाचरे् ॥
केवलं कामदेवोऽसौ जपेदष्टोत्तरं शतं ।
तासां तु पत्रमूलेषु उल्कां संगृह्य मस्तके ॥
मन्त्रसिद्धिर्भवेत् सद्यो लतादर्शनपूजनात् ।
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
आकृष्टायाः कुलागारे लिखित्वा मन्त्रमेव च ।
सम्पूज्य तत्र संस्कारं कृत्वा तस्यै निवेद्य च ॥
किञ्चिज्जप्त्वा मनुं नीत्वा देवताभावतत्परः ।
तां विसृज्य नमस्कृत्य स्वयं जप्त्वा सुसंयतः ॥
प्रातः स्त्रीभ्यो बलिं दत्वा मन्त्रसिद्धिर्न संशयः ।
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥
गुरुमानीय संस्थाप्य देववत् पूजनं विभोः ।
वस्त्रालङ्कारहेमाद्यैः सन्तोष्य गुरुमेव च ॥
तत्सुतं तत्सुतां चैव तत्पत्नीं च विशेषतः ।
पूजयित्वा मनुं जप्त्वा स्वयं सिद्धीश्वरो भवेत् ॥
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
सहस्रारे गुरोः पादपद्मं ध्यात्वाप्रपूज्य च ॥

केवलं देवभावेन जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ।
गुरवे दक्षिणां दद्याद् यथाविभवमात्मनः ॥
गुरोरनुज्ञामात्रेण दुष्ट मन्त्रोऽपि सिध्यति ।
गुरुं विलंघ्य शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकारः सुरैरपि ॥
एषां च मन्त्र तन्त्राणां प्रयोगः क्रियते यदि ।
गुरुवक्त्रं विना देवि सिद्धिहानिः प्रजायते ॥
अथवान्य प्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
स्वकीयां परकीयां वा स्त्रियमानीय साधकः ॥
शतमष्टोत्तरं जप्त्वा योनिमामन्त्र्य तत्ववित् ।
गच्छन् परमतत्वज्ञः सहस्रं जपते यदि ॥
तदा मन्त्रो भवेत् सिद्धो दुष्टमन्त्रोऽपि पार्वति ।
एतत्प्रयोगं देवेशि न कस्मै दर्शयेत् क्वचित् ॥
यदि वा दर्शयेन्मोहात् कुबुद्धि कुलनाशकः ।
अन्यथा प्रेतराजस्य भवनं याति निश्चितं ॥

भावार्थ—इस पटल में पुरश्चरण-विधानों का संक्षिप्त वर्णन है—(१) मंगल अथवा शनि को वाला वीराचार-सम्मत विधान, (२) एक मंगवार अथवा शनि आरम्भ करके दूसरे मंगल अथवा शनिवार तक प्रतिदिन रात्रि में किया जाने वाला वरीाचार-सम्मत विधान, (३) अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक किया जाने वाला पशु तथा वीर-दोनों भावों से सम्मत विधान, (४) शरदकालीन देवीपक्ष में चतुर्थी से नवमी तक रात्रि में किया जाने वाला वीराचार-सम्मत विधान, (५) अष्टमी तथा नवमी के सन्धिकाल में युवती स्त्रियों के पूजन से आरम्भ करके मन्त्र जप करने का वीराचार-सम्मत विधान, (६) गुरु-पूजन द्वारा आरम्भ करके पशु एवं वीर-भाव से सम्मत विधानों का वर्णन किया गया है । इन्हें भी गुरु-मुख से सुनकर ही जानना चाहिए ।

॥ इति श्री कालीतन्त्रे रहस्य पुरश्चरण विधि नाम सप्तम पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ अष्टम पटलः ॥

(आचार-विधिः)

॥ भैरव उवाच ॥

अथाचारं प्रवक्ष्यामि यत्कृतेऽमृतमश्नुते ।
सर्वभूतहिते युक्तः समयाचारपालकः ॥
अनित्यकर्मसन्त्यागी नित्यानुष्ठानतत्परः ।
मन्त्राराधन मात्रेण शिवभावेन तत्परः ॥
परस्यां देवतायां च सर्वकर्म निवेदकः ।
अन्यमन्त्रार्चनं श्रद्धामन्यभन्त्र प्रपूजनं ॥
कुलस्त्री वीरनिन्दां च तद्द्रव्यस्यापहारणं ।
स्त्रीषु रोषं प्रहारं च वर्जयेन्मतिमान् सदा ॥
स्त्रीमयं च जगत्सर्वं स्वयं तावत् तथा भवेत् ।
पयं चर्व्यं तथा चोष्यं भक्ष्यं भोज्यं गृहं स्वयं ॥
सर्वं च युवतीरूपं भावयेन्मतिमान् सदा ।
कुलजां युवतीं वीक्ष्य नमस्कुर्यात् समाहितः ॥
यदि भाग्यवशेनैव कुलदृष्टिस्तु जायते ।
तदैव मानसीं पूजां तत्र तासां प्रकल्पयेत् ॥
बालां वा यौवनोन्मत्तां वृद्धां वा युवतीमपि ।
कुत्सितां वा महादुष्टां नमस्कृत्य विभावयेत् ॥
तासां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यमपि वर्जयेत् ।
सर्वथानैव कर्त्तव्यमन्यथा सिद्धिरोधकृत् ॥
स्त्रियो देवाः स्त्रियः प्राणाः स्त्रियः एव विभूषणं ।
स्त्री सङ्गिना सदाभाव्यमन्यथा स्वस्त्रिया अपि ॥
विपरीतरता सा तु भविता हृदयोपरि ।
तद्धस्तावर्चितं पुष्पं तद्धस्तावर्चितं जलं ॥
तद्धस्तावर्चितं भोज्यं देवताभ्यो निवेदयेत् ।
सर्वं तदक्षयं प्रोक्तं देवतापूजनात् प्रिये ॥

विपरीतरतासक्तोऽप्यष्टोत्तर सहस्रकं ।
अष्टोत्तरशतं वापि तदा सिद्धिः प्रजायते ।।
स्त्री द्वेषो नैव कर्त्तव्यो विशेषात् पूजनं स्त्रियाः ।
जपस्थाने महाशंखं निवेश्योर्ध्वं जपं चरेत् ।।
स्त्रियं पश्यन् स्पृशन् गच्छन् विशेषात् कुलजां शुभां ।
भक्षन् ताम्बूल मत्स्यांश्च भक्ष्यद्रव्यं यथारुचि ।।
मत्स्यं मांसं तथा क्षौद्रं नाना द्रव्यसमन्वितं ।
भक्ताद्यशेषभक्ष्याणि दत्वा द्रव्यं जपेन्मनुं ।।
दिक्कालनियमो नात्र स्थित्यादि नियमो न च ।
सर्वथा पूजयेद् देवीमस्नातः कृतिभोजनः ।।
महानिश्य शुचौ देशे बलि मन्त्रेण दापयेत् ।
न जपे कालनियमो नार्चादिषु वलिष्वपि ।।
स्वेच्छानियम उक्तोऽत्र महामन्त्रस्य साधने ।
वस्त्रासनदेहागारस्थानपर्शादि वारिणः ।।
शुद्धि न चाचरेत्तत्र निर्विकल्पं मनश्चरेत् ।
सर्व एव शुभः कालो नाशुद्धिर्विद्यते क्वचित् ।।
न विशेषो दिवारात्रौ न सन्ध्यायां महानिशि ।
गात्र शुद्धरपेक्षास्ति न चामेध्यादिदूषणं ।।
सुगन्धिश्वेत लौहित्यं कुसुमैरर्चयेद् दलैः ।
विल्वैर्मरुवकाद्यैश्च तुलसी वर्जितैः शुभैः ।।
नाधर्मो विद्यते सुभ्रु किं च धर्मो महान् भवेत् ।
स्वेच्छाचारोऽत्र गदितः प्रचरेद् धृष्टमानसः ।।
कृतार्थ मन्यमानस्तु सन्तुष्टो हृष्टमानसः ।
इत्याचारपरः श्रीमान् जपपूजादि तत्परः ।।
पालकः कुलतत्वानां परतत्वे प्रलीयते ।
उदिताकृतिरानन्दमयः संसारमोचकः ।।
अणिमाद्यष्ट सिद्धींशः साधकोदेवता भवेत् ।।

भावार्थ—इस पटल में कुलाचार के सम्बन्ध में वर्णन है। संसार को स्त्री रूप में देखने, कुल स्त्री के रूप में अनुभव करने तथा किसी भी स्त्री को देखते ही मन-ही-मन उसकी मानसी-पूजा तथा प्रणाम करने का आदेश दिया गया है। स्त्रियों द्वारा लाये गए पूजा-द्रव्यों से पूजन करने का अक्षय-फल होता है यह बात भी कही गई है। महाशङ्ख की माला में जप, देवी-पूजन, बलि-प्रदान, सुगन्धि, श्वेत अथवा रक्त पुष्प, विल्वपत्र तथा पंचमकारों के उपयोग एवं व्यवहार के विषय में विस्तारपूर्वक बताया गया है। यह कहा है कि जो साधक कुलाचार में तत्पर होकर जप-पूजा आदि कर्म करता है, वह संसार में अणिमादि अष्ट सिद्धियों को प्राप्त कर अन्त में परमतत्त्व में विलीन हो जाता है। फलस्वरूप, पुनर्जन्म नहीं होता। इस पटल में वर्णित विधियों के विषय में भी गुरु-मुख से ही ज्ञान प्राप्त कर उन्हीं के निर्देशानुसार कार्य करना आवश्यक है। गुरु से पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए बिना वीराचार आदि कर्मों को करना निषिद्ध एवं घातक है।

॥ इति श्री कालीतन्त्रे आचारविधिः नाम अष्टमपटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ नवम पटलः ॥

(विद्याफल-विधि)

॥ भैरव उवाच ॥

एवं समस्त विद्यानां राज्ञी स्तोतुं न शक्यते ।
वक्त्रकोटि सहस्रैस्तु जिह्वा कोटि शतैरपि ॥
सर्वसिद्धिपराभूमिरनिरुद्धसरस्वती ।
तस्मादस्या ज्ञानमात्रात् सिद्ध्यो ऽष्टो भवन्ति हि ॥
अनिरुद्ध सरस्वत्या ज्ञानमात्रेण साधकः ।
पाण्डित्ये च कवित्वे च वागीश समतां व्रजेत् ॥
तस्य पाण्डित्य वैदग्ध्य विचित्रपद कल्पनात् ।
देवा अपि विलज्जन्ते किं पुनर्मानवादयः ॥
अस्ति चेत् त्वत्समा नारी मत्समः पुरुषोऽस्ति चेत् ।
अनिरुद्ध सरस्वत्याः समो मन्त्रो ऽस्ति वै तदा ॥

अस्या जपो ब्रह्मजपो ज्ञानमस्यात्मचिन्तनं ।
योगसन्धारणा सम्यग्ध्यानमस्या न संशयः ॥
महापदि महापापे महाग्रह निवारणे ।
महाभये महोत्पाते महाशोके महोत्सवे ॥

महामोहे महाऽसौख्ये महादारिद्र्य संकटे ।
महारण्ये महाशून्ये महास्थाने महारणे ॥
दुराख्याने दुरावासे दुर्भिक्षे दुर्निमित्तके ।
समस्तक्लेशसंघाते स्मरणादेव नाशयेत् ॥

अस्या ज्ञानं ब्रह्मज्ञानं ध्यानमस्यात्मचिन्तनं ।
तस्मादस्याः समाविद्या नास्ति तन्त्रे न संशयः ॥
कुलामृत निषेवी च कालीतन्त्रार्थ चिन्तकः ।
ब्रह्मादि भवने तस्य समो नास्ति कुतः परः ॥

स एव सुकृती लोके स एव कुलभूषणः ।
धन्या च जननी तस्य येन देवी समर्चिता ॥
वक्त्रे सरस्वती तस्य लक्ष्मीस्तस्य सदागृहे ।
तीर्थानि देहे तिष्ठन्ति येन देवी समर्चिता ॥

धनेन धननाथश्च तेजसा भास्करोपमः ।
बलेन पवनो ह्येष येन देवी समर्चिता ॥
गानेन तुम्बरुः साक्षाद्दाने कर्णसमस्तथा ।
दत्तात्रेयसमो ज्ञानी येन देवी समर्चिता ॥

वह्निरिव रिपोर्हन्ता गङ्गेव मलनाशकः ।
शुचौशुचिसमः साक्षादिन्दोरिव सुखप्रदः ॥
पितृदेवसमः शास्ता कालस्यैव दुरासदः ।
वागीश इव गम्भीरो निर्घति इव दुर्द्धरः ॥

वृहस्पतिसमो वाग्मी धारणी सदृशः क्षमी ।
कन्दर्पसदृशः स्त्रीणां येन देवी समर्चिता ॥

अहोभाग्यमहो लोके कुलज्ञान परायण: ।
तेषां मध्ये ऽपि य: कोपि काली साधन तत्पर: ।।
त्यजसि त्वं वरं चैतत् पुमांसं परमं तथा ।
मादृशं तु क्वचित् काले त्यजसि त्वं कदाचन ।।
काली ज्ञानिनमासाद्य न त्यजसि कदाचन ।
नहि काली समा विद्या नहि कलीसमं फलं ।।
नहि कालीसमं ज्ञानं नहि काली समं तप: ।
ये गुणा: परमेशास्य पञ्चकृत्यविधायिन: ।।
ते गुणा: सन्ति सर्वज्ञे कालीतत्वस्य नान्यथा ।
कालिकाहृदयज्ञानी लतासाधनतत्पर: ।।
देववन्मानवो भूत्वा लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीं ।
इति ते कथितं सम्यक् कालिकातत्त्वमुत्तमं ।।
अनेन सम्यगास्थाय सर्वधर्म फलं लभेत् ।।

भावार्थ—इस पटल में 'अनिरुद्ध-सरस्वती' अर्थात् भगवती के बाईस अक्षर वाले मन्त्र का वर्णन करते हुए बताया है कि इस मन्त्र का साधन करने से सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसका जप करने से आत्म-चिन्तन का फल मिलता है एवं स्मरण करने से सब प्रकार के पाप ग्रह, भय, उत्पात, रोग, शोक, मोह तथा दारिद्रय आदि से मुक्ति मिलती है।

इस मन्त्र द्वारा देवी की अर्चना करने वाला साधक ही पुण्यात्मा तथा कुलभूषण है उसके घर में सरस्वती एवं लक्ष्मी का तथा शरीर में समस्त तीर्थों का निवास बना रहता है। इस मन्त्र का साधक धनवानों में कुबेर, तेजस्वियों में सूर्य, बलवानों में वायु, गायकों में गन्धर्व, दानियों में कर्ण, ज्ञानियों में दत्तात्रेय, शत्रु-संहारकों में अग्नि, पाप-नाशकों में गंगा, सुख प्रदाताओं में चन्द्रमा तथा शासकों में यम के समान उच्च पद प्राप्त करता है। वह समुद्र सा गम्भीर, वृहस्पति सा विद्वान् पृथ्वी सा सहिष्णु तथा स्त्रियों के लिए कामदेव जैसा होता है। इस मन्त्र का जप करने वाले साधक पर काली की सदैव कृपा बनी रहती है। विद्याराज्ञी मन्त्र की महिमा का वर्णन ही इस पटल का मुख्य विषय है।

।। इति श्री कालीतन्त्रे विद्याफल विधि नाम नवमपटल: समाप्तम् ।।

॥ अथ दशम पटलः ॥

(सिद्ध विद्या विधिः)

यथाकाली तथा दुर्गा यथा दुर्गा तथोन्मुखी ।
यथा तारा तथा काली यथा नीला तथोन्मुखी ॥
दुर्गायाः कालिकायास्तु ध्यानं सममिहोच्यते ।
महाचीनक्रमेणैव ताराशीघ्र फलप्रदा ॥
गन्धर्वाख्य क्रमेणैव पञ्चमी भुक्तिमुक्तिदा ।
महाचीन क्रमेणैव कालिका फलदायिनी ॥
कालिकोग्रमुखी शस्ता दत्तात्रेय विभाविता ।
सप्तसप्ततिभेदेन श्रीविद्या विदिता भुवि ॥
तासां तु समता ज्ञेया गुप्त साधनसाधने ।
चत्वारिंशत् प्रकारा च भैरवी परिकीर्तिता ॥
तासां तु समता ज्ञेया गुप्त साधन साधने ।
या या विद्या महाचण्डा तासामेष विधिर्मतः ॥
महाचीन क्रमेणैव छिन्नमस्ता च सिद्धिदा ।
यस्मिन् मन्त्रे य आचारस्तस्मिन् धर्मस्तु तादृशः ॥
कृतार्थस्तेन जायेत स्वर्गो वा मोक्ष एव वा ।
भ्रान्तिरत्र न कर्तव्या सिद्धि हानिस्तु जायते ॥
विशुद्धचित्तोऽत्र भवेत् सिद्धिस्यादपवर्गदा ।
एवं तु तत्क्षणात् सिद्धि विस्मयो नास्ति चापरः ॥
विस्मिता विलपं यान्ति पशवः शास्त्रमोहिताः ॥

॥ भैरव उवाच ॥

कालिका हृदयं विद्यां सिद्धिविद्या महोदयां ।
पुरा येन यथा जप्त्वा सिद्धिमापुर्दिवौकसः ॥
कामाक्षरं वह्निसंस्थमिन्दिरा नाद विन्दुभिः ।
मन्त्रराजमिदं ख्यातं दुर्लभं पापचेतसां ॥
सुलभं शुभदं भक्त्या साधकानां महात्मनां ।
त्रिगुणा तु विशेषण सर्वशास्त्र प्रबोधिका ॥

अनया सदृशी विद्या नास्ति सारस्वतप्रदा ।
आकर्षण वशीकार मारणोच्चाटनं तथा ।।
शान्ति पुष्ट्यादि कर्माणि साधयेदनयाऽचिरात् ।
किं वक्तव्यमनेनापि वर्णितुं नैव शक्यते ।।
जिह्वाकोटि सहस्रैस्तु वक्त्रकोटि शतैरपि ।
अनया सदृशी विद्या अनया सदृशो जपः ।।
अनया सदृशं ज्ञानं न भूतं न भविष्यति ।
ध्यान पूजादिकं सर्वं साधनं च पुरस्क्रिया ।।
अनिरुद्धसरस्वत्याः समानं सर्वमीरितम् ।
रक्तराकर्षणे पुष्पैः पीतैः स्तम्भन कर्मणि ।।
मारणे कृष्णपुष्पैस्तु पूजयेद् घोरदक्षिणां ।
आद्यैक बीजं बीजानां तथैवान्तेऽपि चैककं ।।
दक्षिणे कालिके चेति मध्ये संयोज्य मन्त्रवित् ।
स्वाहान्तं मन्त्रमुच्चार्यं भवेदाकर्षणं महत् ।।
लोहिताकुशहस्तां च एकशूलधरां तथा ।
महाकालसमासीनां ध्यात्वा चाकर्षणं महत् ।।
स्थावरं जङ्गमं चैव पातालतलगं तथा ।
आकर्षयति मन्त्रज्ञः किमन्यद् भुवि योषितः ।।
अयुतैक जपः प्रोक्तः सदा कर्षण कर्मणि ।
अथान्यत् सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमं ।।
कूर्चलज्जाद्वयं बीजद्वयं ठान्तं तथैव च ।
योजयित्वा जपेद् विद्यामयुतं वशयेद् ध्रुवं ।।
ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि येन वश्यं जगत् त्रयं ।
नागयज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृतशेखरां ।।
जटाजूटसमासीनां कहाकाल समीपगां ।
एवं कामशराविद्धा विह्वला काममोहिताः ।।

स्वं स्वं सन्त्यज्य भर्त्तारं यान्ति लोक त्रयाङ्गनाः ।
अथवक्ष्ये महाविद्यां सिद्धिविद्यां महोदयां ॥
भैरवेण पुरा प्रोक्ता काली हृदय संज्ञिता ।
अस्या ज्ञान प्रभावेण पालयामि जगत्त्रयं ॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य हृल्लेखाबीजमुद्धरेत् ।
रतिबीजं समुद्धृत्य पपञ्चम भगान्वितं ॥
ठ द्वयेन समायुक्ता विद्याराज्ञी मयोदिता ।
अनया सदृशी विद्या कालिका यास्तु दुर्लभा ॥
भैरवोऽस्य ऋषिः प्रोक्तो विराट् छन्द उदीरितं ।
सिद्धकाली ब्रह्मरूपा देवता भुवनेश्वरी ॥
रतिबीजं बीजमस्या हृल्लेखा शक्ति रुच्यते ।
हृल्लेखया षड्दीर्घेन प्रणवाद्येन कल्पयेत् ॥
अङ्गषट्कं ततोन्यस्य ध्यात्वा देवीं शिवोभवेत् ।
खड्गोद्भिन्नेन्दुबिम्बस्रवदमृतरसा-
प्लाविताङ्गी त्रिनेत्रा ।
सव्येपाणौ कपालाद्गलदमृतमथो
मुक्तकेशी पिबन्ती ॥
दिग्वस्त्रा बद्धकाञ्ची मणिमय मुकुटा-
द्यैर्युता दीप्तजिह्वा ।
पायान्नीलोत्पलाभा रवि शशि विलस-
त्कुण्डलालीढ पादा ॥
जपेद् विंशति साहस्रं सहस्रैकेण संयुतं ।
होमयेत्तद्दशांशेन मृदुपुष्पेण मन्त्रवित् ॥
त्रिकोणं कुण्डमालिख्य सिद्धविद्या शिवोभवेत् ।
पूजनं च प्रयोगं च दक्षिणावदुयाचरेत् ॥
एकाक्षर्या महाकल्प समानं सर्वमेव वा ।
रक्तपद्मस्य होमेन साक्षाद् वैश्रवणो भवेत् ॥

बिल्वपत्रस्य होमेन राज्यं भवति निश्चितम् ।
रक्तप्रसून होमेन वशयेदखिलं जगत् ॥
पीतपुष्पस्य होमेन स्तम्भयेद् वायुमप्यथ ।
मालतीपुष्प होमेन साक्षाद् वाक्पति सन्निभः ॥
कृष्णपुष्पस्य होमेने शत्रून् मारयतेऽचिरात् ।
अत्रसर्वस्य होमस्य संख्या स्यादयुतावधि ॥
अस्याः स्मरणमात्रेण महापातक कोटयः ।
सद्यः प्रलयमायान्ति साधकः खेचरो भवेत् ॥

भावार्थ—इस पटल में बताया गया है कि काली, तारा, दुर्गा तथा उग्रमुखी इन सबकी उपासना पद्धति एक जैसी ही है । महाचीन क्रम से काली और तारा तथा गन्धर्व क्रम से श्री विद्या शीघ्र फल-दायिका हैं । उग्रमुखी काली, सप्तसप्तति प्रकार की श्रीविद्या तथा चत्वारिंशत प्रकार की भैरवी—ये सभी गुप्त-साधन में समान हैं । सभी उग्ररूपा देवियां महाचीन क्रम से सिद्धिदात्री हैं । इसके अतिरिक्त इस पटल में दक्षिण काली के एकाक्षर मन्त्र, त्र्यक्षर मन्त्र तथा षडक्षर मन्त्र और उनके ध्यान स्वरूप का वर्णन करते हुए, जप के विषय में अन्य बातों का उल्लेख तथा मन्त्रों की महिमा का वर्णन किया गया है ।

॥ इति श्री कालीतन्त्रे सिद्धि विद्या विधिः नाम दशम पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ एकादश पटलः ॥

(सामान्य साधन)

॥ भैरव उवाच ॥

अथोच्यते कालिकायाः सामान्यसाधनं प्रिये ।
कृतेन येन विधिवत् पलायन्ते महापदः ॥
शिवाबलिश्च दातव्यः सर्वसिद्धिमभीप्सुभिः ।
महोत्पाते महाघोरे महारोगे महाग्रहे ॥
महादपि महायुद्धे महाविग्रह संकुले ।
महादारिद्र्य शमने महादुःस्वप्नदर्शने ॥

महाशान्तौ महावश्ये महास्वस्त्ययने तथा ।
घोराभिचारशमने घोरोपद्रवनाशने ।।
कूटयुद्धादिशमने कूटशत्रुनिवारणे ।
राजादिभयशान्तौ च राजक्रोधप्रशान्तये ।।
न ददाति बलिं यस्तु शिवायै शिवताप्तये ।
सपापिष्ठो नाधिकारी कुलदेव्याः समर्चने ।।
कुलीनं नावमन्येत कुलज्ञं परिपूजयेत् ।
कुलज्ञेषु प्रसन्नेषु कालिका सन्निधिर्भवेत् ।।
अहोधन्यवतां लोके जानाति कुलदर्शनं ।
तेषांमध्ये तु यः कश्चित् कुलदेवीं समर्चयेत् ।।
कुलाचार विहीनो यः पूजयेत् कालिकां नरः ।
स स्वर्गमोक्षभागी च न स्यात् सत्यं न संशयः ।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिं महद्यशः ।
कवित्वं भुक्ति मुक्ती च कालिकापादपूजनात् ।।
शुक्लेन ध्यान योगेन कविता वशवर्तिनी ।
पीतेन ध्यान योगेन स्तम्भयेदखिलं जगत् ।।
कृष्णाभा शत्रुमरणे धूम्राभा वैरि निग्रहे ।
अनया विद्यया मन्त्री स्पृशेत् पातकिनं यदि ।।
स तु संस्पर्शमात्रेण वक्ति सौधीमनर्गलां ।
कुमारीपूजनं कुर्यात् सर्वधर्म फलाप्तये ।।

।। भैरव उवाच ।।

अथान्यत् संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं शत्रु निग्रहं ।
सर्वान्ते वह्निवनितां योजयित्वाऽयुतं जपेत् ।।
कालिकां द्विभुजां कर्तृकपाले सव्यदक्षिणे ।
एवंध्यात्वा तु शत्रूणां मारणं समुपाचरेत् ।।
एवं कालीमतं प्रोक्तं सर्वसिद्धि प्रदायकं ।
अनया विद्यया सम्यक् साधयेत् स्वमनीषितं ।।

अनया विद्यया यद्यत्रसाधयति साधकः ।
तत्तत् सर्वेषु तन्त्रेषु नास्ति सत्यं न संशयः ॥
कालः नियन्त्रणात् काली ज्ञानतत्त्वप्रदायिनी ।
तस्मात् सर्वं प्रयत्नेन यजेदुभयसिद्धये ॥
कालीमतमिदं दिव्यं भैरवेन प्रकाशितं ।
न कुत्रापि प्रवक्तव्यं साधते च स्वपौरुषं ॥
एतत्तन्त्रं च मन्त्रं च ध्यानं चैव प्रपूजनं ।
प्रकाशात् सिद्धि हानिः स्यात् तस्माद् यत्नेन गोपयेत् ॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गोप्तव्यं देवतागणैः ।
यथामनुष्यो लभ्येत तथा कार्यं महेश्वरि ॥
योभक्तः साधयेद्ज्ञानी तस्मै नित्यं प्रकाशयेत् ॥

भावार्थ—इस पटल में सामान्य साधन की विधियों तथा काली-पूजन से प्राप्त होने वाले ऐश्वर्य, भोग, यश, मोक्ष आदि का उल्लेख है । इन्हें गुरु-मुख से जानना चाहिए ।

॥ इति श्री कालीतन्त्रे सामान्य साधनं नाम एकादश पटलः समाप्तम् ॥

॥ अथ द्वादश पटलः ॥

(परम गुह्याचारः)

॥ भैरव्युवाच ॥

त्वयोक्तं पूजनं देवं साधनेन पुरस्कृतं ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि वीर नित्यक्रियांप्रभो ॥

॥ भैरव उवाच ॥

प्रातः कृत्यं ततोन्यास ऋष्याघङ्गाङ्गलैरपि ।
वर्णव्यापक विन्यासः पीठन्यास स्ततः परं ॥
ततोऽन्तर्यजनं देवि योगियोगानिशा प्रिये ।
पञ्चमानां प्राशनं च जपौ रात्रौ विधानतः ॥

स्तोत्रपाठो यत्र तत्र समये च वरानने ।
वीरश्रद्धा तर्पणं च तथालापः स्त्रियामपि ॥
विजयाङ्गी कृतिश्चैव स्वसुखोद्देशिनं तथा ।
अप्रकाशः कुलाचारे मृदुभाषा च सर्वतः ॥
गुर्वंनुज्ञामात्रेणैव सर्वाचारविधिः प्रिये ।
एवमादीनि चान्याति वीरनिन्दा न सुव्रते ॥
ऐति परम्परयाह्येन तच्चीने च प्रतिष्ठितं ।
अन्यत्र विषयेन्नास्ति सत्यमेतद् ब्रवीमिते ॥
वामाचारः कुलाचारश्चीननाथेन शङ्करात् ।
प्रकाशितः शङ्करेण महारुद्रात् प्रकाशितः ॥
महाचीनाधियो देवो माहात्म्येन तयोद्वयोः ।
कुलाचारं कुलश्रेष्ठे वामाचारः प्रयत्नतः ॥
अस्यैवाशेष माहात्म्यं चीनतन्त्रे मयोदितं ।
कुलाचारमशेषेण चीननाथेन वेत्यपि ॥
यद् यद् दृष्टं श्रुतं यद् यद् गुरुः साधक वक्त्रतः ।
तत्तत् कार्यं वीरवर्यैस्तेन सिद्धिर्भवेत् प्रिये ॥
क्वचिच्चण्डः क्वचिद्भण्डः क्वचिद्भूत पिशाचवत् ।
क्वचिद्देवार्च्चनरतः क्वचित्तन्निन्दकस्तथा ॥
भवेच्छीलरतो वीरो महारुद्रस्य शासनात् ।
भक्षणं च विधिं वक्ष्ये पञ्चमादेर्यथा विधि ॥
आदौ गुरुं स्मरन् पश्चात् कुण्डलीं परिभाव्य च ।
आजिह्वान्तस्पर्शणेन भक्षयेन्नति पूर्वकं ॥
गुरुं नत्वा तपोज्येष्ठं शक्तंनंति परायणः ।
ज्येष्ठ त्वं वा कनिष्ठत्वं वा कुलाचार विधानतः ॥
अभिषेक्ता गुरुः साक्षान्मन्त्रदेन समः स्मृतः ।
अभिषेके विनाभूते प्रधानत्वं करोति यः ॥

चत्वारि तस्य नश्यन्ति आयुर्विद्या यशोबत्रं ।
तद्विधिश्चोतरातन्त्रे पाशवेन विमिश्रितः ।।
वीरैर्ग्राह्यः प्रयत्नेन हंसैः क्षीरं जलाद्यथा ।
आचारोऽयं शक्तिमन्त्रे सर्वत्र परिकथ्यते ।।
विशेषात् कालिकातारा भैरव्यादिषु पञ्चसु ।
कालिका तारिणी भेदं यः करोति स नारकी ।।
यत्र यत्र कालिकेति नाम संश्रूयते प्रिये ।
तत्र तारा विधानं च युतेनात्रस्तु संशयः ।।
यद् यदन्यत् साधनं च नान्यत्रापि नोदितं ।
तत् सर्वं पूर्वपूर्वेत तन्त्रेन ज्ञायते प्रिये ।।
न पूजा न्यास जालं वा स्त्रीणां केवल जापतः ।
सिद्धिर्भवति देवेशि कुलाचार विधानतः ।।
अथचेत् क्रियते न्यासस्तदा श्रृणु विधि प्रिये ।
ऋष्याद्यङ्गकपीठानां न्यासं कृत्वा च संस्मरेत् ।।
ततः साहमिति ध्यायेन् महाचीनं मतं यथा ।
कालीतन्त्रं कौलतन्त्रं तारातन्त्रं तथा प्रिये ।।
चीनतन्त्रं स्वतन्त्रं च युगपद्वक्त्रतः स्मृतं ।
अथ यद्यन्मतं प्रोक्तं तत्पञ्चसु समाचरेत् ।।
गुरुपाद प्रसादेन शुभादृष्टस्य योगतः ।
आचारः प्राप्यते वीरैर्नात्र कार्यश्च संशयः ।।
तदैव तुष्टा सा देवी निर्विकल्पः स्वयं यदि ।।

भावार्थ—इस पटल में साधक के लिए आवश्यक आचारों तथा क्रियाकलापों का वर्णन है। पञ्चमकार युक्त जप-साधना, तर्पण, स्त्रियों के साथ वार्तालाप, गुरुस्मरण, कुण्डलिनीध्यान तथा अन्य बातों के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये हैं। इनके विषय में गुरु-मुख से सुनकर ही जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

।। इति श्री कालीतन्त्रे परमगुह्याचारः नाम द्वादश पटलः समाप्तम् ।।

।। इति कालीतन्त्रम् ।।

अथ श्री काली उपनिषद्

ॐ अथाह वै देवप्रिये मनोहारिणि चण्डकपालिनि भगवति त्रैलोक्याधिरूपे ॐ तत्सत् हंसः सोहं निरञ्जने निराकारे सूक्ष्मातिसूक्ष्मे निर्वाणस्वरूपिणि अम्बे अम्बिके अम्बालिके दक्षिणाम्नायेश्वरी चतुर्दश-भुवनाधिपेश्वरी कालिकातो ब्रह्माविष्णुमहेश्वरादयः सर्वे देवा राक्षसाः मुनयः अष्टसिद्धिमाप्नुवन्ति तपस्वी प्रजापतयः प्रजाता पुनः कालिकाङ्गे प्रलीयन्ते ।

दिव्य चतुर्दशभुवनमणिमालिनि अरूपे स्वरूपे रूपातीते ॐ कार स्वरूपिणि वषट्कार रूपे फट्कारावतारे इडा पिंगला सुषुम्णा चित्रा-स्वरूपे ॐ तत्त्वमसि जगत्त्वमसि स्थावरजङ्गमस्त्वमसि यः एवं वेद स वेदविद्भवति ज्ञानी स पण्डितश्च ।

क्रीं इति त्रितमग्रे क्रोधद्वयं तद्वल्लज्जा दक्षिणेकालिकेति पुनः सप्ताक्षरं प्राग्वदुच्चार्य स्वाहान्तै येन विज्ञायते स शिवत्वं प्राप्नोति स योगी स पण्डित स सर्वं एवं भवति । ध्यान ज्ञान मनो वचः कर्म यः स्मरणं करोति स जीव मुक्त कथ्यते । अस्यपाठाच्चतुर्वर्गित्वं प्राप्यते ।

"नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृत शेखराम्, जटाजूटश्च संचिन्त्य महाकालसमीपगाम्"—"एवं ध्यान ये ये जना पठन्ति स्मरन्ति ते ते जना कालिकायुयुवा भवन्ति । समाधि ज्ञानं विज्ञानमिति सत्यम् । इति मन्त्रोच्चारणेन पञ्चमहापातकं नाशयति । विद्याराज्ञीयं यस्य गृहे वर्तते सः वैश्रवणो भवति सर्वरोगं सर्वदोषं नाशयति क्षिप्रं ब्रह्म-स्वरूपे सर्वक्रतुफलं सर्वदान सर्वतीर्थं पुण्यं पाठांल्लभते मनोरथं प्राप्नोति धनवान् पुत्रवान् ज्ञानवान् योगित्वं लभते नात्र संशयः इहत्र भोगः परत्वामृते मोक्षं प्राप्नोति सत्यम् ।"

भावार्थ—भगवती कालिका की कृपा से ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता ऋषि, मुनि तथा दैत्यादि सिद्धियाँ प्राप्त करते हैं ये सब भगवती से उत्पन्न होकर उन्हीं में लय हो जाते हैं ।

जो मनुष्य "क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा"—इस मन्त्र के रहस्य को जानता है, वही शिवत्व को प्राप्त करता है तथा योगी एवं पण्डित होता है। जो मन वचन कर्म से भगवती का स्मरण करता है यह जीवयुक्त हो जाता है।

भगवती का ध्यान करने वाले युवा तथा दीर्घायु होते हैं। जिस घर में यह विकाराली मन्त्र विद्यमान हो, वहाँ धन का कुबेर जैसा अक्षय भण्डार बना रहता है। सभी रोग-दोष नष्ट होते हैं तथा सभी मनोरथ प्राप्त होते है। अन्त में मोक्ष-लाभ होता हैं।

॥ इति श्री अथर्ववेदोक्त श्री काल्युपनिषद् समाप्तम् ॥

अथ श्री कालिका खड्गमाला स्तोत्र

॥ विनियोग: ॥

ॐ अस्य श्रीदक्षिण कालिका खड्गमाला मन्त्रस्य श्री भगवान् महाकालभैरव ऋषि: उष्णिक् छन्द: शुद्ध: ककार त्रिपञ्चभट्टारक-पीठस्थित महाकालेश्वराङ्कनिलया महाकालेश्वरी त्रिगुणात्मिका श्री मद्दक्षिणा कालिका महाभयहरिकादेवता क्रीं बीजं ह्रीं शक्ति: हूं कीलकं मम सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थे खड्गमाला मन्त्र जपे बिनियोग: ।

भावार्थ–इस मद्दक्षिणकालिका खड्गमाला मन्त्र के श्री भगवान् महाकाल भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्द एवं महान भय को दूर करने वाली, शुद्ध ककार त्रिपञ्च-भट्टारकपीठ स्थित महाकालेश्वर के अङ्क में विराजमान त्रिगुणात्मिका श्रीमद्दक्षिण-कालिका देवता हैं, 'क्रीं' बीज, 'ह्रीं' शक्ति, 'हूं' कीलक है। सभी अभीष्टों की सिद्धि हेतु इस 'खड्गमालामन्त्र' के जप का विनियोग है।

विशेष—उक्त विनियोग को पढ़ने के बाद मूलमन्त्र से प्राणायाम करें, फिर क्रमश: ऋष्यादि न्यास, कराङ्ग न्यास एवं षडङ्ग न्यास करें। न्यास की विधि पहले बताई जा चुकी है। न्यासोपरान्त ध्यान करके, मानसोपचारों द्वारा देवता का पूजन करें। फिर अपने ही शरीर का श्रीचक्र के स्वरूप में ध्यान करें। ध्यान का स्वरूप इस प्रकार है—

नागाष्वाकारनिर्मुक्त ज्वलत् कालाग्नि सदृश बिन्दु का ब्रह्म रन्ध्र में, प्रथम त्रिकोण का मस्तक में, द्वितीय त्रिकोण का भ्रूमध्य में, तृतीय त्रिकोण का कण्ट में, चतुर्थ त्रिकोणका हृदय में, पञ्चम त्रिकोण का मणिपूरक (नाभि) में, अष्टदल का स्वाधिष्ठान (लिङ्ग मूल के ऊपर) में तथा भूपुर का मूलाधार (लिङ्ग तथा गुदा के मध्यवर्ती भाग) में ध्यान करना चाहिए।

प्रथम आवरण (बिन्दु में)

निम्नलिखित प्रत्येक आवरण देवता के आरम्भ में 'ॐ' ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं' तथा अन्त में "श्रीं पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ कर पूजन तर्पण करना चाहिए जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री मद्दक्षिणकालिका खड्गमुण्डवराभय-करा महाकालभैरव सहिता श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

श्री हृदय देवी सिद्धिकालिकामयी।
श्री शिरो देवी महाकालिकामयी।
श्री शिखा देवी गुह्य कालिकामयी।
श्री कवच देवी श्मशान कालिकामयी।
श्री नेत्र देवी भद्रकालिकामयी।
श्री अस्त्र देवी श्रीमद्दक्षिणकालिकामयी।

सर्वसंपत्प्रदायक चक्रस्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

द्वितीय आवरण (विन्दु की चारों दिशाओं में)

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं जया सिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

अपराजिता सिद्धिमयी।
नित्या सिद्धिमयी।
अघोरा सिद्धिमयी।

सर्वमङ्गलमयि चक्रस्वामिनि नमस्ते स्वाहा।

तृतीय आवरण (बिन्दु के बाईं ओर प्रथम गुरु पंक्ति में गुरुचतुष्टय)

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री गुरुमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

श्री परमगुरुमयी।

श्री परात्परगुरुमयी।

श्री परमेष्ठिगुरुमयी।

सर्व संपत्प्रदायक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा।

चतुर्थ आवरण (द्वितीय पंक्ति में दिव्यौघ)

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं महादेव्यम्बामयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

महादेवानन्दनाथमयी।

त्रिपुराम्बामयी।

त्रिपुरभैरवानन्दनाथमयी।

(तृतीय पंक्ति में सिद्धौघ)

ब्रह्मानन्दनाथमयी।

पूर्वदेवानन्दनाथमयी।

चलच्चितानन्दनाथमयी।

लोचनानन्दनाथमयी।

कुमारानन्दनाथमयी।

क्रोधानन्दनाथमयी।

वरदानन्दनाथमयी।

स्मरद्वीयानन्दनाथमयी।

मायाम्बामयी।

मायावत्यम्बामयी।

(चतुर्थ पंक्ति में मानवौघ)

विमलानन्दनाथमयी ।
कुशलानन्दनाथमयी ।
भीमसुरानन्दनाथमयी ।
सुधाकरानन्दनाथमयी ।
मीनानन्दनाथमयी ।
गोरक्षकानन्दनाथमयी ।
भजदेवानन्दनाथमयी ।
प्रजापत्यानन्दनाथमयी ।
मूलदेवानन्दनाथमयी ।
रन्तिदेवानन्दनाथमयी ।
विघ्नेश्वरानन्दनाथमयी ।
हुताशनानन्दनाथमयी ।
समरानन्दनाथमयी ।
संतोषानन्दनाथमयी ।

सर्वसम्पत्प्रदायक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

पञ्चम आवरण (पांचों त्रिकोणों में क्रमशः तीन-तीन करके)

पूर्व की भाँति आवरण देवताओं के नाम के आगे उक्त सात बीजों को जोड़ तथा अन्त में "देवीं नित्यामयी श्री पादुका पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें। जैसे—

(१) "ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं श्री काली देवीमयी श्री पादुका पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।" जोड़ दें। जैसे—

कपालिनी। कुल्ला।

(२) कुरुकुल्ला। विरोधिनी। विप्रचित्ता।

(३) उग्रा। उग्रप्रभा। दीप्ता।

(४) नीला । घना वलाका ।

(५) मात्रा । मुद्रा । मिता ।+

"सर्वेप्सितफलप्रदायक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।"

षष्ठ आवरण (अष्ट दलों में)

पहले की भाँति निम्नलिखित आवरण देवताओं के नाम के आगे उक्त सात बीजों को जोड़े तथा अन्त में "देवीमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं ब्राह्मीदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।"

नारायणी ।

माहेश्वरी ।

चामुण्डा ।

कौमारी ।

अपराजिता ।

बाराही ।

नारसिंही ।

त्रैलोक्य मोहन चक्रस्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

सप्तम आवरण (अष्टदलों के मध्य भाग में)

पहले की ही भाँति निम्नलिखित आवरण-देवताओं के नाम के आगे उक्त सात बीजों को जोड़ें तथा अन्त में "भैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें । जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं असिताङ्ग भैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामिस्वाहा ।"

रुरु ।

चण्ड ।

+ पाठ भेद—मित्रा ।

क्रोध ।
उन्मत्त ।
कपाली ।
भीषण ।
संहार ।

सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

अष्टम आवरण (अष्टदलों के अग्र भाग में)

पहले की ही भाँति निम्नलिखित आवरण-देवताओं के नाम के आगे उक्त सात बीजों को जोड़ें तथा अन्त में "बटुकानन्दनाथमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें, जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं हेतुवटुकानन्दनाथमयी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।

त्रिपुरान्तक ।
वह्निजिह्व ।
कराल ।
भीम ।
वेताल ।
काल ।
एकपाद ।

सर्व सौभाग्यदायक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

नवम् आवरण (अष्टदलों के बाहर)

निम्नलिखित आवरण-देवताओं के नाम के आरम्भ में "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा" जोड़ें अन्त में "योगिनि देवीमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।" जोड़ दें । जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हूं फट् स्वाहा सिंह व्याघ्रमुखी योगिनिदेवीमयी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।"

सर्पासुमुखी ।
गजवाजिमुखी ।
क्रोष्टासुमुखी ।
मृगमेषमुखी ।
विडालमुखी ।
लम्बोदरी ।

ह्रस्वजंघा तालजंघा-प्रलम्बोघ्नी ।

सर्वार्थदायक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

दशम आवरण (भूपुर में पूर्व आदि दिशाओं में)

पहले की भाँति निम्नलिखित आवरण देवताओं के नाम के आरम्भ में पूर्वोक्त सात बीजों को जोड़ें तथा अन्त में "मयीदेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें। जैसे—

"ॐ ऐं ह्लीं श्रीं क्रीं हु ह्लीं इन्द्रमयीदेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।

अग्नि ।	यम ।
निऋंति ।	वरुण ।
वायु ।	कुबेर ।
ईशान ।	ब्रह्मा ।+
अनन्त ।	वज्र ।
शक्ति ।	दण्ड ।
खड्ग ।	पाश ।
अंकुश ।	गदा ।
त्रिशूलः	पद्म ।
चक्र ।++	

सर्वरक्षाकर चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

एकादश आवरण (बिन्दु में)

पहले की ही भाँति निम्नलिखित आवरण-देवताओं के नाम के आरम्भ में उक्त सात बीजों को जोड़ दें तथा अन्त में "मयोदेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें। जैसे—

"ॐ ऐं ह्लीं श्रीं क्रीं हूं ह्लीं खड्गमयी देवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा ।"

+ निऋंति तथा वरुण के मध्य में

++ ईशान तथा इन्द्र के मध्य में ।

मुण्ड । वर ।

अभय ।

सर्वाशापरिपूरक चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

द्वादश आवरण (भूपुर के बहिर्द्वारों पर पूर्वादि क्रम से)

पहले की भाँति निम्नलिखि आवरण-देवताओं के नाम के आरम्भ में उक्त सात बीजों को जोड़ें और अन्त में "मयीदेवी श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" जोड़ दें। जैसे—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूं ह्रीं वटुकानन्दनाथमयीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा।"

योगिनी । क्षेत्रपालानन्दनाथ ।

गणनाथानन्दनाथ । सर्वभूतानन्दनाथ ।

सर्वसंक्षोभण चक्र स्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

विशेष—इस प्रकार आवरण-पूजा करके हाथ में पुष्प तथा अक्षत (चावल) लेकर, उन्हें निम्नलिखित श्लोकों का पाठ करते हुए श्रीचक्र के बाहर छोड़ें—

चतुरस्राद्बहिः द्वारसंस्थिताश्च समन्ततः ।
ते च सम्पूजिताः सन्तुदेवाः देवि गृहे स्थिताः ॥
सिद्धाः साध्या भैरवाश्च गन्धर्वा वसवोऽश्विनो ।
मुनयो ग्रहा तुष्यन्तु विश्वेदेवाश्च उष्मयाः ॥
रुद्रादित्याश्च पितरः पन्नगाः यक्ष चरणाः ।
योगेश्वरोपासका ये तुष्यन्ति नर किन्नराः ॥
नागा वा दानवेन्द्राश्च भूतप्रेत पिशाचकाः ।
अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि मन्त्रयन्त्रार्चन क्रियाः ॥
शान्ति कुरु महामाये सर्वसिद्धिप्रदायिके ।
सर्वसिद्धिमचक्रस्वामिनि नमस्तेनमस्ते स्वाहा ॥

सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वार्थप्रदे शिवे सर्वमङ्गलमये सर्वव्याधिविनाशिनि । सर्वाधार स्वरूपे सर्वपापहरे सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितफलप्रदे सर्व-मङ्गलदायक चक्रस्वामिनि नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

क्रीं ह्रीं हूं क्ष्मीं महाकालाय ह्रौं महादेवाय क्रीं कालिकायै ह्रौं महादेव महाकाल सर्वसिद्धिप्रदायक देवी भगवती चण्डचण्डिका चण्डचितात्मा प्रीणातु दक्षिणकालिकायै सर्वेशे सर्वशक्ते श्रीमहाकालसहिते श्रीदक्षिण कालिकायै नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

एषा विद्या महासिद्धिदायिनि स्मृति मात्रतः ।
अग्नौ वाते महाक्षोभे राज्ञो राष्ट्रस्य विप्लवे ॥
एकवारं जपेदेनं चक्रपूजा फलं लभेत् ।
आपत्काले नित्यपूजां विस्तरात्कर्तुमक्षमः ॥
खड्गं सम्पूज्य विधिवद्येन हस्ते धृतेन वै ।
अष्टादश महाद्वीपे सम्राट् भोक्ता भविष्यति ॥
नरवश्यं नरेन्द्राणां वश्यं नारी वशङ्करी ।
पठेत्त्रिंशत् सहस्राणि त्रैलोक्य मोहने क्षमः ॥

भावार्थ—यह विद्या स्मरणमात्र से ही महासिद्धि देती है। अग्नि, वायु, महासङ्कट, राजा तथा राष्ट्र के विप्लव में इसका एक बार जप करने से ही चक्रपूजा का फल प्राप्त होता है। आपत्तिकाल में विस्तृत नित्य-पूजा करने में अक्षम होने पर इसका जप करना चाहिए। जो व्यक्ति इस खड्ग का विधिवद् पूजन करके, अपने हाथ में धारण करता है, वह अठारह महाद्वीपों के साम्राज्य-सुख का उपभोग करता है। यह स्तोत्र मनुष्य, राजा तथा स्त्रियों को वश में करने वाला है। इस स्तोत्र का तीस सहस्र बार पाठ करने वाले को त्रैलोक्य को मोहित करने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है।

॥ इति श्रीरुद्रयामले दक्षिणकालिका खड्गमाला स्तोत्रम् समाप्तम् ॥
